प्रकाशक—
उदयपुर विद्यापीठ सरस्वती मन्दिर,
प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान:
उदयपुर।

मुद्रक—
मथुराप्रसाद शिवहरे
दी फाईन आर्ट प्रिंटिङ्ग प्रेस
अजमेर।



स्व० श्री सेठ केसरीचन्द्रजी चतुर
उदयपुर (मेवाड़)
[आपके पौत्र श्री प्रकाशमलजी चतुर की पत्नी
सुगनकुमारी के असामयिक देहावसान पर
स्मृतिरूप में उनके सन्तप्त परिवार द्वारा]

प्राक्कथन

राजस्थान ने भारत के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण भाग लिया, और यह श्रेय भारत के अन्य किसी भी भू-खण्ड को नहीं प्राप्त हुआ। बारहवीं शताब्दी के भी पूर्व से लेकर मुगलों के पतन तक राजस्थान बराबर मुसलमानों के आक्रमणों का प्रतिरोध करता रहा, और उनसे निरन्तर संघर्षरत रहा। इसका फल यह हुआ कि जब अंग्रेज़ मुग़लो के उत्तराधिकारी बने, तो राजस्थान की एक अंगुल भूमि भी मुग़लों के अधिकार में न थी। यह बात गौरव के साथ कहनी पड़ती है कि भारत का कोई भी अन्य प्रान्त इतने दीर्घकाल तक अविरत रूप से युद्धरत न रहा। इस भीषण संघर्ष काल के उत्थान-पतन में राजस्थान को कितना निस्वार्थ त्याग करना पड़ा होगा, कितना लोमहर्षक शौर्य प्रदर्शित करना पड़ा होगा, छः सौ वर्ष तक स्वतंत्रता की अजस्र ज्वाला जाग्रत रखने के लिये कितने ईंधन की आवश्यकता हुई होगी, स्वतंत्रता के ध्येय को प्राप्त करने के लिये उसका कितना अटल निश्चय और अध्यवसाय होगा, स्वतंत्रता-संग्राम के भारवहन की शक्ति कितने गम्भीर और अक्षय देश-प्रेम से प्राप्त की गई होगी, उसकी विचारधारा, भावना, सफलता पिछली दस शताब्दियों में कैसी रही होगी? इन सब बातों का मार्मिक दिग्दर्शन राजस्थान के साहित्य में ही प्राप्त हो सकता है।

राजस्थान की भाव-व्यंजना हिन्दी और राजस्थानी भाषा में हुई है। महान् हिन्दू जाति की संस्कृति और सभ्यता के द्योतक इस साहित्य को भावी सन्तति के हितार्थ राजस्थान ने सुरक्षित रक्खा है।

अब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त करली है, और यह उपयुक्त समय है कि भारत की वीर-भावना और उत्साह नष्ट न हो, जिससे यह देश विश्व में अन्याय और दुराचार का विरोध और दमन करने में समर्थ हो सके। हमारी वीरता का पुनर्जागरण प्राचीन साहित्य के अध्ययन से किया जा सकता है।

राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की अपार निधि है। कर्नल टॉड, राजा राजेन्द्रलाल मित्र, महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, डॉ० बूलर, भण्डारकर, टेसीटरी आदि महानुभावो ने पुरातन हस्तलिखित ग्रन्थों की अन्वेषणा का सराहनीय कार्य किया है, परन्तु अधिकांश भाग तो अभी तक अनेन्वित ही है। ये हस्तलिखित प्रतियां हमारे विचार-क्षेत्र को विस्तृत करेंगी, जीवन को अधिक उन्नत बनायेंगी,

राष्ट्रीय उत्साह का अक्षय स्रोत होंगी, भारतीय जीवन और संस्कृति के ऐक्य को स्थापित करेंगी, और हिन्दू जाति के राष्ट्रीय भविष्य को व्यक्त करेंगी। इसमें सन्देह नहीं।

उदयपुर विद्यापीठ ने 'राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज' का प्रथम भाग सन् १९४२ में प्रकाशित किया, जिसमें १७५ हिन्दी ग्रन्थों का उल्लेख है और साथ ही संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी हैं। अब इसका यह दूसरा भाग भी प्रकाशित हो रहा है। इसमें १८३ हस्तलिखित अज्ञात हिन्दी ग्रन्थों का विवरण है, जिनमें कोष, काव्य, वैद्यक, रत्न-परीक्षा, संगीत, नाटक, इतिहास, कथा, नगरवर्णन, शकुन, सामुद्रिक आदि विभिन्न विषयों के ग्रन्थ हैं, जो १०२ कवियों द्वारा रचित हैं। ये ग्रन्थ कई संग्रहालयों से प्राप्त हुए हैं, और प्रायः १७ वीं से १९ वीं शताब्दि तक के हैं। इनका सम्पादन-कार्य मेरे परम मित्र श्रीयुत अगरचन्दजी नाहटा द्वारा हुआ है। नाहटाजी ने जैन-साहित्य-क्षेत्र में सुख्याति प्राप्त की है और वे अपने अनुसन्धान-कार्य को समय-समय पर पत्रों में प्रगट करते रहे हैं।

श्रीयुत नाहटाजी ने राजस्थान के हस्त-लिखित ग्रन्थों की अन्वेषणा और संग्रह में अपना बहुमूल्य समय और शक्ति का व्यय किया है, जिसके लिये हिन्दी साहित्य-प्रेमी उनके आभारी हैं।

प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान, उदयपुर सम्वत् १९९८ वि० में स्थापित हुआ था और इतने अल्पकाल में ही उसने आशातीत सफलता प्राप्त की है। इस संस्था के संचालक न केवल विद्वान् ही हैं, वरन् कर्मठ भी हैं। सबसे अधिक विशेषता की बात तो यह है कि अच्छी से अच्छी सामग्री का ये बहुत ही अल्प व्यय से निर्माण करते हैं, जिनसे इनकी आश्चर्यजनक मितव्ययिता प्रगट होती है। अतः हम श्री जनार्दनरायजी नागर और श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं को जितना धन्यवाद दें थोड़ा है।

अन्त में मुझे यही कहना है कि भारतीय हस्तलिखित सामग्री के परिचय के लिये ऐसी ग्रन्थ-सूचियों की नितान्त आवश्यकता है।

कलकत्ता
आश्विन शुक्ला ८
सं० २००४ वि०

छोटेलाल जैन

दो शब्द

उदयपुर विद्यापीठ गत दस वर्षों से अपनी विविध संस्थाओं द्वारा राजस्थान में शिक्षणात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और लोकोत्थान का कार्य कर रही है तथा अब वह संपूर्ण विद्यापीठ का रूप ग्रहण कर चुकी है। महाविद्यालय, श्रमजीवी विद्यालय, कलाकेन्द्र, सरस्वती मन्दिर (जिसमें प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान संयुक्त है) महात्मा, गांधी लोक शिक्षण विद्यालय, मोहता आयुर्वेद सेवा सदन, प्रगतिशील प्रकाशन संस्थान (जिसमें विद्यापीठ प्रेस संयुक्त है), राम सन्स टेक्निकल इंस्टीट्यूट और जनपद इसकी संस्थाएं हैं।

सरस्वती मन्दिर साहित्यिक-सांस्कृतिक निर्माणात्मक एवं शोध सम्बन्धी कार्य करने की योजना के साथ अग्रसर हो रहा है। इसके लिये मेवाड़ सरकार ने कृपा कर शहर के निकट ही सात बीघा जमीन भी बिना मूल्य लिये प्रदान की है, जिसके लिये वह हमारे धन्यवाद की पात्र है। प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान के सामने अन्य प्रवृत्तियों के साथ राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का विस्तृत और महत्त्वपूर्ण कार्य भी है। राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज भाग २ का प्रकाशन बहुत विलम्ब से हो रहा है और इसके बाद आगे के दो भागों के मुद्रण का कार्य भी शेष है। आशा है अब शीघ्र ही शोध-संस्थान इनको प्रकाशित करने में समर्थ होगा।

संस्थान श्रीयुत्, अगरचन्दजी नाहटा का अत्यन्त आभारी है, जिन्होंने इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को बड़े परिश्रम, अनुभव और ठोस अध्ययन के आधार पर तैयार किया है। इस कार्य में हमें श्रीयुत्, नाहटाजी से बहुत आशा है और वे पूर्ण होंगी-इसमें सन्देह नहीं।

मेवाड़ सरकार ने कृपा कर अपनी विशेष स्वीकृति से १०००) रु० की सहायता इस ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ प्रदान की है। इसके लिये संस्था सरकार को हार्दिक धन्यवाद देती है और आशा करती है कि इस महत्वपूर्ण ग्रन्थमाला के आगामी प्रकाशनों के लिये भी मुद्रण का अधिकांश व्यय प्रदान करेगी।

श्रीयुत्, छोटेलालजी जैन, कलकत्ता ने कृपा कर प्रस्तुत ग्रन्थ के लिये अपना प्राक्कथन लिखना स्वीकृत किया तदर्थ हम आपके बहुत आभारी हैं।

उदयपुर विद्यापीठ
कार्तिक कृष्ण ७, २००४ वि०

अर्जुनलाल महता
पीठ मन्त्री

निवेदन

—:※:—

राजस्थान में प्राचीन साहित्य, लोक-साहित्य, इतिहास और कलाविषयक शोध-कार्य करने के लिये उदयपुर विद्यापीठ द्वारा वि० स० १९९८ में प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान की स्थापना की गई थी। योजनानुसार इसके विभागान्तर्गत कई महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियां स्थापित एवं विकसित हो चुकी हैं। जैसे– १- राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, २—चारणगीत माला, ३—राजस्थान गौरव ग्रन्थमाला, ४—राजस्थानी कहावत माला, ५—राजस्थानी लोकगीत माला, ६-स्व० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा निबन्ध संग्रह, ७—महाकवि सूर्यमल आसन, ८—शोध-पत्रिका और ९—संग्रहालय आदि।

सर्वप्रथम हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य प्रारंभ किया गया था। उस समय विद्वानों का राजकीय अथवा व्यक्तिगत पुस्तकभण्डारों में प्रवेश पा सकना और वहां के हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण तैयार करना आज से कहीं अधिक कठिन था। किन्तु इस कार्य में सफलता मिली और श्रीयुत्, पं० मोतीलाल मेनारिया एम० ए० द्वारा प्रस्तुत खोज का प्रथम विवरण-ग्रन्थ प्रकाशित कर दिया गया। इस ग्रन्थ के रूप में द्वितीय विवरण-ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। आगे के तृतीय और चतुर्थ भाग भी–एक श्रीयुत्, उदयसिंह भटनागर एम० ए० का, दूसरा श्रीयुत्, अगरचन्द नाहटा का प्रेस के लिये प्रस्तुत हैं। आशा है शोध-संस्थान शीघ्र ही इनको भी प्रकाशित करने में समर्थ होगा। तब तक कई नवीन भाग तैयार हो जावेंगे। चारणगीतमाला के लिये लगभग १०५० गीत अब तक एकत्रित किये जा चुके हैं। और प्रथम-द्वितीय भाग का सम्पादन-कार्य भी समाप्तप्रायः है। राजस्थान-गौरव-ग्रन्थमाला के अन्तर्गत महाकवि चन्द कृत पृथ्वीराज रासो का प्रामाणिक संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है। श्रीयुत्, कविराव मोहनसिंह के सम्पादकत्व और श्रीयुत्, भगवतीलाल भट्ट के संयोजन में पृथ्वीराज रासो-कार्यालय द्वारा इसके ३३ प्रस्तावों का कार्य समाप्त हो गया है। राजस्थानी कहावत माला की प्रथम 'पुस्तक मेवाड़ की कहावतें' भाग १. सम्पादक श्रीयुत्, पं० लक्ष्मीलाल जोशी एम० ए० एल० एल० बी० प्रकाशित हो चुकी है। द्वितीय पुस्तक 'प्रतापगढ़ की कहावतें' सम्पादक श्रीयुत्, रत्नलाल महता, बी० ए०, एल० एल० बी० और तृतीय पुस्तक 'राजस्थानी भील कहावतें' सम्पादक-श्रीयुत्, पुरुषोत्तम मेनारिया

'साहित्यरत्न' प्रेस के लिये तैयार हैं। चतुर्थ पुस्तक 'मेवाड़ की कहावतें' भाग—२, सम्पादक श्रीयुत्, पं० लक्ष्मीलाल जोशी एम० ए० एल० एल० बी० का कार्य भी चल रहा है। मेवाड के विभिन्न विभागो से लगभग ६०० लोकगीतों का संग्रह कार्य किया जा चुका है। इनमें भील गीत मुख्य हैं। स्व० डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के निबन्ध चार भागों में प्रकाशित किये जावेंगे। नवीन खोज के अनुसार टिप्पणिया जोड़ने का महत् कार्य कृपा कर श्रीयुत्, डॉ० रघुवीरसिंह एम० ए०, डी० लिट्०, एल एल० बी०, महाराजकुमार सीतामऊ ने प्रारंभ कर दिया है और प्रथम भाग शीघ्र ही प्रेस मे दिया जाने वाला है। महाकवि सूर्यमल आसन के तृतीय अभिभाषक श्रीयुत्, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या एम० ए०, डी० लिट्, अध्यक्ष भाषातत्त्वविभाग कलकत्ता विश्व-विद्यालय के 'राजस्थानी भाषा' विषयक भाषण प्रेस मे हैं। शोध-पूर्ण निबन्धो के प्रकाशनार्थ और शोध-कार्य को प्रगति देने के उद्देश्य से त्रैमासिक 'शोध-पत्रिका' का प्रकाशन भी चैत्र सं० २००४ वि० से प्रारंभ किया गया है। संस्थान का संग्रह-कार्य भी प्रगति पर है। प्राप्त जमीन पर संग्रहालय का भवन निर्मित होते ही संग्रहालय की उपयोगिता और प्रगति कई गुनी बढ़ जायगी। कई कठिनाइयों को सहते हुए भी इस प्रकार शोध-संस्थान अपने ध्येय की ओर अग्रसर हो रहा है।

राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य सर्वथा नवीन और महत्त्वपूर्ण है। यह बहुत आवश्यक है कि समस्त राजस्थान मे खोज का यह प्रारम्भिक कार्य शीघ्रातिशीघ्र समाप्त हो जाय। राजस्थान के विद्वानों, धनी-मानी सज्जनो और रियासती सरकारों की पूरी पूरी सहायता इसके लिये पूर्णतया अपेक्षित है इसी से यह संभव है। आशा है राष्ट्रनिर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य मे शोध-संस्थान को अवश्य ही पूर्ण सहयोग मिलेगा।

उदयपुर विद्यापीठ सरस्वती मन्दिर,
प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान,
कार्तिक कृष्णा ७, २००४ वि०

पुरुषोत्तम मेनारिया
सञ्चालक

प्रस्तावना

भारतीय वाङ्मय बहुत ही विशाल एवं विविधतापूर्ण है। अध्यात्मप्रधान भारत में भौतिक विज्ञान ने भी जो आश्चर्यजनक उन्नति की थी उसकी गवाही उपलब्ध प्राचीन साहित्य भली प्रकार से दे रहा है। यहाँ के मनीषियों ने जीवनोपयोगी प्रत्येक विषय पर गंभीरता से विचार एवं अन्वेषण किया और वे भावी जनता के लिये उसका निचोड़ ग्रन्थों के रूप में सुरक्षित कर गये। उस अमर वाङ्मय का गुणगान करके गौरवानुभूति करने मात्र का अब समय नहीं है। समय का तकाजा है—उसे भली भाँति अन्वेषण कर शीघ्र ही प्रकाश में लाया जाय। पर खेद के साथ लिखना पड़ता है कि हमारे गुणी पूर्वजों की अनुपम एवं अनमोल धरोहर के हम सच्चे अधिकारी नहीं बन सके। हमारे उस अमृतोपम वाङ्मय का अन्वेषण एवं अनुशीलन पाश्चात्य विद्वानों ने गत शताब्दी में जितनी तत्परता एवं उत्साह के साथ किया हमने उसके एकाधिकारी—ठेकेदार कहलाने पर भी उसके शतांश में भी नहीं किया, इससे अधिक परिताप का विषय हो ही क्या सकता है? जिन अनमोल ग्रन्थों को हमारे पूर्वज बड़ी आशा एवं उत्साह के साथ, हम उनके ज्ञानधन से लाभान्वित होते रहें—इसी पवित्र उद्देश्य से बडे कठिन परिश्रम से रच एवं लिखकर हमें सौंप गये थे, हमने उन रत्नों को पहिचाना नहीं। वे नष्ट होते गये व होते जा रहे हैं तो भी उसकी भी सुधि तक नहीं ली! किसी माई के लाल ने उसकी ओर नजर की तो वह उसे व्यर्थ का भार प्रतीत हुआ और कौड़ियों के मोल पराये हाथों सौंप दिया। सुधि नहीं लेने के कारण जल एवं उदेई ने उसका विनाश कर डाला। कई व्यक्तियों ने उन ग्रन्थों को फाड़फाड़ कर पुडियां बांध कर लेखे लगा दिया। कहना होगा कि इनसे तो वे अच्छे रहे जिन्होंने अल्प मूल्य में ही सही बेच डाला, जिससे अधिकारी व्यक्ति आज भी उनसे लाभ उठा रहे हैं। जिन्होंने पैसा देकर खरीदा है वे उसे संभालेंगे तो सही। हमें तो पूर्वजों के श्रम का मूल्य नहीं, पैसे का मूल्य है, अतः बिना पैसे प्राप्त चीज की कदर भी कैसे करते?

भारतीय साहित्य की विशेषता एवं उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए लाहोर निवासी पं० राधाकृष्ण के प्रस्ताव को सं० १८९८ में स्वीकार कर भारत सरकार ने

उसके अन्वेषण[1] एवं संग्रह की ओर ध्यान दिया। फलतः हजारों ग्रन्थों की लक्षाधिक प्रतियों का पता लग चुका है। डॉ० कीलहार्न, बूलर, पीटर्सन, भांडारकर, बर्नेल, राजेन्द्रलाल मित्र, हरप्रसाद शास्त्री आदि की खोज रिपोर्टों एवं सूचीपत्रों को देखने से हमारे पूर्वजों की मेधा पर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता। डा० आफ्रेक्ट ने 'कैटेलोगस कैटेलोगरम' के तीन भागों को तैयार कर भारतीय साहित्य की अनमोल सेवा की है। उसके पश्चात् और भी अनेक खोज रिपोर्टें एवं सूचीपत्र प्रकाशित हो चुके हैं जिनके आधार से मद्रास युनिवर्सिटी ने नया 'कैटेलोगस कैटेलोगरम' प्रकाशित करने की आयोजना की है। खोज का काम अब दिनोंदिन प्रगति पर है अतः निकट भविष्य में हमारी जानकारी बहुत बढ़ जायगी, यह निर्विवाद है।

हिन्दी भाषा का विकास एवं उसका साहित्य—

प्रकृति के अटल नियमानुसार सब समय भाषा एकसी नहीं रहती, उसमें परिवर्त्तन होता ही रहता है। वेदों की आर्ष भाषा से पिछली संस्कृत का ही मिलान कीजिये यही सत्य सन्मुख आयगा। इसी प्रकार प्राकृत अपभ्रंश में परिणत हुई और आगे चलकर वह कई धाराओं में प्रवाहित हो चली। वि० सं० ८३५ में जैनाचार्य दाक्षिण्यचिन्हसूरि ने जालोर में रचित 'कुवलयमाला' में ऐसी ही १८ भाषाओं का निर्देश करते हुए १६ प्रान्तों की भाषाओं के उदाहरण उपस्थित[2] किये हैं। मेरे नम्रमतानुसार हिन्दी आदि प्रान्तीय भाषाओं के विकास को जानने के लिये यह सर्वप्रथम महत्वपूर्ण निर्देश है। हिन्दी भाषा की उत्पत्ति पर विचार करते हुए कुवलयमाला में निर्दिष्ट मध्यदेश की भाषा से उसका उद्गम हुआ ज्ञात होता है। ९ वीं शताब्दी में मध्य देश मे बोले जाने वाले "तेरे मेरे आउ" शब्द ११८० वर्ष होजाने पर भी आज हिन्दी में उसी रूप मे व्यवहृत पाये जाते हैं। १४ वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री जिनप्रभसूरि या उनके समय के रचित गुर्जरी, मालवी, पूर्वी और मरहठी भाषा की बोली नामक कृति[3] उपलब्ध है उससे हिन्दी का सम्बन्ध पूर्वी के ही अधिक निकट ज्ञात होता है। अनूप संस्कृत पुस्तकालय मे "नव बोली छंद" नामक रचना प्राप्त है

[1]—पुरातत्वान्वेषण का आरंभ सन् १७७४ के १४ जनवरी को सर विलीयम जोन्स के एशियाटिक सोसायटी की स्थापना से शुरु होता है।

इसके सम्बन्ध में मुनि जिनविजयजी का "पुरातत्व संशोधन नो पूर्व इतिहास" निबंध द्रष्टव्य है जो आर्यविद्याव्याख्यानमाला में प्रकाशित है।

२—देखें अपभ्रंश काव्यत्रयी पृ० ९१ से ९४।

३—राजस्थानी, वर्ष ३ अंक ३ में प्रकाशित।

उससे भी हिन्दी का सम्बन्ध दिल्ली एवं पूर्व की बोली से ही सिद्ध होता है अर्थात् हिन्दी मूलतः मध्यदेश एवं पूर्व के ओर की भाषा है।

मध्यप्रदेश भारत का हृदय स्थानीय होने से साधु सन्तों ने यहाँ की भाषा में अपनी वाणियाँ प्रचारित की। वे लोग सर्वत्र घूमते रहते हैं अतः उनके द्वारा हिन्दी का सर्वत्र प्रचार होने लगा। इसके पश्चात् मुसलमानी शासकों ने दिल्ली को भारतवर्ष की राजधानी बनाया अतः उसकी आसपास की बोली को प्रोत्साहन मिलना स्वाभाविक ही था। इधर ब्रजमंडल जो कि भगवान् कृष्ण की लीलाभूमि होने के कारण, हिन्दुओं का तीर्थधाम होने से एवं राजपूताना उसका निकटवर्ती प्रदेश होने के कारण ब्रजभाषा का प्रचार राजस्थान में दिनोंदिन बढ़ने लगा। महाकवि सूरदास आदि का साहित्य और वल्लभसम्प्रदाय के राजस्थान में फैल जाने से भी ब्रजभाषा के प्रचार में बहुत कुछ मदद मिली। राजपूत नरेशों ने हिन्दी के कवियों को बहुत प्रोत्साहन दिया। ब्रज के अनेक कवियों को राजस्थान के राजदरबारों में आश्रय मिला। फलतः सैकड़ो कवियो के हजारों हिन्दी ग्रन्थ राजस्थान में रचे गये। अन्यत्र रचित उपयोगी एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपियें कराकर भी राजस्थान में विशाल संख्या मे संग्रह की गईं जिसका आभास राजस्थान के विविध राजकीय संग्रहालयो एवं जैनज्ञान भंडारों आदि में प्राप्त विशाल हिन्दी साहित्य से मिल जाता है।

वैसे तो हिन्दी का विकास ८ वीं शताब्दी से माना जाता है और नाथपंथी-योगियों और जैन विद्वानों के विपुल अपभ्रंश काव्यों[१] से उसका घनिष्ट सम्बन्ध है पर हिन्दी भाषा का निखरा हुआ रूप खुसरो की कविता में नजर आता है। यद्यपि उनकी रचनाओ की प्राचीन प्रति प्राप्त हुए बिना उनकी भाषा का रूप ठीक क्या था, नहीं कहा जासकता। उसके पश्चात् सबसे अधिक प्रेरणा कबीर के विशाल साहित्य से मिली है। नूरक चंदा-मृगावती, पद्मावत आदि कतिपय प्रेमाख्यानों से १५ वीं १६ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के रूप का पता चलता है पर इसका उन्नतकाल १७ वीं शताब्दी है। सम्राट् अकबर के शान्तिपूर्ण शासन का हिन्दी के प्रचार में बहुत बडा हाथ रहा है। वास्तव में इसी समय हिन्दी की जड़ सुदृढ़ रूप मे जम गई और आगे चलकर यह पौधा बहुत फला फूला। हिन्दी ने अपनी अन्य सब भाषाओं को पीछे छोड़ कर जो अभ्युदय लाभ किया वह सचमुच आश्चर्यजनक एवं गौरवास्पद है।

---

१ – सरहप्पा, कण्हपा, गौरक्षपा, आदि नाथपंथी योगी एवं जैन कवियों के रचना के उदाहरण देखने के लिये 'हिन्दी काव्य धारा' ग्रन्थ का अवलोकन करना चाहिये।

१७ वीं और १८ वी शताब्दी में हिन्दी के अनेक सुकवियों का प्रादुर्भाव हुआ जिनके ललित काव्यों ने इसकी सुख्याति सर्वत्र प्रचारित करदी। इधर राजसभाओं में इन कवियों द्वारा हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ी उधर कबीर, सूर के पदों एवं तुलसीदासजी की रामायण ने जनसाधारण मे हिन्दी की धूम सी मचादी फलतः इसका साहित्य इतना समृद्ध, विशाल एवं विविधतापूर्ण पाया जाता है कि अन्य कोई भी भाषा इसकी तुलना में नही खड़ी हो सकती।

हिन्दी साहित्य की शोध—

प्राचीन हिन्दी साहित्य की विशालता की ओर ध्यान देते हुए नागरीप्रचारिणी सभा ने सर्वप्रथम हिन्दी ग्रन्थों के विवरण संग्रह करने की उपयोगिता पर ध्यान दिया। सभा ने सन् १८९८ तक तो एशियाटिक सोसायटी एवं संयुक्त प्रदेश की सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया पर वह विशेष फलप्रद नहीं होने से १८९९ में प्रान्तीय सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। उसने ४००) रु० वार्षिक सहायता देना व रिपोर्टें[1] अपने खर्च से प्रकाशित करना स्वीकार किया। यह सहायता बढ़ते-बढ़ते दो हजार तक जा पहुँची। इस प्रकार सन् १९०० से लगाकर ४७ वर्ष होगये। निरन्तर खोज होते रहने पर भी हिन्दी भाषा का अभी आधा साहित्य भी हमारी जानकारी में नहीं आया। अनेक स्थान तो अभी ऐसे रह गये हैं जहाँ अभीतक बिलकुल अन्वेषण नही हो पाया। राजपूताने को ही लीजिये इसमें अनेक रियासतें हैं और बहुतसे राज्यो में कई राजा बड़े विद्याप्रेमी हो गये हैं। उनके आश्रय एवं प्रोत्साहन से बहुत बड़े हिन्दी साहित्य का निर्माण हुआ है पर उनमें से जोधपुर आदि के राज्य-पुस्तकालयों के कुछ ग्रन्थों को छोड़ प्रायः सभी ग्रन्थ अभीतक अन्वेषक की बाट जो रहे हैं। जहाँतक मुझे ज्ञात है इसकी ओर सर्वप्रथम लक्ष्य देने वाले अन्वेषक मुंशी देवीप्रसादजी हैं। आपने 'राज रसनामृत', 'कविरत्नमाला', 'महिलामृदुवाणी' आदि में राजस्थान के हिन्दी

१—खेद है कि सरकार ने कुछ रिपोर्टें प्रकाशित करने के पश्चात् कई वर्षों से प्रकाशन वंद कर दिया है। प्रकाशित सब रिपोर्टें अब प्राप्त भी नहीं। अतः आजतक की खोज से प्राप्त हिन्दी ग्रथो के विवरणों की संग्रहसूची प्रकाशित होनी अत्यावश्यक है। नागरी प्रचारिणी सभा के हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण (१९४२ तक का) प्रकाशन प्रारंभ किया था वह भी अधूरा ही पड़ा है। सभा को उसे शीघ्र ही प्रकाश में लाना चाहिये ताकि भावी अन्वेपकों को कौन-कौनसे कवियो एवं ग्रंथों का पता आजतक लग चुका है जानने मे सुगमता उपस्थित हो। 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' ग्रन्थ से जिस प्रकार मुद्रित 'हिन्दी पुस्तकों' की आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है उसी ढग से प्राचीन ग्रन्थों के सम्बन्ध में भी एक ग्रन्थ प्रकाशित होना चाहिये।

कवियों को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। सं० १९६८ में द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्य-विवरण (दूसरे भाग) मे आपका 'राजपूताने में हिन्दी पुस्तकों की खोज' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें ३३८ हिन्दी ग्रन्थों की अक्षरादि क्रम-सूची दी गई है। उसमें आपने यह भी लिखा है—सूचियों की कई जिल्दें बन गई हैं। श्री मोतीलालजी मेनारिया ने भी आपके ८०० कवियों की सूची मिश्र-बन्धुओं को भेजने एवं उनमें २०० नवीन कवियों के निर्देश होने का उल्लेख किया है अतः उन जिल्दों को उनके वंशजों से प्राप्त कर प्रकाशित करना परमावश्यक है। उससे बहुतसी नवीन जानकारी प्रकाश मे आने की संभावना है।

राजस्थान ने अपनी स्वतंत्र भाषा होने पर भी एवं उसमें विपुल साहित्य की रचना करने पर भी हिन्दी भाषा की जो महान् सेवा की है वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्व० सूर्यनारायणजी पारीक ने १. राजस्थान की हिन्दी सेवा, २. राजस्थान के राजाओं की हिन्दी सेवा, ३. राजस्थान की हिन्दी कवि-कवयित्रीयें आदि विस्तृत लेखों द्वारा इस पर प्रकाश डाला था[१] पर राजस्थान में हिन्दी ग्रन्थों की हजारों प्रतियें हैं अतः ऐसे प्रयत्न निरन्तर होते रहने वांछनीय हैं। छुटकर प्रयत्नों से विशेष सफलता नहीं मिल सकती। यहां तो वर्षों तक निरंतर खोज चालू रखने का प्रयत्न करना होगा। नागरी प्रचारिणी सभा की भांति दो तीन वेतनभोगी व्यक्ति रखकर राजकीय प्रसिद्ध संग्रहालयों, पुराने खानदानों, विद्याप्रेमी घरानों, जैन उपासकों, साधु सन्तों के मठो में और गांव-गांव में, घर-घर मे घूम फिर कर तलाश करनी होगी। क्योंकि बहुत से ग्रन्थ ऐसे हैं जिनकी अन्य प्रतिलिपियें नहीं हो पायीं उनकी प्राप्ति कवि के आश्रयदाता या वंशजों के पास ही हो सकती है। कई व्यक्ति आज बहुत हीन दशा में हैं पर उनके पूर्वज बड़े विद्वान् व विद्याप्रेमी हो गये। उनके पास पूर्वजो के संग्रहीत अनेकों दुर्लभ-ग्रन्थ प्राप्त हो सकेंगे। बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, अलवर, बूंदी आदि अनेकों राजकीय संग्रहालयों के अतिरिक्त दो महत्वपूर्ण संग्रह भी राजस्थान में हैं वे हैं—विद्याविभाग कांकरोली और पुरोहित हरीनारायणजी जयपुर के संग्रहालय। इन सब संग्रहालयों की खोज रिपोर्टें अति शीघ्र प्रकाशित होनी चाहिये।

प्रस्तुत ग्रंथ का संकलन—

उदयपुर विद्यापीठ ने राजस्थान में हिन्दी ग्रन्थों की शोध का परमावश्यक कार्य

१—राजस्थान के आधुनिक हिन्दी विद्वानो के सम्बन्ध में 'राजस्थान के हिन्दी साहित्यकार' नामक ग्रन्थ देखना चाहिये जो कि हिन्दी परिषद्, जयपुर से प्रकाशित है।

हाथ में लेकर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। इसकी ओर से श्री मोतीलालजी मेनारिया एम० ए० के संग्रहीत एवं सम्पादित "राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज" का प्रथम भाग सन् १९४२ में प्रकाशित हो चुका है। उदयपुर विद्यापीठ के शोध-संस्थान द्वारा यह कार्य मुझे भी सोपा गया और मैं अपना कार्य शीघ्रता से सम्पन्न कर सकूं इसके लिए सहायतार्थ श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया साहित्यरत्न भी कुछ समय बाद बीकानेर आ गये। बहुतसे ग्रन्थो के नोट्स मैंने पहले ले ही रखे थे। उनके आने से वह कार्य पूरे वेग से चलाया गया और दस बारह दिनों में ही कुल मिलाकर एक भाग की जगह दो भागो के योग्य विवरण संग्रहीत होगये अतः उनका विषय-वर्गीकरण करके करीब आधे विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दूसरे भाग के रूप में प्रकाशित करने का निश्चय कर लिया तदनुसार यह ग्रन्थ पाठको की सेवा में उपस्थित है।

विवरण लेते समय पहले तो सभी हिन्दी ग्रन्थों का विवरण लिया जाना सोचा गया था, पर जब मैने अपने संग्रह को ही टटोला तो छोटे बड़े ५०० के करीब हिन्दी ग्रन्थ उपलब्ध हुए अतः मैंने यही उचित समझा कि अभीतक हिन्दी जगत् में अज्ञात ग्रन्थ ही सैकड़ों उपलब्ध हैं और उनमें से बहुतसे विविध दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं अतः उनका विवरण ही पहले प्रकाश में आना चाहिये अन्यथा पूर्व ज्ञात ग्रन्थों का परिचय प्रकाशित करने से व्यर्थ ही समय शक्ति एवं द्रव्य अर्थ का अपव्यय होगा और संभव है अज्ञात ग्रन्थों के प्रकाश मे लाने का मौका ही नहीं मिले जो बहुत अन्याय होगा। बीकानेर में अनूप संस्कृत लाइब्रेरी नामक राजकीय संग्रहालय भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। उसमें विविध विषयों के महत्वपूर्ण ग्रन्थों की १२ हजार प्रतियें हैं जिनमे हिन्दी ग्रन्थों की प्रतियें भी १ हजार के लगभग हैं। अतः अद्यावधि अज्ञात ग्रन्थों के ही विवरण संग्रहीत करने पर कई भाग होजाने संभव हैं। इन सब बातों पर विचार करके दो भाग के उपयुक्त विवरण ले लिये जाने पर उस कार्य को स्थगित कर दिया गया एवं काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित हिन्दी पुस्तको का संक्षिप्त विवरण से चेक कर जिनका विवरण उसमे आगया था उन्हें अलग निकालकर ३५०-४०० अज्ञात ग्रन्थों के विवरण[१] हिन्दी विद्यापीठ शोध-संस्थान के सञ्चालक श्री

१—जिनमे से १८६ ग्रन्थों के विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित हो रहे हैं। अवशिष्ट विवरणों में १ पुराण उपनिषद्, २ संत साहित्य, ३ कृष्ण काव्य, ४ वेदान्त, ५ नीति, ६ जैन० साहित्य, ७ शतक, ८ बावनी, ९ फुटकर इन विषयों के ग्रन्थों के विवरण चौथे भाग मे प्रकाशित होंगे।

पुरुषोत्तमजी मेनारिया के सुपर्द कर दिये। मेरी हस्तलिपि बड़ी दुष्पाठ्य है और मेनारियाजी ने जो विवरण लिये वे भी बड़ी उतावली में लिये थे अतः प्रेस कापी करने करवाने का श्रम भी मेनारियाजी ने ही उठाया।

विवरण लिखने की पद्धति—

प्रस्तुत ग्रन्थ में विवरण संग्रह की पद्धति में आपको कई नवीनताएं प्रतीत होंगी अतः उनके सम्बन्ध में स्पष्टीकरण करदेना आवश्यक है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के अवलोकन एवं सूची बनाने में मेरी अत्यधिक अभिरुचि रही है। मेरे साहित्य साधना के १८ वर्ष बहुत कुछ इसी कार्य में बीते हैं। पाश्चात्य एवं भारतीय अनेक विद्वानों के सम्पादित पचासों सूचीपत्रों (जितने भी अधिक मुझे ज्ञात हुए व मिल सके) को देखा एवं ४० हजार के लगभग प्रतियों की सूची तो मैंने स्वयं बनाई है अतः उसके यत्किंचित् अनुभव के बल पर मुझे प्रचलित पद्धति में कुछ सुधार करना आवश्यक प्रतीत हुआ। मेरे नम्र मतानुसार विवरण में अपनी ओर से कम से कम लिखकर ग्रन्थकार, ग्रन्थ एवं प्रति के सम्बन्ध में प्राप्त प्रति से ही आवश्यक उद्धरण अधिक रूप में लिया जाना ज्यादा अच्छा है। पाठकों को बतलाने योग्य जो कुछ समझा जाता है वह ग्रन्थकार के शब्दों ही में रखा जाय तो उसकी प्रमाणिकता बहुत बढ़ जायगी। विवरण लिखने वालों की जरासी असावधानी या भूल-भ्रान्ति से परवर्ती पचासों ग्रन्थ उस भूल के शिकार हो जाते मैंने स्वयं देखा है क्योंकि उसको प्रमाण माने बिना काम चलता नहीं और उसके अनुकरण में जितने भी व्यक्ति लिखेंगे सभी उसी भ्रान्ति को दुहराते जायेंगे। मौलिक अन्वेषण व जाँच कर लिखने वाले हैं कितने? अतः मैंने ग्रन्थ के उद्धरण अधिक प्रमाण में लिये हैं और अपनी ओर से कुछ भी नहीं या कम से कम लिखने की नीति बरती है। ग्रन्थ का नाम, ग्रन्थकार उनका जितना भी परिचय ग्रन्थ में है, ग्रन्थ का रचनाकाल, ग्रन्थ रचने का आधार आदि ज्ञातव्य जिस ग्रन्थ में संक्षेप या विस्तार से जितना मिला विवरण में ले लिया है जिससे प्रत्येक व्यक्ति ऊपर निर्दिष्ट मेरे लिखतसार को स्वयं जांचकर निर्णय कर सके। जहाँतक हो सका है ग्रन्थ के पद्यों की संख्या का भी निर्देश कर दिया है। अपनी निर्धारितनीति को मैं सर्वत्र नहीं बरत सका, इसका कारण है विवरण तैयार करते समय सब प्रतियों का सामने न होना। कई संग्रहालयों के वर्षों पहले एवं उतावल में नोट्स कर लिये गये थे और विवरण तैयार करते समय प्रतियें सामने न थी। अतः पूर्व-कालीन नोट्स का ही उपयोग कर संतोष करना पड़ा। प्रति के लेखनकाल के सम्बन्ध

में भी मैंने अपने अनुभव का उपयोग किया है। जिन प्रतियों में लेखन संवत् नहीं था उनका कागज एवं लिखावट आदि के आधार से अनुमानित शताब्दी लिखदी गई है जिससे प्रति की प्राचीनता एवं ग्रन्थकार के अनिर्दिष्ट समय का भी कुछ अनुमान लगाया जा सके।

विवरण लेने की प्रस्तुत पद्धति में जैन साहित्य महारथी स्व० मोहनलाल देशाई के जैनगुर्जर कविओ से भी मैं बहुत प्रभावित हूँ।

प्रस्तुत ग्रन्थ की कतिपय विशेषताएं--

प्रस्तुत ग्रन्थ की दो विशेषताओं (अज्ञात ग्रन्थों का ही विवरण लेना एवं आवश्यक ज्ञातव्य को ग्रन्थकार के शब्दों में ही अधिक से अधिक रखना) का ऊपर निर्देश किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त तीन विशेषतायें और भी हैं जो पूर्व प्रकाशित विवरण ग्रन्थों से तुलना करने पर महत्व की प्रतीत होगी उनका भी संक्षेप में उल्लेख कर देना आवश्यक समझता हूँ।

(१) अन्य सब हिन्दी ग्रन्थों के विवरणग्रन्थों से भिन्न इसमें एक-एक विषय के अधिक से अधिक अज्ञात-ग्रन्थों का विवरण संग्रहीत किया गया है और उनका विषय वर्गीकरण कर दिया गया है। इसमें मेरा प्रधान लक्ष्य यह रहा है कि अभी तक हमारे हिंदी साहित्य का अनुशीलन विषयवर्गीकरण की दृष्टि से नहीं किया गया। इसके बिना हमारे साहित्य की समृद्धता एवं उपयोगिता का उचित मूल्याङ्कन नहीं हो सकता। श्रीयुत डॉ० रामकुमार वर्मा के हिन्दी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास के प्रारंभ में कतिपय विषयों के हिन्दीग्रन्थों की तालिका दी गई है पर वह बहुत ही सीमित एवं अपूर्ण है। मेरी राय मे जिस प्रकार विविध धाराओं की आलोचना की जा रही है उसी प्रकार प्रत्येक विषय के जितने भी ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में हैं उन सब का अध्ययन कर किस कवि में क्या विशेषता थी ? किन-किन नवीन बातों को कवि ने अपनी अनुभूति के बलपर नवीन रूप में या नवीन शैली से प्रतिपादित किया, किसने किन-किन ग्रन्थों से प्रेरणा ली, अनुकरण किया, किन-किन विषयों पर वर्त्तमान जगत आगे बढ़ चुका है या पीछे रह गया है, उस साहित्य का विकास कबसे व कैसे हुआ ? इत्यादि उस विषय सम्बन्धी जितने भी तथ्यों पर विचार किया जा सके करके प्रकाश डाला जाय, इससे महत्वपूर्ण ग्रन्थों का पता चलेगा, वे प्रकाशित किये जाकर हमारी ज्ञानवृद्धि करेंगे। हमारे विद्वानो का ध्यान आकर्षित करने के लिये मैंने छंद[1], कोष, रत्नपरीक्षा, संगीत[2], वैद्यक आदि विषयो एवं शतक, बावनी, गजल आदि

प्रकारों के हिन्दी साहित्य के सम्बन्ध में कई लेख प्रकाशित किये हैं। उनसे स्पष्ट है कि किन-किन विषयों के कितने ग्रन्थो का अभी तक पता चल चुका था और उस विषय के मुझे प्राप्त अज्ञात ग्रन्थ कितने हैं। मेरे उन लेखो से पाठक स्वयं समझ सकेंगे कि प्रस्तुत विवरणी द्वारा किस-किस विषय के नवीन ग्रन्थ किस परिमाण में प्रकाश में आये हैं।

(२) प्रस्तुत विवरण में कतिपय ऐसे विषय एवं ग्रन्थों के विवरण हैं जो हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक नवीन जानकारी उपस्थित करते हैं जैसे नगर-वर्णनात्मक गजल-साहित्य। ऐसी एक भी रचना अभी तक किसी विवरण में प्राप्त नहीं-हुई एवं ये सभी गजलें जैनकवियों की रचित हैं (एक आबूगजल जैनेतर-रचित है। वह भी जैन गजलों की प्रेरणा पाकर ही रची गयी ज्ञात होती है)। एवं 'हिन्दी ग्रन्थो की टीकाएँ' विभाग में हिन्दी ग्रन्थों पर तीन संस्कृत टीकाएँ एवं एक राजस्थानी टीका का विवरण आया है। अभी तक हिन्दी ग्रन्थो पर संस्कृत मे टीकायें रची जाने की जानकारी शायद यहाँ पहली ही बार दी गई है।

(३) अन्य विवरण-ग्रन्थों में राजस्थानी लोकभाषा व साहित्यिक भाषा डिंगल और गुजराती आदि के ग्रन्थों को भी हिन्दी के अंतर्गत मानकर उनका सम्मिलित विवरण दिया गया है। मेरी राय में राजस्थानी भाषा एक स्वतंत्र भाषा है। भाषाविज्ञान की दृष्टि से उसका मेल हिन्दी की अपेक्षा गुजराती से ज्यादा है। अतः मैंने राजस्थानी बोल-चाल की भाषा (जिसमें जैन कवियों ने बहुत विशाल साहित्य निर्माण किया एवं वार्ता ख्यात आदि गद्य रचनाओं में तथा लोक साहित्य में जो अधिक रूप से व्यवहृत हुई है) एवं साहित्यिक (चारण बारहठ प्रभृति रचित गीत आदि) डिंगल भाषा के ग्रन्थों के विवरण स्वतंत्र ग्रन्थ में लेने की योजना बनाई है और प्रस्तुत विवरण में हिन्दीप्रधान (मिश्रित राजस्थानी ग्रन्थों को सम्मिलित

[पृष्ठ ८ की अन्तिम लाइन के—छन्द[1], सगीत[2], वैद्यक[3], बावनी[4] का फुटनोट यहां देखें]

१. देखें, सम्मेलनपत्रिका, माघ चैत्र का अंक। विविध विषयक जैन ग्रन्थों के सम्बन्ध में इसी पत्रिका के वर्ष २८ अक ११ मे लेख प्रकाशित है।

२. कोष—नाममाला, रत्नपरीक्षा और संगीतविषयक ग्रन्थों की सूची राजस्थान साहित्य वर्ष १ अक १-२-४ मे प्रकाशित की गयी है जो कि राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित है।

३. हिन्दुस्तानी वर्ष ११ अंक २।

४. शतक और बावनी के सम्बन्ध में मधुकर वर्ष ५ अंक १५-१९ मे प्रकाश डाला गया है। गजलसाहित्य मुनि कान्तिसागरजी शीघ्र ही प्रकाशित कर रहे हैं।

करने के कारण) ग्रन्थों के ही विवरण लिये गये है। प्रारंभिक खोज के समय हिन्दी ग्रन्थों की इतनी अधिक उपलब्धि नहीं हुई थी अतः अन्य प्रान्तीय भाषाओं के विवरण भी उन्हें हिन्दी की शाखा मानकर साथ ले लिये गये, वह अनुचित नहीं था। पर अब जब हिन्दी के ही हजारों ग्रन्थों का पता चल चुका व चल रहा है, अन्य भाषा के साहित्य को भी साथ में निभाये जाना भारी पड़ जाता है। राजस्थानी ग्रन्थो का विवरण-ग्रन्थ स्वतंत्र रूप से प्रकाशित किया जायगा एवं उसके साहित्य का इतिहास भी प्रकाशित करने का मेरा विचार है।

कवि-परिचय में भी समस्त कवियों का यथाज्ञात संक्षिप्त परिचय दिया गया है एवं परिशिष्टत्रय में अज्ञातकर्तृक ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार और अपूर्ण प्राप्त ग्रन्थों की सूची देदी गई है।

अब इस ग्रन्थ की कुछ अन्य आवश्यक बातो का परिचय भी करा दिया जाता है जिससे सरसरी तौर से ग्रन्थ के सम्बन्ध में जानकारी हो जाय—

(१) प्रस्तुत ग्रन्थ १२ विभागों मे विभक्त है जिनके नाम एवं विवरण लिये गये ग्रन्थों की सख्या इस प्रकार है—

		विषय	पृष्ठ	ग्रन्थ
१.	(क)	नाममाला (कोष)	पृ० १ से ८	१०
२.	(ख)	छंद	पृ० ९ से १४	८
३	(ग)	अलंकार	पृ० १५ से ३७	३१
४	(घ)	वैद्यक	पृ० ३८ से ५४	२१
५.	(ङ)	रत्नपरीक्षा	पृ० ५५ से ६०	१६
६.	(च)	संगीत	पृ० ६१ से ६८	१२
७.	(छ)	नाटक	पृ० ६९ से ७०	३
८.	(ज)	कथा	पृ० ७१ से ९१	२३
९.	(झ)	ऐ० काव्य	पृ० ९२ से ९८	८
१०.	(ञ)	नगर-वर्णन	पृ० ९९ से ११६	३२
११.	(ट)	शकुन'सामुद्रिक' ज्योतिष, स्वरोदय, रमल, इन्द्रजाल	पृ० ११७ से १३४	२८
१२.	(ठ)	हिन्दी ग्रन्थों की टीकायें	पृ० १३५ से १४०	४

इनमें से मिश्र-बन्धु-विनोद[1] देखने पर १. ख्यालकवारी २. लखपत जस सिंधु और ३. चम्पूसमुद्र तीन ग्रन्थों का उल्लेख उसमें प्राप्त होता है अवशेष १८३ ग्रन्थ उसमें अनिर्दिष्ट हैं।

(२) जैसा कि कविनामानुक्रमणिका से स्पष्ट है इसमें १०२ कवियों की १३८ रचनाओं का विवरण है। इनका परिचय कविपरिचय में दिया गया है। इसमें से मिश्र-बन्धु-विनोद[1] में २० कवियों का उल्लेख है। कई अन्य कवियों के भी नाम वहाँ मिलते हैं पर वे विवरणोक्त ही हैं या समनाम वाले भिन्न कवि हैं, यह निश्चय करने का साधन नहीं है। मेनारियाजी के ग्रन्थ में जान एवं गणेशदास दो कवियों का उल्लेख आ चुका है। प्रायः ८० कवि इस ग्रन्थ द्वारा ही सर्व प्रथम प्रकाश में आ रहे हैं। ४८ रचनायें अज्ञातकर्तृक हैं जिनकी सूची परिशिष्ट में दे दी गयी है।

(३) इस विवरणी में जिन-जिन पुस्तकालयो की प्रतियों का उपयोग किया गया है उनका भी उल्लेख कर देना यहाँ आवश्यक है। इनमें से सबसे अधिक विवरण (१) अभय जैन ग्रन्थालय (जो कि हमारा निजी संग्रह है) तत्पश्चात् अनूप संस्कृत लायब्रेरी (बीकानेर का राजकीय पुस्तकालय) के हैं। इनके अतिरिक्त (३) बृहत् ज्ञान भंडार (खरतरगच्छीय बड़ा उपासरे में स्थित) जिसके अंतर्गत महिमा भक्ति भंडार, दानसागर भंडार, वर्द्धमान भंडार, जिनहर्षसूरि भंडार आदि भी आजाते हैं (४) श्री जिन चारित्र सूरि ज्ञान भंडार (५) जयचन्द्रजी ज्ञान भंडार (६) आचार्य शाखा भंडार (७) पन्नीबाई उपासरा का संग्रह (८) गोविन्द पुस्तकालय (९) लछीरामयति संग्रह (१०) राव गोपाल सिंहजी वैद का संग्रह (११) कविराज सुखदानजी का संग्रह (१२) विनय सागरजीका संग्रह (हमारे यहीं है) (१३) नवल नाथजी बगीची। ये तो बीकानेर में ही हैं। बाहर के संग्रहालयों में (१४) श्रीचंद्रजी गधैया संग्रह, सरदार शहर (१५) सीताराम शर्मा राजगढ़ (१६) यतिवर्य ऋद्धि करणजी का संग्रह, चुरु, ये बीकानेर रियासत में हैं[2] (१७) यति विष्णुदयालजी का संग्रह फतेपुर, जयपुर रियासत में है। (१८) जिनभद्र सूरि

१—मिश्र-वन्धु-विनोद मे सैकड़ों भूल-भ्रान्तियें हैं जिसका परिमार्जन प्रस्तुत ग्रन्थ के कवि-परिचय मे किया गया है। मैंने अपने "मिश्र-बन्धु-विनोद की भद्दी भूलें" शीर्षक लेख में इस सम्बन्ध में विशेष रूप से प्रकाश डाला है जो कि नागरी प्रचारिणी पत्रिका में शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

२—नं० १ से ९ और १४ वें १६ वें संग्रहालयों के, सम्बन्ध में मेरा "बीकानेर के जैन ज्ञानभंडार" शीर्षक निबंध देखना चाहिये जो कि 'वरदा' में प्रकाशित हो चुका है।

भंडार (१९) वृद्धिचंद्रजी यति संग्रह (२०) चुन्नी संग्रह, ये तीन जैसलमेर में[१] हैं। (२१) हरि सागर सूरि भंडार, लोहावट जोधपुर रियासत में है। इन इक्कीस संग्रहालयों की प्रतियों का विवरण है। प्रसंगवश विवरण लिये गये ग्रन्थों की अन्य प्रतियाँ जो राजस्थान के बाहर के संग्रहालयो में भी ज्ञात हैं उन पांच संग्रहालयों (१) दि० जैन मन्दिर देहली, सेठ कूचेवाली गली में अवस्थित (२) भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना (३) नकोदर जैन-ज्ञानभंडार पंजाब (४) गुलाब कुमारी लायब्रेरी कलकत्ता (५) साहित्यालंकार मुनि कान्ति सागरजी संग्रह का भी उल्लेख किया गया है।

आभार—

कोई भी साहित्यिक कार्य प्रायः अनेक व्यक्तियों के सहयोग से ही सम्पन्न होता है। अतः जिन-जिन महानुभावों का सहाय प्राप्त हो उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाश करना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाश में आने के निमित्तभूत एवं सुविधा देकर कार्य में सुगमता एवं शीघ्रता करने के लिये श्रीजनार्दनरायजी नागर, बीकानेर पधार कर कई दिन लगातार मेरे साथ श्रम उठाकर विवरण-संग्रहमें सहायता एवं प्रेस-कोपी तैयार करने-करवाने के लिये श्रीपुरुषोत्तमजी मेनारिया और विषय-वर्गीकरण आदि कार्यों में सत्परामर्श देने एवं प्रूफ संशोधन में सहायता करने के लिये माननीय स्वामी नरोत्तमदासजी का मैं बड़ा आभारी हूँ। सबसे अधिक आभार तो जिन संग्रहालयों की प्रतियों का विवरण लिया गया है उनके संचालकोंका मानना आवश्यक है जिनकी कृपा के बिना यह ग्रन्थ संकलित हो ही नहीं सकता था। उन संचालको में से श्री अनूप संस्कृत लायब्रेरी की प्रतियों के यथावश्यक नोट्स लेने की आज्ञा एवं सुविधा देने के लिये डायरेक्टर शिक्षाविभाग राज श्री बीकानेर, एवं क्यूरेटर महोदय का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ।

प्रस्तावना में कुछ अधिक लिखने का विचार था। जिन-जिन विषयों के ग्रन्थों का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दिया गया है उन सभी विषयों के अद्यावधि प्राप्त समस्त ग्रन्थों की सूची एवं उनके विकास और हिन्दी साहित्य पर अन्य प्रासंगिक विचार प्रकट करने का विचार था पर ग्रन्थ को रोके रहना उचित नहीं समझ अत्यंत संक्षेप में समाप्त की जा रही है। समय ने साथ दिया तो मेरे सम्पादित आगामी भागों के प्रकाशन के समय विस्तार से प्रकाश डालने की भावना है।

बीकानेर }　　　　　　　　　　—अगरचन्द नाहटा

---

(१)—जैसलमेर के ज्ञान भंडारों एवं वहाँ के अज्ञात ग्रन्थों के सम्बन्ध में मेरे निम्नोक्त दो लेख प्रकाशित हैं :—(क) जैसलमेर के भंडारों की कुछ ताडपत्रीय अज्ञात प्रतियें (प्र० अनेकान्त वर्ष ८ अंक १), (ख) जैसलमेर के भंडारों के अन्यत्र अप्राप्त ग्रन्थ (प्र० जैन साहित्य प्रकाश वर्ष ११ अंक ४)।

कवि नामानुक्रमणिका

ग्रन्थनामानुक्रमणिका

राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

(द्वितीय भाग)

(क) कोष-ग्रन्थ

(१) अनेकार्थ नाममाला। पद्य १२०। रचयिता—महासिंह। रचनासंवत—१७६०

आदि—

प्रारंभ का एक पत्र खो जाने से ८॥ पद्य नहीं हैं। ९ वाँ पद्य इस प्रकार है—

अग्नि धनंजय कहत कवि, पवन धनंजय आहि।
अर्जुन बहुर्यो धनंजय, कृष्ण सारथी जाहि॥ ९॥

अंत—

जो इह अनेकार्थ को, पढे सुने नर कोइ।
ताके अनेका अर्थ इह, पुनि परमारथ होइ।
मो मनु निसु दिनु तुम वसो, सदा भिखारीदास।
महासिंह तुम जीय जीयत, मो मन करो निवास॥ २०॥

लेखन—सं० १७६० ज्येष्ट मासे कृष्णपक्षे १२ शनौ। पातसाहि श्री मनिविनोदात् अवरंगजेब राज्ये लि० पाडे महासिंह।

अमर आदि कोस जु घनें, तिनि कोस तु इहां लीन।
महासिंह कवि यों भनें, अनेकार्थ यह कीन॥

प्रति—गुटकाकार पत्र १४। पंक्ति १४—१५। प्रति पंक्ति अक्षर १२—१६। साइज ५॥×८।—।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) अनेकार्थ नाममाला । पद्य १६९ । विनयसागर । सं० १७०२ कातिक पूर्णिमा, गुरुवार ।

आदि—

दूहो धन दीरघ ३, लघु ४२ अक्षर ४५

सदय हृदय गुन गन भरन, अभरन ऋषभ जिनंद ।
भव भय दुह दुहग हरहिं, सुखवर करन दिनंद ॥ १ ॥

× × ×

अनेकारथ अनेक विधि, प्रबल बुद्धि प्रकाश ।
शास्त्र समूह सोधि कहु, विरचित विनय विलास ॥ ४ ॥

अंत—

धर्म पाटि कल्यान गुरु, अंचलगण सिणगार ।
विनयसागर इयूं वदे, अनेकार्थं अधिकार ॥ १८ ॥
सतरसहि बिडोतरे, कार्तिक मास निधान ।
पूनमि दिन गुरुवासरे, पूरण एहि प्रधान ॥ १९ ॥

इति श्री विनयसागरोपाध्याय विरचितायां दूहा बद्धानेकार्थनाममालायां तृतीयाधिकार संपूर्ण ।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र १२ । पंक्ति ११ । अक्षर ३५ ।

(प्रति—भंडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, प्रतिलिपि अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) अनेकार्थी । पद्य ६० । सागर

आदि—

सारंग सब्द नाम—

कमल कुरग मराल ससि, पावस कुसुमअनंग ।
चातिक केहर दीप पिक, हेम राग सारग ॥ १ ॥

अन—

पिता सुपुत्र हित ग्यांन मन, रति कौतक हित कांम ।
रसना पट-रस स्वाद हित, पंच सुनो रस नाम ॥ ६० ॥

इति अनेकार्थी सागर कृत ।

लेखन काल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति–गुटकाकार बड़ा साइज । (अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(४) आतमबोध नाममाला । पद्य २७३ । चेतनविजय । सं० १८४७ माघ शुक्ला १० ।

आदि—

अथ नाममाला लिख्यते ।

दोहा—

सिद्ध सरभ(सर्व)चित धारि कैं, प्रणमु सारद पाय ।
मुझ ऊपर कीजै कृपा, मेधा दीजै माय ॥ १ ॥
गुरु उपगारी जगत मे, जानें सब ससार ।
चरन कमल ससार के, वदो वारमवार ॥ २ ॥
भाषा आतम बोध की, रचना रचौं सुठाम ।
बहुत वस्तु है जगत में, तिनको कहूँ वखान ॥ ३ ॥

अंत—

इह शुद्ध आतमबोधमाला, किये रचना नाम कौं ।
सुभ कुसुम मेधा सरस गुथ्यौ, हिय धर इह दाम कौं ॥
अति महक आवे, ग्यान पावे, चतुरता उपजै सही ।
चित चेत चेतन समझ लीजे, नाम जग सोभा रही ॥ २७१ ॥
इक अष्ट चार अरु सात धरिये, माघ सुद दसमी रची ।
इह साख विक्रमराज का है, चित्त धार लीजे कची ॥
इह नाममाला अति विसाला, कठ धारे जे नरा ।
बहु बुद्धि उपजे हिय माहि, ज्ञान जग मैं है खरा ॥ २७३ ॥

इति श्री आतमबोध नाममाला समाप्त ।

लेखनकाल—लिपिकर्त्ता ऋ. भज्जू सं० १९२३ ।

प्रति — पत्र १८ । पक्ति २२ । अक्षर ५० । साइज १० × ४॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) आरंभ नाममाला । सुबुद्धि ।

आदि—

आदि गुरुन गुरु शिव वर, जियदाता जगपाल ।
पावन पतित उधार अरु, दीनानाथ दयाल ॥ १ ॥
× × ×
अमर ग्रन्थ मैं जे कहे, सुने लहे करि शुद्ध ।
कछु उपजाये अर्थ सों, नए नांउ निज बुद्ध ॥ ५ ॥
× × ×

भाषा महिमा अधिक है, दिन २ गुन अधिकाहि ।
मृतक जीवत मन्त्र सौं, तुहो तों भाषा माहि ॥ ९ ॥
× × ×
जे कवित्त भाषा पढ़ें, जोरत भाषा शुद्ध ।
तिनके समुझन कौ इते, बरनै विविध सुबुद्ध ॥ १३ ॥
× × ×

अंत—

सूरजसुत जम जगतभरि, जियनिपात कर जान ।
शिष्टभखी निर्दई अगुनि, रवितन जोपरि बान ॥

पद्य ६७ के बाद पद्यांक नहीं दिये ।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी

प्रति—पत्र १४ । पंक्ति ११ से १४ । अक्षर ३६ से ४८ ।

विशेष—प्रति पर कर्ता का नाम सुबुद्धि दिया गया है जिस का आधार अज्ञात है, केवल छंद ११—१३ मे सुबुद्धि नाम आता है, पर वहा रचयिता के अर्थ मे नहीं प्रतीत होता । आदि अंत दोनो ही भाग नाममय हैं (आदि का करतार नाम, अत का जम नाम) कविका परिचय, रचना—समय आदि का कोई पता नही चलता ।

(जयचन्द्रजी भण्डार)

(६) खालकबारी । पद्य १५४ ।

आदि—

खालिक्बारी सिरजनहार । वाहद् एक बडा करतार ॥ १ ॥
इस्म अलाहु बका नाउ । गरमा धूप सायह छह छाउ ॥ २ ॥
रसूल प[illegible] सीठ । यार दोस्त बोलीजइ ईठ ॥ ३ ॥
रा[illegible] । अरथ मारग जानि ॥ ४ ॥
[illegible] । काल सफेद ॥ ५ ॥
[illegible] पुद ॥ ६ ॥

अंत—

स[illegible]
स[illegible]
सत्र[illegible]
या[illegible]

तम तभामभु । ख्यालकधारी ॥ लेखन—पं० अभयसोमेनालेखि ॥

प्रति—पत्र २ । पंक्ति १७ । अक्षर ६० । साइज ९॥+४ ।

विशेष—प्रति में ग्रन्थ दो विभागो में लिखा हुआ है जिनमे क्रमश' ७१ और ८३ पद्य हैं । प्रथम विभाग का अन्तिम पद्य इस प्रकार है—

तमन्ना वहम् आरज् चाह कहीयइ ।
इदो वस्त हार्थो कदम पाउ गहियइ ॥ ७१ ॥

(अभयजैन ग्रन्थालय)

(७) धनजी नाममाला । पद्य १४५ । सागर कवि

आदि—

दोहा

पश्या (पशु) पति सिव सुत ईस्वरी, कवलासन अरु संभु ।
करि प्रणान(म) सुभ देव को, सागर करहु अरंभु ॥ १ ॥
विस्नुनाम—विश्नु ना(न)रायण नरापति बनवाली हरि स्याम ।
मधुसूदन अरु दैत्य रिपु, रावण- अरि श्रीराम ॥ २ ॥

अंत—

अनतरध्यांन नाम—गुप्त तिरोहित अंतरित, गूढ दुरुहनिलीय ।
लोकाजन मै लुकि सखी इह विधि तीय ॥ ४५ ॥

इति श्री धनजी नाममाला सागर कृति समांपूर्ण।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—गुटकाकार वड़ा साइज। विविध कृतियों के साथ मे यह कृति है ।

(अनूप सस्कृत लायब्रेरी)

(८) प्रदीपिका नाममाला । पद्य ३५५। रघुनाथ ।

आदि—

अविरल मद रेखा दिपै, गनपति ललित कपोल ।
गंध लुब्ध मनु मगन है, षटपद करत कलोल ॥ १ ॥
हंस जान श्री सारदा, करत मधुर धुनि बीन ।
संत सकल सुरगन सदा, चरण कमल आधीन ॥ २ ॥
बानी बरन सकें नहीं, मन पहुंचे नहि ताहि ।
निराकार निरगुण जु है, सो सुर वे सुर आहि ॥ ३ ॥

अब हौं बरनों शब्द निधि, पार होन की आस।
चित विलास रघुनाथ कवि, नाना उकति प्रकास ॥ ४ ॥

अंत—

विविध नाम रत्नावली, सुनत हरैं दुख दंद।
कृत रघुनाथ प्रदीपिका, विष्णुदत्त के नंद ॥ ३५५ ॥

इति रघुनाथ विरचिता रत्नादिप्रदीपिका नाममाला सम्पूर्णम्।

प्रति—पत्र २३। पंक्ति ९ से १२। अक्षर २७ से ३२।

(श्री जिन चारित्रसूरि संग्रह)

(९) भारती नाममाला। पद्य ५२६। भीखजन स० १६८५ आश्विन शुक्ला पूर्णिमा, शुक्रवार। फतेहपुर।

आदि—

प्रथम निरंजन वंदि हौं, जगवंदन सुखकंद।
दिन छिन दोछिन छिन जपे, अनदिन होत अनंद ॥ १ ॥

× × ×

राज ताहि राजत अवनि, कर्यो ग्रन्थ गुन चाहि ॥ ८ ॥

× × ×

बागर मधि गुन आगरो, सुवस फतेहपुर गांव।
चक्रवर्ति चहुवान न्रिप, राज करत तिहा ठाव ॥ १० ॥
राज करत रस सौं भयौं, ज्यौं जगतीपति इंद।
अलिफखान नंदन नवल, दौलतिखान नरिंद ॥ ११ ॥
दान क्रिपान सुजान पन, सकल कला सपूर।
रवि विरचि ऐसौ रच्यौ, वचन रचन सति सूर ॥ १२ ॥
ता नंदन वंदन जगत, गुन छंदनह निधान।
कवि पंछी छाया रहे, तरवर ताहरखान ॥ १३ ॥
अजा सिंघ नित एकठा, धर्म रीति आनंद।
सकल लोक छाया रहे, बिनैराज हरिचंद ॥ १४ ॥
तहां सुभग सोभा सरस, बसै वरन छत्तीस।
तहा भीखजनु जानिकै, इह मनि भई जत्तीस ॥ १५ ॥
नाममाल गुन सहसक्रिति, दुगम लखी जीय जांनि।
इह उपजी जनु भीख जीय, रचि जु भाषा आनि ॥ १६ ॥
मथ्यो ग्रन्थ गुन सारदी, वीनि लेउ नग सिंधु।
कछुक और सुनि आन तें, रचौं जु दोहा बंध ॥ १७ ॥

तेरह मत्ता प्रथम पद, ग्यारह दुतिय करंति ।
तेरह ग्यारह साजि कें, दोहा नाम धरंति ॥ १८ ॥
सरस कला रस सो भरी, करो भीखजनु जांनि ।
धर्यो नाव तिह भारथी, भाख्यो ग्रन्थ प्रवानि ॥ १९ ॥
सोलह सै पचासिए, संवत इहे विचार ।
सेत पाखि राका तिथू, कवि दिन मास कुआर ॥ २० ॥

अंत—

कथी भारथी भीखजनु, हित चित करि निज लेहुं ।
जहां नाम पद पूरना, तहां समझि के लेहु ॥ २५ ॥
संख्या सब गुन दोहरा, कित जनु भीख सुचे१ ।
सत्रह ऊपरि पांचसै, आठों कवित्त सहेत ॥ २६ ॥

इति भारती नाममाला समाप्ता ।

लेखनकाल सं० १६९१ । कार्ती सुदी १३ । श्री झुंझुणू मध्ये । वा० ज्ञानमेरु शिष्य मुनि विमला लि चि० रंगसोम पठनार्थं ।

प्रति—पत्र २० । पंक्ति १४ । अक्षर ४८ ।

(श्री जिनचारित्र सूरि संग्रह)

(१०) मानमंजरी नाममाला । पद्य ११३ । बद्रीदास ।

आदि—

अथ मानमंजरी लिख्यते—

कवित्त

अमल कमल पद प्रनति, प्रथम गुरुज (न) सुभ सुंदर,
दरस सरस छवि कृष्ण, सरद राकेस वदन वर ।
करुणा सागर सुभग जगत्ति, कारण लीला रचि,
तिन के गोकुल ग्रेह ललित, गोपिन तन संग नचि ।
सहंसक्रिन नहिं कछु, सकति बिना को पचि मरे,
यथा सुमति बद्री सुखद, नाम दाम प्रगटें करें ॥ १ ॥

सोरठा

बहु विधि नाम निहारि, अरथ अमर जु कोष कें ।
सरब सगाउ विचारि, मान छड़ावति राधिका ॥ २ ॥

मान के नाम

दर्प्पंक मद अहंकार, मान गर्भ मति छोह भरि।
बद्रीदास अधार, माननि कौ अभिमान सुभ ॥ ३ ॥

अंत—

जुगल के नाम

द्वै जुग द्वहूँ जमल बीय, मिथुन अरु बिव उभै।
नितही कीसोर जुगल, समरन बद्रीदास कै ॥ ११३ ॥

इति श्रीमानमंजरी संपूर्ण ॥

लेo—संवत् १७२५ वर्ष वैशाख वदि १२ दिने श्री जयतारिणी मध्ये लिo पंo श्री यशोलाभ गणिना वान्यमाना चिर नंद्यात्।

प्रति—पत्र १०। पंक्ति १५। अक्षर ४०। साइज ९॥+४॥ । अक्षर सुन्दर हैं। किनारे से पत्र उदई द्वारा भक्षित होने से कुछ पाठ खंडित हो गया है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(ख) छंद ग्रन्थ

(१) छंद मालिका । पद्य १९४ । हेमसागर । सं० १७०६ हंसपुरी ।

आदि —

अलख लख्यो काहु[1] न परे, सब विधि करन प्रवीन ।
हेम सुमति वंदित चरन, घट घट अंतर लीन ॥ १ ॥

× × ×

कल्याणसागर गुरु मुनिराज वंदो । नामें करीहु भवसागर मान फंदो ।
गच्छाधिराज विधिपक्ष सरूप धारी । सोहै सदा विविध मार्ग परूपकारी ॥ ३ ॥

दोहा

सुरत विंदर के निकट, नगर हंसपुर एक ।
लघु साजने तहां वसै, श्रावक बहु सुविवेक ॥ ५ ॥
राखे पूजि चौमास तहि, सूरीश्वर कल्याण ।
सतरसें छीडोत्तरै, प्रगट्यो सुजश महान ॥ ६ ॥
हेम सुकवि चोमास में, छंद मालिका कीन ।
भाद्रों वदि नौमी सरस, भाषा कवि हित लीन ॥ ७ ॥

अंत —

संवत सत्तरसें छो वरष, पट ऊपरि जानो ।
हंसपुरी चोमासि, सूरि कल्याण बखानो ।
शांतिनाथ सुपसाय करी, छंदन की माला ।
सुकवि कंठ अति सोभ, सुगन सुभ वरन विशाला ।
छंद जु इसी मुनि कहे, हेम सुकवि आनंद धरी ।
साह कुंआ परबोध कु, छंदमालिका मे करी ॥ १ ॥

इति छप्पय

[1] —पाठान्तर—परत न कहु ।

इति श्री सत्यासी छंद समाप्त। पूज्य पुरंदर युग प्रधान श्री श्री कल्याणसागर सूरीश्वर विजयराज्ये शिष्य कवि श्री हेमसागर गणि कृते छंदमालिका संपूर्ण।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—१. छतीबाई उपाश्रय के संग्रह में, (प्रतिलिपि, अभयजन ग्रन्थालयमें)।

२. हरिसागर सूरि भंडार। पत्र १३, संवत् १७०७ लि० छंद ८५—२०७

३. जैसलमेर भंडार

(२) छंदसार। पद्य २६७। सूरत मिश्र।

आदि—

अथ छंदसार लिख्यते—

सोरठा

कृष्ण चरन चित आन, कहूँ सुमत पिंगल कछु।
जिहि तैं छंद हि जान, प्रभु गुन तामैं वरनिये ॥ १ ॥

चौपाई

प्रथमहि संख्या कर्म बताय, प्रस्तारहि सूची चितलाय।
पुन उद्दिष्ट नष्ट सुवखान, मेर पताका मर्कटि जान ॥ २ ॥

दोहा

अष्ट कर्म ए मत्त के, पुनवर्त्तन के जान।
इहि विधि षोडश कर्म ए, कहै सुकवि सुवखान ॥ ३ ॥

अंत—

रसीले रूप आगर विलासी सुख सागर, सुन्यो जू रस म नागर इतै हूँ नै टरियै।
सुवसी के वजावत छबीली के रिझावत, सुचैइ चित्त भावन सुवेगैं परि हरियै।
श्री वृन्दावन नाइक समस्तै इछदायक, सुनैं हो अवलायक बकैं सै धीर धरियै।
त्रभगी मैन मूरत न देखियै महूरत, पुकारैं द्वार सूरत कृपा की दृष्टि करियै ॥२१॥

छंद वंध जौ वरहि तो, छंद बध चितलाय।
छंद बंधि सब छाड कैं, नद नद गुन गाय ॥ २२ ॥

(१) प्रति—(१) हमारे संग्रह की प्रति अपूर्ण (पत्र १९ से २१) है अत. अत का पत्र बृहत् ज्ञान भंडार की प्रति से लिखा गया है।

(२) पत्र ३। पंक्ति ९। अक्षर २४। साइज ७॥×४॥

(३) पत्र १२। पंक्ति १२। अक्षर ५०। साइज १०×४॥

(महिमाभक्ति-भंडार)

(३) छन्दो हृदयप्रकाश । मुरलीधर । स० १७२३ कार्तिक शु० १५ ।

आदि—

श्री विनती सुकोमिलि जो, लिखीकै गन भेद धरा भरिकै ।
छन्द भुजगप्रयात बखानि, गो मत्त महोदधि को तरिकै ।
नष्ट उदिष्टनि मेरु पताकनि, मर्कटि जालनि कौं धरिकै ।
भूषण सोई जगं जग मैं, फुनि पिंगलु मगल को करिकै ॥ १ ॥

अंत—

गहवर गुन पंडित कवि मंडित रामकृष्ण कश्यप कुल पूषन ।
रामेसर ता तनय सुकवि जा जहिन निरखेउ नेकु दूषन ।
मुरलीधरु तासुअनु सुपचम देवीसिंघ कियउ कवि भूषन ।
'छन्दोहृदयप्रकासु' रचउ तिन जगमगातु जिमि मीहरु मयखन ॥ ८ ॥
संमत सत्तरह सय वर्ष तेईस कातिक मास ।
पूनिव को पूरन भयो, छन्दो हृदय प्रकास ॥

इति श्री पौलस्त्यवंशवारिजविकासनमार्तण्डगढादुर्गाधिराज्यलक्ष्मीरक्षणविचक्षण-दोर्दण्ड चतु षष्ठिकलाविलासिनी भुजंगमहावीराधिवीर राजाधिराज श्री महाराज हृदयनारायणदेव प्रोत्साहित त्रिपाठी रामेश्वरात्मज मुरलीधर कवि भूषण विरचितं छन्दो हृदयप्रकाशे गद्यविवरणनाम त्रयोदशोऽध्याय: ॥ १२ ॥

लेखन—लिखितमिदं पुस्तक त्रिपाठी संमुनाथेन स० १७३० माघ सुदी ११ हरिधवलपुर ग्रामे समाप्तं ।

प्रति—पत्र ४७ । पंक्ति १२ । अक्षर ३२ । साइज ९। × ५।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(४) प्रस्तार प्रभाकर । पद्य ८९ । रसपुञ्ज । स० १८७१ चैत्र कृष्णा ५ गुरुवार ।

आदि—

दोहा

दासोह यह मत पुरा, प्रभु में हुती सुढार ।
हर लीजो साकार तिन, गोपी अम्बर हार ॥

अंत—

संमत ससि[1] मुनि[7] वसु[8] मही[1], चैत्र कृष्ण पछ सार ।
पंचमी गुरु पूरण भयो, प्रभाकर सु प्रस्तार ॥

प्रति—गुटकाकार ।

(कविराज सुखदानजी चारण के संग्रह मे)

(५) माला पिंगल । पद्य १५३ । ज्ञानसार । सं० १८७६, फा० सु० ९ ।

आदि—

श्री अरिहंत सु सिद्ध पद, आचारज उवझाय ।
सरव लोक के साधु कु, प्रणमूं श्री गुरुपाय ॥ १ ॥
प्राकृत तैं भाषा करूं, मालापिंगल नाम ।
सुखैं बोध बालक लहै, परसम कौ नहि काम ॥ २ ॥

अंत—

जंबूदीपै मेरु सम, अवर न को ऊतुंग ।
त्युं शरीर मय गछ सकल, खरतर गच्छ उतमग ॥ १४७ ॥
गीर्वाण् वाणी सारदा, मुख तें भई प्रगट्ट ।
यातैं खरतर गच्छ में, विद्या को आभट्ट ॥ १४८ ॥
ताकै शिखा समान विभु, श्री जिनलाभ सुरीस ।
ज्ञानसार भाषा रची, रत्नराज गणि सीस ॥ १४९ ॥

चौपाई

सवत[६] कायैं फिर भय[७] देय । प्रवचनमायैं[८] सिधसिल[१] लेय ।
फागुण नवमी ऊजल पक्ष । कीनौ लक्षण लक्ष विपक्ष ॥ १५० ॥
रूपदीप तैं बावन किए । वृतरत्न तैं केते लिए ।
चिन्तामणि तें केई देख । रचना कीनी कवि मति पेख ॥ १५१ ॥
नहि प्रस्तार न कर उद्दिष्ट, मेरु मर्कटी न कियौ नष्ट ।
आधुनकाली पंडित लोक, ग्रंथ कठिन लखि देहैं धोक ॥ १५१ ॥

दोहा

इकसौ अठ दो मेर के, वृत्ति किए मतिमंद ।
यातैं याकू भाखियो, नामैं माला छंद ॥ १५२ ॥

इति श्री माला पिंगल छंद संपूर्णम ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र १३ । पंक्ति १३ । अक्षर २७ से ३२ । साइज ९॥। × ४॥।

विशेष—प्रस्तुत छंद-ग्रन्थ मे ११० छंदों का वर्णन है । इसकी दो अपूर्ण प्रतियां भी हमारे संग्रह मे हैं ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(६) लघु पिंगल। पद्य १११। चेतनविजय। स० १८४७ पौष शुक्ला २ गुरुवार। बंगदेश।

आदि—

अथ लघु पिंगल भाषा लिख्यते

दोहा

चरन कमल गुरुदेव के, वंदौ शीश नवाय।
लघुपिंगल भाषा करू, सारद देहु बताय ॥ १ ॥

छाया बिन नही कर सकै, पिंगल छंद अपार।
रूपदीप चिंतामणि, ए पिंगल मन धार ॥ २ ॥

चेतन लघुपिंगल कहैं, सुनियो वचन प्रमान।
कवित्त छंद केइ जातके, जानैं चतुर सुजान ॥ ३ ॥

लघु दीरघ गण अगण है, अक्षर मत्त समान।
चेतन बरनैं ग्यान सुं, लघुपिंगल गुन खान ॥ ४ ॥

अंत—

रूपदीपक चिंतामणि, इन पिंगल को देख।
भाषा लघुपिंगल रची, कीन्हा सुगम विशेष ॥ १०५ ॥

छंद ब्यालिसे जात के, लघु पिंगल सों जान।
भणें गुणें कंठै करै, उपजै बुद्धि निधान ॥ १०६ ॥

× × ×

ऋद्धि विजय वाचक गुरू, बहु आगम के जान।
तस शिष्य लघु चेतन भये, जनमे वग सुथान ॥ १०९ ॥

दिक्षा ले यात्रा किये, फिरि आए निज देश।
संगत पायें साध की, मेटे सकल कलेश ॥ ११० ॥

चंद[1] सिद्ध[8] वेद[4] मुनि[7], मास पोष गुनखान।
स्वेत बीज गुरुवार कौं, पूरे ग्रन्थ सुजान ॥ १११ ॥

इति लघु पिंगल भाषा संपूर्ण।

लेखनकाल—संवत १९२३ मिती श्रावन वद ७ मी। लिखते भज्जूलाल।

प्रति—पत्र ११। पं० २२। अक्षर ५०। साइज १०×४॥

(७) वचनविनोद । पद्य १२५ । आनन्दराम कायस्थ । सं० १६७९ लेखन ।

आदि—

पिंगल भूषण दूषण कविन की जाति वर्णन् ।

राम सुमिरि गुरु सुमिरि फरी, सुमिरि सबद अभिराम ।
रुचिर वचन रचना रचौं, कवि जन पूरण काम ॥ १ ॥

गुरु नुति दोहायुग्म ।

नमो कमल दल जमल पग, श्री तुलसी गुरु नाम ।
प्रगट जगत जानत सकल, जहां तुलसी तहा राम ॥ २ ॥
कासी वासी जगतगुरु, अविनासी रसलीन ।
हरि दासन दरसत सदा, जल समीप ज्यों मीन ॥ ३ ॥
अद्भुत बरननि बरनिका, करि करननि चितु लाइ ।
बरन बरन के भेद सब, बरनौं प्रगट बनाइ ॥ ४ ॥
कवि कवित्त बरनत सकल, समुझति विरला लोइ ।
भूपन गन दूपन लखै, निदूंपन तब होइ ॥ ५ ॥

अंत—

ए भूपन दूपन समुझि, रचै जु कविजन छंद ।
ताहि पढ़त अति सुख बढ़त, श्रवन सुनत आनंद ॥ १२४ ॥
जब लग स्वर बसुधा सुधा, उदधि खगपति चंद ।
तब लगि अविचल ह्वै रहो, वचनविनोद अनंद ॥ १२५ ॥

इति आनंदराय कायस्थ भटनागर हिसारि कृत वचन-विनोद समाप्त ।

लेखन-सं० १६७९ वर्षे आसु सुदि ४ सनौ लिखत नागोर मध्ये तेजाकेन स्वाधीत्य ।

प्रति—पत्र ६ । पंक्ति १३ से १५ । अक्षर ४० । साइज ११×५

उदाहरण मे कइ दोहे शाहमहमद के रचित हैं

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(८) वृत्तिबोध । स्वरूपदास । सं० १८९८ माघ कृष्णा १ । सिवापुर ।

आदि—

वृत्ति सब्द की छन्द की, नालवृत्ति जुन लीन ।
सुमरि जनक कृत रचत हु, सुगम ग्रन्थ नवीन ॥ १ ॥
वृत्ति समुझबो कठिन है, सज्जन देखहु सोध ।
स्वरूपदास विरचत सुगम, बाल पढ़ै हुय बोध ॥ २ ॥

अंत—

संमत अष्टादस शतक, और अठाणू मान ।
माघ कृष्ण पड़िवा भयो, ग्रन्थ सिवापुर थान ॥

प्रति—गुटकाकार ।

(कविराज सुखदानजी चारण के संग्रह में)

(ग) अलंकार ग्रंथ

(१) अनुप्रास कथन । पद्य ३० । श्रीपति ।

आदि—

अथ अनुप्रास कथनं लिख्यते—

अनुप्रास सो जानिये, वरन साम्य जह होइ ।
छेक लाट मिश्रित कहे, तीन भांति कवि लोइ ॥ १ ॥
साम्य वर्ण जहं आदि में, वहै छेक पहिचानि ।
एक खड पद दूसरो, अरु समस्त अनुमानि ॥ २ ॥

अंत —

दामनी नचत सम जामनी सचत ब्रजपति विन कामिनी तचत पंच बांन सौं ।
सीपति रसिक मन डोलत बयारि सीरी बोलति है केल धीरो परम सयांन सौं ।
घूमि घूमि धावै, झूमि झूमि झुकि आवै, ऊमि ऊमि झरि लावै छवि धुरवांन सौं ।
नैंसुक निहारे सिखि होत है सुखारे भारे बिरही दुखारे होत कारे बदरांन सौं ॥ ३० ॥

इति अनुप्रास कथनं संपूर्ण ।

प्रति—पत्र ३ । पंक्ति १२ । अक्षर ३६ । साइज १२×६.

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२) अनूप रसाल । उदैचंद । स० १७२८ आसोज शुक्ला १० । बीकानेर ।

आदि—

जगमणि जगसिरि जगमगत, जगत जोति जगवद ।
जगत चरठ जग जय तिलक, वदै चंद अमद ॥ १ ॥
× × ×
विक्रमपुर पति कर्णसुत, श्री अनूप भूपाल ।
राजे गाजे वाजतें, रसिक सिरोमनि माल ॥ ३ ॥

अंत—

> पढ़े ग्रन्थ देखन करें, जे आरस सुकुमार।
> तिनको हित नदराम कवि, रच्यो नयो परकार ॥ ३३ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज अनूपसिंह विरचितायामलसमोदिन्यामलंकार निरूपण नाम तृतीय प्रमोद संपूर्ण।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ११। पंक्ति १८। अक्षर १२। साइज़ ६×९॥

विशेष—नायिकावर्णन प्रथमप्रमोद पद्य ६४, नायकवर्णन द्वितीय प्रमोद पद्य १८, अलंकार वर्णन तृतीय प्रमोद पद्य ३३, कुल पद्य ११५।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(५) कवि वल्लभ। कवि जान। साहजहां राज्ये। सं० १७०४

आदि—

> अगम अगोचर निरजन, निराकार कर्तार।
> अविगत अविनासी अलख, निश्चय अपरपार ॥ १ ॥

× × ×

> रवि ससि धू आकास धर, पानी पवन पहार।
> तौं लौं अविचल जान कहि, साहिजहां ससार ॥ ८ ॥
> जौं लौं या ससार में, निसि दिन आवे जांहि।
> तौं लौं अविचल राज सों, चगता जगती मांहि ॥ ९ ॥
> कहत जान कवितान हितु, ग्रन्थ करी उचारु।
> अलकार समुझाइहौं, अपनी मति अनुसारु ॥ १० ॥
> कवित करन की इच्छ जिहि, ताके आवत काम।
> यातें राख्यौ समुझि कैं, कवि वल्लभ यह नाम ॥ ११ ॥

अंत—

> साहिजहा जगपतिह दाइक, चैन की मैन सरूप सुहावै।
> वंस अकव्बर सत्ति है लायक, वैन को ऐन सु सूर कहावै।
> मोहन मूरति अत्ति है मोहत, माननि मान गुमानि मिटावै।
> जान अनुपम गत्ति है सोहन, कामनि प्रान ढहूसि लगावै।

इसके बाद कई चित्र-काव्य है।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ९६। पंक्ति १८। अक्षर २२। साइज़ ६×९॥

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

श्री चिंतामणि सगुनम्, सर्व बीज बीजाक्षर सगुतम् ।
म् नमामि पद त्रिगुनम्, वगसीराम जय जय जय जगवंदे ॥ १ ॥
मी वाणी जय जय शक (ति) वगसीराम तिहि वंद ।
सकल वर्ण वर्णात्म सिध, अथग करण आणद ॥ २ ॥
श्री लम्बोदर बुध सदन, चारु वदन सिर चंद ।
इस्वासन वगसा अभय, विघन विनासन चंद ॥ ३ ॥
भोंचानी गनपति विभू, दान सुबुध क्षय दुंद ।
सो ह्वै है सुमतै सहज, पूरण काव्य प्रबंध ॥ ४ ॥
श्री सादल रतनेस सुत, नरियन्द बीकानेर ।
छाया छत्र छितीस की, फेर काव्य चहु फेर ॥ ५ ॥

× × ×

समत उगनीसै तीन दस, सुक्र ववार सुख सिंध ।
तिथ पुन्नू बीकाण तह, वरण्या काव्य प्रबंध ॥ १४ ॥
गुनकरन या ग्रन्थ को, रच्यो जु वगसीराम ।
प्रस्नोत्तर परबंध मै, मों लिखहूँ तिह नाम ॥ १५ ॥

(कविराज सुखदानजी के सग्रह में)

ष्णचरित्र सटीक । कर्ण नृपति ।

मत्कर्ण क्षितिपतिरर्थालंकारदीपमातनुते ।
व व्युत्पत्ति कृते भाषामयमाज्ञया श्रिय. पत्यु॰ ॥ १ ॥
ान् कुवलयानद प्रभृतीन् वीक्ष्य यत्नत ।
कृष्णचरित ग्रथं कुरुते कर्ण-भूपतिः ॥ २ ॥
याकृतमहादेव श्रीकर्णनृपनिर्मितात्
ात् स्फुटीकरोत्यर्थालंकारान् सम्यगाज्ञया ॥ ३ ॥

ायण गुणरूपसिं (धु) पुन करन प्रभु की सुदरता की कही जात नें बात ।
ां ठोर रमे सु मो मन जमुना नीर ज्यों रोक न राख्यो जात ॥१॥

ात्पर्य याको यह । जो श्री लक्ष्मीनारायण जी हैं सो गुण अरु रूप इनको
ो सब कवि वरनतु है ।

पूर्ण है ।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ७१। पंक्ति ९ से १०। अक्षर २४ से २८। साइज़ १०+५

विशेष—कर्ण भूपति रचित कृष्णचरित्र पर गद्य मे टीका है। ग्रन्थ मे अलंकारो का वर्णन है।

(अनूप संस्कृत-पुस्तकालय)

(८) चित्रविलास। पद्य १३१। अमृतराइ भट्ट शिष्य चतुर्भुदासजी। सं० १७३६ का० शुक्ला ९। लाहोर।

आदि—

छप्पय छंद

सुडा दंड भसूढ मड, सिंदूर भूरवर।
केसर गुढ अलि झुड लसै, शशि खड भाल पर।
मुकट चढ सुचढ गढ, मद झरन चलतच्चे।
कुडल करन अखड चढे, जनु मारतड द्वै।
भुज दडन तुर बल कढ अति, न्यो खड वदत चरन।
कडक विहड सत खड कर, लबोदर सकट हरन॥ १॥

× × ×

वानी पे वर पाइ के, पुन वदौ सिरनाइ।
भाषा गुरु सब विध चतुर, जे श्री अमृतराइ॥ ३॥

× × ×

बैठे हैं बहु मित्र मिल, कवि अमृत के धाम।
तिन सबहिन मिल यों कह्यो, रच्यो ग्रन्थ अभिराम॥ ५॥

कुंडलिया

पढित वडे लाहोर मे, अंत गुनन को नाहि।
कछु ऐसी विध कीजिये, ज्यों सब मोहे जाहि।
ज्यों सब मोहे जाहि, ग्रन्थ रचिये अति रुचकर।
आगे भयो न होइ, और भाषा मे सरवर।
हो तुम चतुर सुजान, सबै विद्या गुनमढित।
कीज वहै उपाय, जाहि सुन रीझत पढित॥ ६॥

तिन की आज्ञा तैं भयो, कवि के चित्त हुलास।
चतुरदास छत्री महल, वरन्यो चित्र विलास ॥ ७ ॥
संवत् सत्रहसे वरष, वीते अधिक छतीस।
कार्तिक सुदि नवमी सु तिथ, वार चारु दिनईस ॥ ८ ॥
चौगत्ता कौ राज। राजत आदि जुगादिजग, ।
तिनके कुल सिरताज, अवरंग साह महावली ॥९॥
तिनके सहर बड़े वढे, अपनी अपनी ठौर।
तिन सब में सब विध अधिक, नागर नगर लाहोर ॥ १० ॥
× × ×
चित्र प्रकार अनंत गति, कहि आए कविराइ।
कवि अमृत द्वै विध रचै, अभरन भरन वनाइ ॥ १५ ॥

अत—

चित्रजात अभरन कछू, वरनी अमृतराइ।
भरे चित्र की वृत्त अब, कहि चतुरग वनाइ ॥ १३१ ॥

इति श्री चित्रविलास ग्रन्थ अभरन, अमृतराय भट्ट कृत सपूर्णम्।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ६। पंक्ति १७। अक्षर ४५ से ५०।

विशेष—इसके आगे चित्र भरे वृत्त होने चाहिए थे पर वह खड इसमे नहीं है। कर्ता अमृतराइ भट्ट प्रति में लिखा है पर प्रारंभ से चतुर्दास छत्री कर्ता ज्ञात होता है।

(जयचन्द्रजी भंडार)

(९) दंपतिरंग। पद्य ७३। लछीराम। सं० १७०९ से पूर्व।

आदि—

अथ दंपतिरंग लिख्यते।

दोहा

करि प्रनाम मन वचन क्रम, गहि कविता को ब्योहारु।
प्रकृति पुरिष बरनन करूं, अघमोचन सुख सारु ॥ १ ॥
रसिक भगत कारन सदा, धरत अलख अवतार।
कान्हकुंवर रव नीर घन, प्रगट भये संसार ॥ २ ॥
जिहिं विधि नाइक नाइका, वरनै रिपिनि वनाइ।
लछीराम तिहिं विधि कहत, सो कवियन की सिख पाइ ॥ ३ ॥

अंत—

सवैया

जा तियकैं निसि धौसु रहे पति, सो तिय काहे कौं नेह कसे ।
घन बार छुटे दृग अजन ही, नतमोर विना मुख लाल हसे ।
सखि स्यांम महावर पाइ दयो, सु विलोकि विलोकि विचारि रसे ।
मन आनैं नहीं बनिताजि बनी, सब हीं के सिंगारनि देखि हसे ॥ ७३ ॥

इति सौन्दर्यगर्विता अरु प्रेम गर्विता कही ॥ इति श्री दंपतिरंग श्रृंगार अष्ट-नाइका भेद संपूर्ण ।

लेखन—सवत् १७०९ का वैशाख सुदि ३ दिने श्री जगतारिणी मध्ये पं० चारित्र विजय लिखते वाचनार्थं दीर्घायु सक्त । भंडारी श्री कपूरचंद्रजी री पोथी उपरि लिखि आख्या तीज है दिन शुक्रवार । श्रीरस्तु ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र ६ (१४२ से १४७) । पक्ति १९ । अक्षर ३८ । साइज ७॥×५

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१०) दुर्गसिंह श्रृंगार । जनार्दन भट्ट । स० १७३५ । ज्येष्ठ शुक्ला ९ रविवार ।

आदि—

प्रथम के २३ पत्र नही हैं ।

अंत—

तिय तरुनि जावक लसे, सब सोभा आगार ।
नव पलव पकज मनों, दयो हारि निज सार ॥ ३४३ ॥
सत्तरेसे पैंतीस सम, जेठ शुक्ल रविवार ।
तिथि नौमि पूर्ण भयो, दुर्गसिंह श्रृङ्गार ॥ ३४४ ॥
छन्द अर्थ अक्षर कहूँ, भयो होइ जो हीन ।
लीज्यो सकल सुधारिकै, सो या माक्ष प्रवीन ॥ ३४५ ॥

इति श्री गोस्वामी जनार्दन कृत. श्री दुर्गासिंह श्रृङ्गार संपूर्ण । श्री शुभमस्तु । श्रीरस्तु संख्या ९०० ।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र २४ से ४६ । पंक्ति ९ । अक्षर ३८ । साइज १०×५

विशेष—प्रारम्भिक अश मिलने पर संभव है दुर्गसिंह के बारे मे नई जानकारी प्राप्त हो ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(११) दूलह विनोद । दूलह ?

आदि—

अथ दूलह विनोद लिख्यते

दोहरा

अलख अमूरति अगम गति, कहत न जीभ समाय ।
अद्भुत अवगति जाइ की, सो क्यों तरनी जाहि ॥ १ ॥

× × ×

आदि जन्म सब एक है, अरु फुनि अंतहु एक ।
बीच ते जग कहतु है, हिंदू तुरक विवेक ॥ ६ ॥

× × ×

मोहन रूप अनुप सि मूरति, भुप बलि विधि रूप सुधारो ।
तेग बली अरु त्याग बलि, अरु भाग्य बलि सिरताज सवारो ।
साहि सुजान विहान को भांन, जिहांन जान औ नैननि तारो ।
साहिब आलम साहिन साहि, महम्मद साहि सुजा जगि प्यारो ॥ १ ॥

अंत—अप्राप्त

केवल प्रथम पत्र ही प्राप्त है।

प्रति—पंक्ति १२ । अक्षर ३२ । साइज ९×४

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१२) नखसिख । पद्य ६३ । घनश्याम । सं० १८०५ काती सुदी बुधवार

आदि—

अथ राधाजी को नखसिख वर्णनं लिख्यते । पुरोहित घनश्याम कृत ।

कवित्त छप्पय

श्री वल्लभ नित समर, करत मति निरमल लायक ।
विट्ठलेस प्रभु समर, सरन गत सदा सहायक ।
गोवर्द्धन धुर सुमिर, सकल व्रज जुवती नायक ।
निज गुरु गिरिधर सुमिर, सदा मंगल बुधदायक ।
इन चरनन को अनुसरहु, हरदासन की हुवै सरन ।
राधा अदभुत रूप तिहां, घनश्याम नखसिख वरन ॥ १ ॥

अंत—

अष्टादश शत पंचए, संवत् कातिक मास ।
सुकल पछि पद बुध दिवस, नख सिख भयो प्रकास ॥ ६१ ॥

बिनुहि समक्ष वर्णन करयो, लघु दीरघ सम साध।
श्री वल्लभकुल को दास गनि, छमहु सु कवि अपराध ॥ ६२ ॥
श्री वल्लभ प्रभु सरन ह्वै, ज्ञान कह्यो सब पाय।
घनस्याम अच्छर सबै, पीतो भव जदुराय ॥ ६३ ॥

इति नखसिख वर्णन संपूर्ण।

लेखनकाल—सं० १८२८ माघवदी १४ दिने वा० कुशलभक्ति गणी लिखतम श्री पंचभद्रामध्ये।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ६। पंक्ति १९। अक्षर ३८। साइज ९×५॥

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१३) नखसिख।

आदि—

अथ नखसिख वर्णनम्

रसदायिनी दायिनी सरस, परस समोह सयान।
विमल वदन वाणी विनय, नमन निरंतर दान ॥ १ ॥
रसिकनि हेतु सिंगार रस, नख सिख अग विचार।
निरुपम रुचि नव नागरी, ताके कहत सिंगार ॥ २ ॥

× × ×

अथांघ्रिवर्णनम्

कमल कुलीन किधुं कूरम सुलीन जर जोर गति नीर निधि काम करि ठए हि।
गति के करीश किधु मोहन मृणाल दल सायक कहु पांचउ पुन्य पूरन के नए हि।
पदमा के पीन नवनीत सु सुधारे ढारे अमल अमोल छवि छाहेर रस दए हि।
किधु पद जुग नव तरनी के राजतहि वाजने नूपुर गज गाह धरि लए हि ॥ १ ॥

अंत—

पत्र ३ के बाद पत्र नहीं मिलने से ग्रन्थ अधूरा रह गया है।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

प्रति—पत्र ३। पंक्ति १३ से १४। अक्षर ५० से ५७। साइज १०।×४।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१४) नखशिख। सवैये ३०।

आदि—

जीवन सरोवर के कोमल सिवाल सूल, काम ततु तूल मखतूल कैधे तार हैं।
पंच सर सिंधुर के स्याह और किधौं मौर किधौं सिरि सहज सिंगार रस सार हैं।

मायैं मार मरकत मनि के मयूख, किधौं घेरैं चद कौ तिमिर परवार हैं।
लामैं लामैं जामैं जोति लता के वितान किधौं, किधौं स्यामवरन छवीले छूटे वार हैं ॥ १ ॥

अंत—

बीजुरी ताक किधौं रतन सलाक किधौं, कोमल परम किधौं प्रीतिलता पी की है।
रूप रस मजरी कि मंजुल चपक दाम, किधौं कामदेव के अमर मूरि जी की है।
चन्द्रकला सकलक मालिन कमल माल, जाके आगे लागति प्रदीप जोति फीकी है।
दूजी सुर नर नाग पुरन विरञ्ची रची, जैसी नखसिख अंग राधिकाजू नीकी है ॥ ३० ॥

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ३। पंक्ति १६ से १८। अक्षर २६ से ४०। साइज ९×४

(श्री जिन चारित्र सूरि संग्रह)

(१५) प्रेममंजरी। पद्य ९७। प्रेम। सं० १७४० चैत्र सुदी १० सोमवार

आदि—

मन वच करूं प्रणाम, प्रथमहि गुरु गोविन्द कूं।
पूजै मन की काम, जिनकी कृपा सुदृष्टि तैं ॥ १ ॥

अंत—

सतरैसे चालीसतरा, चैत्र मास उजियार।
अटकनि अटकहि लिख चुके, तिथि दसमी शिववार ॥

लेखन—संवत १७५४ अनुपसिंह राज्ये कुवर सरुपसिंह चिरजीयात् महाराज कुंवर आणदसिंहजी भाणेज जोरावरसिंह सीसोदिया हजूर, मथेण राखेचा लि० आदूणी गढ़े।

प्रति—पत्र १४

(खरतर आचार्य शाखा चुन्नी-भडार, जैसलमेर)

(१६) भाषा कवि रस मंजरी। पद्य। १०७। मान

आदि—

सकल कलानिधि वादि गज, पचानन परधान।
श्री शिवनिधान पाठक चरण, प्रणमि वदे मुनि मान ॥ १ ॥
नव अंकुर जोवन भई, लाल मनोहर होइ।
कोपि सरल भूषण गहै, चेष्टा मुग्धा सोइ ॥ २ ॥

अंत—

मारि नारि सबको कहै, किउं नाइकासु होइ।
निज गुण मनि मति रीति (ध) रि, मान ग्रन्थ अवलोइ ॥ ११७ ॥

इति भाषा कवि रस मंजरी नायका ८, नायक ४ दूत ४ दूती १७ भेदाः समाप्ताः।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी

प्रति—पत्र ४। पंक्ति १९। २०। अक्षर ५६ से ६०। साइज १०। × ४।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) मनोहर मंजरी। पत्र १४८। सं १६९१। मथुरा।

आदि—

अथ मनोहर मंजरी लिख्यते

एक दंत गुणवत महा बलवत विराजै,
लंबोदर बहु विघन हरत, सुमिरन सुख राजै।
भुजा चारि गज वदन अदन मोदक मद गाजै,
गवरिनंद आनंद कंद जगदंब सदा जै॥ १॥

दोहा

कछु अनुभव कछु लोक ते, कछु वि रीति बखानि।
करत मनोहरमंजरी, रसिक लेहु पहिचानि॥ २॥

अंत—

वरन येक नव रस मही, मधु पूरन दिनरात।
करी मनोहर मजरी, रसना कवि न अघात॥ ४७॥
मथुरा को हो मधुपुरी, वसत महौली पौर।
करी मनोहरमजरी, अति अनूप रस सौर॥ ४८॥

इति मनोहर मजरी संपूर्ण शुभमस्तु।

लेखनकाल—२० वीं शताब्दी

प्रति पत्र ५। पक्ति २३। अक्षर ५६। साइज १०× ५

विशेष— नायिका भेद आदि का वर्णन है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१८) रतिभूषण। जगन्नाथ। स० १७१४ जे० शु० १० चंद्रवार। जैसलमेर

आदि—

पहिले करो प्रणाम, गणपति सरसति सुगुरुको।
द्यो मोहे मति अभिराम, तिय पिय केलि सु बरणवों॥ १॥

अंत—

प्रीत प्रभाउ के दर्शन चार प्रकार।
जोरि करि जगन्नाथ कवि, ऐसी भाति विचार॥ १४॥

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी

विशेप—जैसलमेर के रावल सबलसिंह के पुत्र अमरसिंह के लिये रचित। ग्रन्थ में ६ अध्याय हैं।

(जिनभद्रसूरि भंडार, जैसलमेर)

(१९) रस तरंगिनी भाषा। कवि जांन। सं० १७११ माघ

आदि—

अलख अगोचर सिमरिये, हित सौं आठौं याम।
तो निहचै कवि जान कहि, पूजे मनसा काम ॥ १ ॥

दीन दयाल कृपालु अति, निराकार करतार।
तन को पोपण भरण है, मन इच्छा दातार ॥ २ ॥

नबी महम्मद समरियै, जिन सर्ज्यो करतार।
वारापार जिहाज विन, कैसे कीजे पार ॥ ४ ॥

साहिजहां जुग जुग जिओ, सुलताननि सुलतान।
जान कहै जिह राज मे, करत अनंद जहांन ॥ ४ ॥

रसुतरगिणी संस्कृत, कृते कोविद भान।
ताकी मैं टीका करी, भापा कहि कवि जान ॥ ५ ॥

सब कोइ समझत नहीं, संस्कृत दुगम बखान।
तातै मैं कीनी सुगम, रसकनि हित कहि जान ॥ ६ ॥

अंत—

सन् हजार जु पैसठो, रबिउल अव्वल मास।
रसुतरंगिणी जान कवि, भापा करी प्रकाश ॥ ३२१ ॥
संवत सतरहसै भयौ, इग्यारह तापर और।
माह मास पूरण भई साहिजहां के दौर ॥ ३२० ॥

लेखनकाल— सं० १७२४ प्रथम आपाढ शुक्ल ९ चन्द्रवासरे लिखितम्
प्रति—पत्र २८ ग्र० १०५४

(आचार्य शाखा भंडार, बीकानेर)

(२०) रस रत्नाकर। मिश्र हृदयराम। सं० १७३१ वै० शु० ५.

आदि—

शिव(रा), पर सरस सिंगार सों सहित सोहै, सारस में जैतवार सखी में सहास है।
और देवतानि के बदन मांह निन्द मय, महानदी मांह महा रोस को प्रकास है।

फुकरत लखि फणपति मैं सभय हरि, लोचन चरित मांह विस्मय विलास है।
जयति जयंती जूकी दीठि भाव रसमय, करुण सहित शुभ जहां शिवदास है।

कवि वंश वर्णनम्

ब्रह्मा कीनी सृष्टि सब, पहिलैं करि सप्तर्षि।
तिनि सातनि के वश सों, उपजै बहु ब्रह्मर्षि ॥ १ ॥
पंच गौड द्विज जगत में, पंच द्राविड जांनि।
जहं जह देस बपे तहां, नाम विशेष बखानि ॥ २ ॥
जनमेजय के यज्ञ मैं, हरि आने जे विप्र।
इन्द्रप्रस्थ के निकट तिन, ग्राम दये नृप क्षिप्र ॥ ३ ॥
गौड देस तें आनि के, बसे सबै कुरु खेत।
विप्र गौड हरि आनियां, कहै जगत इहिं हेत ॥ ४ ॥
तिनमैं एक भटानिया, जोशी जग इहि ख्याति।
यजुर्वेद माध्यदिनी, शाखा सहित सुजाति ॥ ५ ॥
गोत कलित कोशल्ये, गनौं घरोंडा ग्राम।
उपजै निज कुल कमल रवि, विष्णुदत्त इहिं नाम ॥ ६ ॥
विष्णुदत्त को सुत भयो, नारायण विख्यात।
ताको दामोदर भयो, जग में जस अवदात ॥ ७ ॥
भाष्य सहित कैयट सकल, पढ्यो पढ़ायो धीर।
षट दर्शन साहित्य मैं, जाको ज्ञान गभीर ॥ ८ ॥
स्वारथ परमारथ प्रदा, विद्या आयुर्वेद।
श्री दामोदर मिश्र सब, ताको जानै भेद ॥ ९ ॥
हरिवदन के नाम जिन, ग्रंथ कर्यो विस्तार।
कर्मविपाक निदान युत, और चिकित्सासार ॥ १० ॥
करी चाकरी बहुत दिन, बैरम-सुत के पास।
बहुरि वृद्ध ताके भये, कीनो काशी वास ॥ ११ ॥
रामकृष्ण ताको तनय, विद्या विविध विलास।
विप्र नगर के सिष्य सब, कियो जौनपुर वास ॥ १२ ॥

इसके पश्चात् भुवनेश मिश्र के २ संस्कृत पद्य आदि हैं।

× × ×

आसफखां जू को अनुज, यातिकादखां वीर।
ताकों करि कृपा महा, जानि गुणनि गभीर ॥
रामकृष्ण के तनय त्रय, जेठे तुलसीराम।
मझिले माधवराम बुध, लहुरे गंगाराम ॥

× × ×

रामकृष्ण को पौत्र है, हृदयराम कवि मित्र।
उद्धव पुत्र प्रयाग द्विज, दीक्षित को दौहित्र ॥ १५ ॥

रामकृष्ण को पुत्र मणि, माधवराम सुजान।
साहि सुजा की चाकरी, करी बहुत दिन मान ॥ १६ ॥

नंदन माधवराम को, हृदयराम अभिराम।
नवरस को वर्णन करे, यथा सुमति संदाम ॥ १७ ॥

× × ×

संमत सत्तरैसे बरस, बीते अरु एकतीस।
माधव सुदि तिथि पचमि, वार वरनि वागीस ॥ २१ ॥
भानुदत्त कृत संस्कृत, रसतरगिणी भाइ।
रसिक वृंद के पढ़न कौं, पोथी करी बनाइ ॥ २२ ॥

अंत—

ज्यों समुद्र मथि देवतनि, पाये रतन अमोल।
त्योंही नवरस रतन लही, मथि तेरह कल्लोल ॥ २७ ॥

रसरत्नाकर ग्रन्थ यह पढ़ै सु नर मन लाइ।
ताकौ ह्वै हैं हृदय मैं, नवरस ज्ञान बनाइ ॥ २८ ॥

करि प्रनाम कछु करत हौं विनती बुध सौं लेखि।
जहँ असुद्ध तह शोधियो, सहृदय बुद्धि विशेखि ॥ २९ ॥

इति श्री मिश्र माधवरामात्मज श्री मिश्र हृदयराम विरचिते रस रत्नाकरे, रसालंकारे, रसाभिव्यक्ति वर्णनन् नाम द्वादश कल्लोल: समाप्त:।

लेखन—सं० १७४८ वर्षे कुंवार शुक्ल पक्षे ५, शुभमस्तु ग्रन्थ संख्या १८८०

प्रति—गुटकाकार। पत्र ७५। पंक्ति २०। अक्षर १८। साइज ७ × ९

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२१) रस विलास। गोपाल (लाहौरी) सं० १६४४ वैशाख शुक्ला ३।
मिरजाखांन के लिये।

आदि—

प्रस्तुत ग्रन्थ का केवल अंतिम पद्य ही प्राप्त है अत आदि के पद्य नहीं दिये जा सके।

अंत—

रुकुमनी लछनि रूप गुनही, को कवि कहै निवाहि।
मे जानइ तेही कहे, गोविंद रानी आहि ॥ ४१ ॥

संवत सोरहसइ वरस, बीते चोतालीस।
सोमतीज वैशाख को, करी कमध्वज ईस ॥ ४२ ॥
वरनि सेनि बैकुंठ की, सची वेलि संसार।
सुने सुनावइ जिन नरनु, प्रेम उतारइ पार ॥ ४३ ॥
आज्ञा मिरजांखांन की, भई करी गोपाल।
वेल कहे को गुन यहइ, कृष्ण करो प्रतिपाल ॥ ४४ ॥
मरुभापा निरजल तजी, करि व्रजभाषा चोज।
अब गुपाल यातें लहैं, सरस अनोपम मोज ॥ ४५ ॥
कवि गुपाल यह ग्रन्थ रचि, लायो मिरजां पास।
रस विलास दे नांउ उनि, कवि की पूरी आस। ४६ ॥

इति श्रीमन् ति(नि!)खिल खांन शिरोरत्न श्रीमान् मुसाहिब खांन तनुज श्रीमन्नबाप सिरदारखांनात्मज श्रीमन्मिरजांखांन मनोविनोदार्थ पंडित लाहोरी कृतं। रस-विलास समाप्त।

लेखन—संवत् १७४९ वर्षे पं० प्रेमराजेन लिपी कृता श्री भुज नगरे।

प्रति—अंत का आठवां पत्रांक प्राप्त। साइज १०। × ४॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२२) रसिक हुलास सूरदत्त स० १७१६ फागुन शुक्ला ५ अमरसर।

आदि—

आनंद के कंद जगवंद, दगुत चंद सोहैं, पारवती के नंद हरैं विपति कुमति कौं।
बुधि के सदन गजवदन रदन सुभ, दुख के कदन सुख देत है सपत्ति कौं।
विघन हरन सब के भरन पोपन हो, असरन सरन सो सुमति को।
श्रीपति सिवापति सिक्रराय सुरपति, करत प्रनाम ऐसे महा गनपति को ॥ १ ॥

नगर अमरसर अमरपुर, कीनो भुव कर्तार।
वसैं जहां चारों वरन, दाता वनिक अपार ॥ २ ।

× × ×

राय मनोहर नृपति तहँ, रच्यो एक कर्तार।
सेखाउत कछवाह मनि, पारथ को अवतार ॥ ६ ॥
मिरजाई तिह को दई, अकवर साहि सुजान।
सुत सम बहु आदर करे, जानै सकल जहान ॥ ७ ॥
ताकौं सुत जग में विदित कहिये पृथिवीचंद।
सुमिरत जाके नाम को, मिटे सकल दुख दंद ॥ ८ ॥
कृष्णचन्द्र ताको तनय, मनसिज सौ अभिराम।

रसिकराय सों तिन कह्यो, करिके बहुत सनेहु ।
हमकों रसिक हुलास करि, रसतरंगिनि देहु ।। १० ॥

दोहा

संवत सतरैसे वरस, सोरह ऊपर जानि ।
फागुन सुदि तिथि पंचमि, सु महूरत सो मानि ।। ११ ।।

ता दिन ते आरंभ यह, कीन्हों रसिक हुलास ।
समुझि परै जाके पढ़ैं, (र)सके सबै विलास ।। १२ ।।

पढ़ैं जो रसिकहुलास यह, नर नर घर म कोइ ।
जानै गति रस भाव की, मजिलिस मंडन होइ ।। १३ ।।

सूरदत्त कवि अलप मति, कासी जाको वास ।
अति प्रवीन तिन सरस यह, कीनो रसिकहुलास ।। १४ ।।

अंत—

बुध वारिद बरषहुं सदा, तातें नइ नवीन ।
जातें रसिकहुलास की, वृद्धि होहि परवीन ।।

जावत सूर सुता रहै, धरती मैं सुख पाइ ।
तावत सूरदत्त कृत, रसिकहुलास सुहाइ ।।

इति श्री सूरदत्त विरचिते रसिक हुलासे दृष्टि आदि निरूपणं नाम अष्टमो हुल। समाप्तं ।

लेखनकाल—सं १७४९ । मिती कार्तिक वदी सप्तमी ।

प्रति— पत्र ४५ । पंक्ति । २२ । अक्षर १७ । रस रत्नाकर वाले गुटके में है ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२३) रसिक आराम पद्य १०० । सतीदास व्यास । सं० १७३३ माघ शुक्ला २ बीकानेर

आदि—

नमन करि हलवीर कु, नव जलधर वर स्याम ।
सतीदास संछेप सुं, रचति रसिकआराम ॥ १ ॥

शुभ संवत सै सप्तदश, वरस वरन तेतीस ।
मास माघ सित पछ तिथि, दूज भ वार दिन ईश ॥ २ ॥

बीकानेर सुहावनों, सुख संपति गुन रूप ।
सुथिर राज महि मेरु लों, अधिपति भूप अनूप ॥ ३ ॥

निमसकार ताकों करौ, नांउ महमद जाहि ।
असरन सरन अभरन भरन, मै भंजन गुन ताहि ॥ २ ॥
जबहि बखानौ नाइका, नाइक कहि कवि जान ।
मथूं कथूं रसमंजरी, सुनो सबै धर कांन ॥ ३ ॥
तन मन मै संतोष है, मिटै चित को सोष ।
आरस सोषन नास है, धर्यौ नाउ रसकोष ॥ ४ ॥
× × ×

अंत—

जहाँगीर के राज्य में, हरन चित को दोष ।
सोलहसे पटहुतरै, कियौ जान रसकोष ॥ १४१ ॥
चौपाइ ५०

लेखन—सौलहसै चौरासिये, नग्र फतेपुर थान ।
हुती जु सातैं जेठ बदि, लिख्यौ भीखजनु जान ॥ १ ॥ (ग्र० ३००)

प्रति—गुटकाकार, जिसमें पहले आनंद रचित कोकसार (सं० १६८२ लिखित) है ।
(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

× × ×

(२७) लखपति जस सिन्धु । तपागच्छीय कनककुशल शिष्य कुंवरकुशल ।

आदि—

सकल देव सिर सेहरा, परम करत परकास ।
सिविता कविता दे सफल, इच्छित पूरै आस ॥ १ ॥

अंत—

कवि प्रथम जे जे कहे, अलकार उपजाय ।
कुवर-कुशल ते ते लहे, उदाहरन सुखदाय ॥ ८२ ॥

इति श्री मन्नमहाराज लखपति आदेशान् सकल भट्टारक पुरन्दर भ० श्री कनक कुशल सूरि शि० कुंअरकुशल विरचिते, लखपति जससिन्धु शब्दालङ्कारार्थलंकार त्रयोदश तरंग ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र ५३ ।
(यति ऋद्धिकरणजी भंडार, चूरू)

(२७) विक्रम विलास । लालदास ।

आदि—

जिहिन सुन्यौ हरिवस जिमि, विक्रम साहि विलास ।
तनहिनते रसराज घर, तनै जनम सुख आस ॥ १ ॥

कथा माधवानल करी, नाटक उखाहार।
तृपति न मानी लाल तव, नव रस कियो विचार ॥ २ ॥
नीरसु गहे न भाव रस, रसिकु भजे रस भाव।
गाड़ी चले न सलिल मैं, सूखि चले न नाव ॥ ३ ॥

अंत—

चरित राम सुग्रीव के, सोरि नन्द व्यवहार।
इत्यादिक मैं जानियो, प्रिय रस के अवतार ॥ ४ ॥

इति श्री लालदास विरचिते विक्रम विलासे रसान्तरोपि समाप्तः।

लेखन—संवत् १७२९ वर्षे शाके १५९४ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रद माघ मासे, शुक्लपक्षे पूर्णमास्यां तिथौ सोम्यवासरे श्री नासिक महानगरे श्री गोदावरी महातटे श्री महाराजाधिराज श्री महाराज श्री ४ अनूपसिंहजी चिरंजीवी पोथी लिखावितं। शुभं भवतु श्री मथेन सांमा लिखतं ॥

प्रति—(१)—पत्र ३१। पंक्ति १९ अक्षर १६। साइज ६×९॥

(२)—पत्र ६७। पंक्ति ८। अक्षर ३५

विशेष—प्रति में प्रथम अलसमेदनी, अनूपरसाल, योगवाशिष्ठभाषा, विक्रम-विलास, सतवंती कथा, वीवी वांदी झगड़ो, कथा मोहिनी, जगन वत्तीसी, रसिक विलास ग्रन्थ हैं। दूसरी प्रति में विक्रम विलास का निम्नोक्त अन्त पद्य अधिक है—

विवरण भेरस भीम के, आरण पायो लाल ॥ ३१० ॥
जहा जान अजान मैं, कियो कछु अविचारि।
तहा कृपा करि सोधियो, सज्जन सबै विचारि ॥ ३११ ॥

इति लाल कवि विरचित विक्रम विलासे रसान्तर रस वर्णन समाप्त। श्लोक ५६१

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२९) वैद्य विरहिणि प्रबंध। दोहा ७८। उदैराज। सं० १७७२ से पूर्व

आदि—

एकन दिन ब्रज वासिनी, दिल मैं दई उहार।
हौं दुखहारी वैद्य पै, जाइ दिखाऊ नारि ॥ १ ॥
की विरहिन जिय सोच मैं, धर अपनी जिय आस।
[illegible] पान वयौं कर दनै, गयो वैद पै पास ॥ २ ॥

अंत—

अपनें अपनें कंत सूं, रस वस रहिया जोइ।
उदैराज उन नारि कू, जमें दुहागन होइ ॥ ७७ ॥
जां लगि गिरि सायर अचल, जांम अचल ध्रू राज।
तां लगि रंग राता रहै, अचल जोडि व्रजराज ॥ ७८ ॥

इति श्री वैद्य विरहिणी संपूर्णा।

लेखनकाल—संवत् १७७२ वर्षे कार्तिक सुदि १४ तिथौ

प्रति—पत्र २। पंक्ति १७। अक्षर ५२।। साइज १०×४॥।

विशेष—अक्षर बहुत सुन्दर हैं। विरहिणी नारी वैद्य के पास जाती है और कामातुर हो अपना सतीत्व नष्ट कर देती है। इसका शृंगार रसमय वर्णन है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३०) साहित्य महोदधि सटीक। रावत गुलाबसिंह। सं० १९३० लग०।

आदि—

गवरी उवटणो करत, गुटिका किय सुनि गाद।
ताके अंगज त्रय भये, सुतरु तुमरु नाद ॥ १ ॥

अर्थ—एक समय गवरी कैलास में उवटणो नाम अन्न विकार को मालस करावते हुते। तदा वह उवटणा की गाद परिमणु तिकों भेगी करिकें तीनि गुटका कीनी। पुरुप रूप की वह गुटिका के तीन पुत्र प्रगट कीन्हें। वडा पुत्र को नाम सूतजी, दूजा को नाम तुमुलजी, तीजा को नाम नादजी, यह तीन पुत्र गवरी के भये।

अंत—

एक दिवस उदल्ल नृप, मम प्रति कही यह कत्थ।
रचिदौ ऐसो ग्रन्थ तित, मिले काव्य कृत सत्थ ॥ १० ॥

तब में कीनो ग्रन्थ यह, शिशु हित सूधपलेत।
काव्य अग वेदांत अरु, प्राकृत राग समेत ॥ ११ ॥

इति श्री चारणान्वय महद्द कवि रावत गुलाबसिंह विरचित साहित्यमहा ?' स्तरणी टीकायां नृपवंश निरुपणे अमुक खंड ॥ ११ ॥

लेखनकाल—सं १९६३

प्रति—पत्र १७.

विशेष—साहित्य महोदधि का यह खंड कवि वंश वर्णन और प्रतापगढ़ राज वंश वर्णन के रूप में है।

(कविराज सुखदानजी के संग्रह में)

(३१) संयोग द्वात्रिंशिका। पद्य। ३७. मान. । सं० १७३१ चैत्र शुक्ला ६.

आदि—

अथ संयोग द्वात्रिंशिका लिख्यते

बुद्धि वचन वरदायिनी, सिद्धि करन सुभ काम।
सारद सों मांननि सखर, हिय की पूरे हांम ॥ १ ॥
राग सुभाषित रमन रस, तिहुन में ओ गूढ।
जो जोगीसर जगती, न लहै तिनको मूढ ॥ २ ॥

अंत—

आदि सुराग सुभाषित सुंदर, रूप अगूढ सरूप छतीसी।
पच संयोग कहे तदनंतर, प्रीति की रीति वखान तितीसी।
संवत चंद्र[1] समुद्र[3] शिवाक्ष[3], शशी[1] युति वास विचार इतीसी।
चैत सिता सु छट्टि गिरापति, मान रची यु संयोग छ (व?)त्तीसी ॥२।

दोहा

अमर चंद मुनि आग्रहै, समर भट्ट सरसत्ति।
संगम वत्तीसी रची, आछी आनि उकत्ति ॥ ७३ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचितायां संयोग द्वात्रिंशिकायां नायका नायक परस्पर संयोग नाम चतुर्थोन्मादः ॥ ४ ॥ इति संगम वत्तीसी संपूर्णम्।

लेखन—लिखितं वा० कुशलभक्ति गणिना पं० हर्षचंद्र सहितेन पंचभद्रा मध्ये सं०१८२८ रा माह वदि २ वुधौ लिखित अति हर्षेन पं० हरनाथ वाचनार्थं लिखिता।

प्रति—पत्र ५

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(ग) वैद्यक-ग्रन्थ

(१) अतिसार निदान

आदि--

अथ अतीसार को निदान कथ्यते।

परिहां—अजीर्ण रसहि विकार रुख मद पांनहीं।
सीतल उष्ण स्निग्ध गमन जल पांनही।
क्रम मिथ्या भय सोक करें बहु खेद ही।
उपजै यु अतिसार वखांन्यो वैद ही ॥ १ ॥

× × ×

आंबा गिटक अरु विल्व पतीस, ए सभ दारू सम कर पीस।
तदुंल जल चूरणहु खाय, रक्त सकल अतिसार मिटाइ ॥ १९ ॥

इसके बाद मधुरा लक्षण, मुखवात लक्षणादि लिखे हैं। प्रति पत्र २ की अपूर्ण है। पता नहीं यह स्वतन्त्र रचित पद्य हैं या किसी अन्य भाषा वैद्यक ग्रन्थ से उद्धृत है। इसी प्रकार मूत्र परीक्षा का १ आदि (अपूर्ण) पत्र उपलब्ध है—

घटी च्यारि निसि पाछली, रोगी कुंजु उठाइ।
रोग परीक्षा कारणै, तव पेसाव कराइ ॥ १ ।
आदि अंत की धार तजि, मध्य धार तहां लेहु।
सेवत काच के पाच मक्षि, एकत ढांकि धरेहु ॥ २ ॥

ये पद्य भी किसी वैद्यक भाषा ग्रन्थ से उद्धृत है या स्वतन्त्र है यह अज्ञात है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) कवि प्रमोद । पत्र २९४४ । मांन । सं० १७४६ कार्तिक शुक्ला २ ।

आदि—

कवित्त

प्रथम मंगल पद, हरित दुरित गद, विजित कमद मद, तासों चित्त लाईयइ ।
जाके नाम क्रूर करम, छिनही मैं होत नरम, जगत विख्यात धर्म, तिनही कौ गाईयइ ।
अश्वसेन वामा ताको अंगज प्रसिद्ध जगि, उरग लछन पग जिनमत गाईयइ ।
धर्मध्वज धर्म रूप परम दयाल भूप, कहत मुमुक्ष मांन ऐसे ही कौ ध्याईयइ ॥ १ ॥

× × ×

युगप्रधान जिनचंद प्रभु, जगत मांहि परधान ।
विद्या चौदह प्रगट मुख, दिशि चारो मधि आंन ॥ ९ ॥
खरतर गच्छ शिर पर मुकुट, सविता जेम प्रकाश ।
जाके देखे भविक जन, हरखै मन उल्लास ॥ १० ॥
सुमतिमेर वाचक प्रकट, पाठक श्री विनैमेर ।
ताको शिष्य मुनि मानजी, वासी वीकानेर ॥ ११ ॥
संवत सतर छयाल शुभ, कातिक सुदि तिथि दोज ।
कवि प्रमोद रस नाम यह, सर्व ग्रथनि कौं खोज ॥ १२ ॥
संस्कृत वानी कविनि की, मूढ न समझै कोई ।
तातै भाषा सुगम करि, रसना सुललित होइ ॥ १३ ॥
ग्रथ वहुत अरु तुच्छ मति, ताकौ यह परधान ।
सब ग्रन्थनि को मथन करी, कीयौ एह मइ आन ॥ १४ ॥

अंत—

वाग्भट शुश्रुत चरक मुनि, अरु निर्बंध आत्रेय ।
खारनाद अरु भेड़ ऋषि, रच्यौ तहां सौ लेय ॥ ९२ ॥
मन मैं उपजी बुधि यह, भाषा कीजै आन ।
सब सुख दायक ग्रथ मत, भाषा मे परधान ॥ ९३ ॥
घटि बधि अक्षर चूक यह, सुजन होय के सोध ।
रस ही मंहि जु विरस जउ, ताहिन उपजै बोध ॥ ९४ ॥
रोग हरन सब सुख करन, सबही के हित काज ।
और जु भाषा नाव सम, कीनौ एह जहाज ॥ ९५ ॥
कवित्त छंद दोहे सरस, तां महि कीने जोग ।
प्रथम कीए मइ आप कर, भए प्रसन सब लोग ॥ ९६ ॥
अभिमांनी अरु उपजसी, हीन शास्त्र नर होय ।
हाथ न ताके दीजियो, अवगुन काढे कोय ॥ ९७ ॥

चंद्र[१] वेद[४] मुनि[७] भू[१] प्रमित, संवस्सर नभ मास।
पूनिम दिन गुरवार युत, सिद्ध योग सुविलास ॥७०॥
श्री जिनकुशल सूरीस गुरु, भए खरतर प्रभु मुख्य।
खेमकीर्ति वाचक भए, तासु परपर शिष्य ॥७१॥
ता साखा में दीपते, भए अधिक परसिद्ध।
श्री लक्ष्मीकीर्ति तिहा, उपाध्याय बहु बुद्धि ॥७२॥
श्री लक्ष्मीवल्लभ भए, पाठक ताके शिष्य।
कालग्यान भाषा रच्यो, प्रगट अरथ परतक्ष ॥७३॥
पंडित मोसु करि कृपा, शुद्ध करहु सुविचार।
पडित मान करै नहीं, करै सबसुं उपगार ॥७४॥

× × ×

अंत—

ऐसे काल ग्यान कौ, कह्यौ पंचम समुद्देस।
सुगुरु इष्ट सुप्रसाद तैं, लिख्यौ अर्थ लवलेश ॥७८॥

इति कालग्याने भाषा प्रबन्धे उपाध्याय श्री लक्ष्मीवल्लभ विरचिते पंचम समुद्देस ॥ ५ ॥

लेखन—संवत १७६० वर्ष वैशाख सुदि ८ दिने पं० आणदधीर लिखिता।

प्रति—पत्र ३। पक्ति १७ से २१। अक्षर ५८ से ६८। साइज ९॥ × ४।

विशेष—इस ग्रन्थ की कई प्रतियाँ हमारे सग्रह में हैं।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) गज शास्त्र (अमर-सुबोधिनी भाषा टीका) सं० १७२८।

आदि—

प्रथम पत्र पश्चात् ३ पत्र नहीं मिलते, पीछे का अश—

—इनके वंस के तिनके भेद। जु पांडुर वर्ण होइ। भूरे केस। नखछवि पूछ होइ। धीर होइ। रिस कराई करे। सु एरापति के वंस को। आगी ते काहू ते न डेर (डरे?) नहीं। दात सेत। आगिलो ऊंचो गात्र। मेरताई छवि। राते नेत्र। सेत सुधेदा। सु पुंडरीक के वंस को जानिवे।

अंत—

हस्ती को यंत्रु लिखि जो हस्ती को जंत्र करी। जुद्ध मांझ अथवा लराई में

वांधिजै तौ जयु होइ । हाथी भागे नहीं । गोरोचन सो भोज पत्र मे लिखी हाथी के दांत किवा कांन वांधिजै । (इसके पश्चात् हाथियों के १४२ नाम लिखे गये हैं)

इति पालकाप्य रिषि विरचितायां तद्भाषार्थ नाम अमर सुवोधिनी नाम भाषार्थ प्रकाशिकायां समाप्ता शुभं भवतु ।

लेखन—सं० १७२८ वर्षे जेठ सुदी ७ दिने महाराजाधिराज महाराजा श्रीअनूपसिंहजी पुस्तक लिखापित' । मथेन राखेचा लिखतम् । श्री औरंगावाद मध्ये ।

प्रति—पत्र ९५ । पंक्ति ९ । अक्षर ३० । साइज १०॥×५। ।

विशेष—हाथियों के प्रकार और उनके रोगों का सुन्दर वर्णन है ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(६) गंधक कल्प—आंवलासार । दोहा ४६ । कृष्णानंद ।

आदि—

गंधक कल्प आंवलासार, दूहा ।

सुन देवी अब कहत है, गधक विध समझाय ।
अजर अमर होय जगत में, जो कोइ एसै खाय ॥ १ ॥
यथा जोग्य सब कहत है, भिन्न २ समझाय ।
जब लू द्रव्य आकाश है, तब लू काल न खाय ॥ २ ॥

अंत—

कृष्णानद विचारकें, कह्यौ पदारथ सार ।
सिद्ध होय या युक्त (जगत?) में, अमर देव आकार । ४५ ॥
गधक विधि ए है चूर्न, और कहे उपदेश ।
जरा मोत कु जीत कै, जीवत रहै हमेश ॥ ४६ ॥

लेखन—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र २ । पंक्ति १३ । अक्षर ४० । साइज ९॥×४। ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) डंभ क्रिया । पद्य २१ । धर्मसी । सं० १७४० विजय दशमी ।

आदि—

आदि का पद्य प्राप्त नहीं हैं ।

अंत—

सतरसे चालीसे विजय दशमी दिने, गच्छ खरतर जग जीत सर्व विद्या जिनैं ।
विजय हर्ष विद्यमान शिष्य तिनके सही, कवि धर्मसी उपगारे, डभ क्रिया कही ॥ २१ ॥

(१५) रस मंजरी। समरथ। सं० १७६४ फाल्गुन ५ रविवार, देरा

आदि—

शिव संकर प्रणमुं सदा, उमा धरै अरधग ।
जटा मुकुट जाके प्रगट, वहत जु निरमल गंग ॥ १ ॥
ताकौं दो कर जोरि कै, करूं एह अरदास ।
वछित वर मोहि दीजिये, हरहु विघन परकास ॥ २ ॥

× × ×

वैद्यनाथ ब्राह्मण भयौ, ताको पुत्र परसिद्ध ।
शालिनाथ जसु नाम है, शुचि रुचि सदा सुबुद्धि ॥ ५ ॥
शास्त्र अनेक विचार के, देखि वैद्य सकेत ।
तिसने करी रसमजरी, सुकृति जन के हेत ॥ ६ ॥
कोविद मधुभृत वृंद के, हरें निरंतर चित्त ।
रस अनेक जामैं वसैं, अनुभव कीए जु नित्त ॥ ७ ॥
किये शालिनाथ रस मंजरी, सस्कृत भाषा मांहि ।
समझि न सकति मूढ की, व्याकुल होत है आहि ॥ ८ ॥
तातैं भाषा करत है, श्वेताम्बर समरत्थ ।
सुगम अरथ सरलता, मूरख जन के अरथ ॥ ९ ॥

अत—

सवत सतेरेसय चौसठि समै, १७६७ (?) फा (गु) न मास सब जन कौ रमै ।
पांचमि तिथि अरु आदित्यवार, रच्यौ ग्रन्थ देरै मझारि ॥ ४१ ॥
श्री मतिरतन गुरु परसाद, भाषा सरस करी अति साद ।
ताको शिष्य समरथ है नाम, तिसने करि(यह)भाषा अभिराम ॥ ४२ ॥
रस मंजरी तौ रस सौं भरी, पढ़ी सुनहु तुम आ [दर करी]
वनवाली को आग्रह पाइ, कीयो ग्रथ मूरख समझाई ॥ ४३ ॥
रस विद्या में निपुण जु होइ, जस कीरति पाये वहु लोइ ।
जहां तहां सुख पावै सही, सो रस विद्या प्रगटावै[१] कही ॥ ४४ ॥

इति श्वेताम्बर समर्थ विरचितायां रस मंजरी—

चिकित्सा छाया पुरुष लक्षण कथन दसमोध्यायः ॥ १० ॥ समाप्तोयं रसमंजरी भाषा ग्रंथ शुभं ।

लेखन—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—१—पत्र ३० । पंक्ति १३ । अक्षर ४४ । साईज १०×४॥

(अभय जैन ग्रन्थालय)

---

१ पाठा० रस नाणही ।

२—अपूर्ण। महिमा भक्ति ज्ञान भंडार व० नं० ८७।

विशेष—प्रस्तुत ग्रन्थ के १० अध्यायों के नाम व पद्य संख्या इस प्रकार है—

१—रस शोधन कथन प्रथमोध्याय: पद्य ३७

२—रस जारण मारणादि कथन द्वितीयोध्याय: ,, ६८

३—उपरस शोधन मारण सत्व नियात माणिक्य सोधन मारण कथन तृतीयोध्याय: पद्य १०

४—विष लक्षण, विष सेवा, विष परिहार, कथन चतुर्थोध्याय: पद्य ३२

५—स्वर्णादि धातु शोधन मारण कथन पंचमोध्याय: ,, ८४

६—रसमारण कथन षष्ठोध्याय: ,, २६४

७—वीर्य रोधनाधिकार सप्तमोध्याय: ,, २२

८— ? नाम अप्राप्य

९—मिश्रकाध्याय: नवम: ,, ७९

१०—छाया पुरख लक्षण कथन दशमोध्याय: ,, ४४

(१६) वैदक मति। दोहा १०१। कवि जान। सं० १६९५

आदि—

अथ वैदकमति पद नांवौ।

आदि अलह कौ नाम ले, दोम महमद नांम।
वैदक मत की सीख थे, कहत जान अभिराम ॥ १ ॥
कहत जान कवि यौं लिख्यौ, वैदक ग्रन्थन मांहि।
अनुरुचि ह्वै तौ रीजीयै, अनरुचि लीजै नांहि ॥ २ ।

अंत—

जौबत तथा क्रोध करि, काहू काटै आइ।
फूल कमर दोनुं सदक, ता ऊपरि घसलाइ ॥ १०० ॥
सौरहसै पंचानवै, ग्रन्थ कीयो यहु जांन।
वैदकमति यह नाम है, भाख्यौ बुद्धि प्रमांन ॥ १०१ ॥

इति पद नावां वैदकमति संपूर्ण।

लेखन—सं० १८०१ वर्षे वैशाख वदि ३ श्री मरोटे लि० पं० भुवनविशाल मुनिना।

प्रति—शिक्षासागर की प्रति के ५ वें पत्र के द्वितीय पृष्ठ से इसका प्रारंभ हुआ है और ७ वें पत्र में संपूर्ण हुआ है। अतः पत्र २ पंक्ति १६, अक्षर ५० साइज १०×४।

विशेष—प्रारंभ में स्वास्थ्य सम्बन्धी उपयोगी शिक्षाओं के बाद कई औषध प्रयोग हैं। जनसाधारण के लिये प्रस्तुत ग्रन्थ विशेष उपयोगी है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) वैद्यक सार। जोगीदास (दास कवि)। सं. १७६२ आश्विन शुक्ला १०। बीकानेर।

आदि—

विघ्न हरण सब सुख करन, भाल विराजत चंद।
सिद्ध रिद्ध जाकैं सदा, जय जय गवरी नंद ॥ १ ॥
प्रथम गणेश्वर पाय लग, अपने चित्त के चाय।
भाषा शुभ करिकै कहूँ, वैद्यकसार बनाय ॥ २ ॥
नव कोटि में मुकुट मन, बीकानेर शुभ थान।
राज करै राजा तहाँ, नृप मन नृपति सुजान ॥ ३ ॥
जाकै कुँवर प्रसिद्ध जग, सब गुण जांन अनूप।
जोरावर सिंह नाम जिह, राज सभा कौ रूप ॥ ४ ॥

× × ×

तिन महाराज कुंवार की, उपज लखी कविराय।
अपने मन उछाह सौं, भाषा करी बनाय ॥ ११ ॥

× × ×

अंत—

अथ कवि वर्णन—

बीकानेर वासी विसद, धर्म कथा जिह धाम।
स्वेताम्बर लेखक सरस, जोसी जिनकी नाम ॥ ७२ ॥
अधिपति भूप अनूप जिहि, तिनसों करि सुभ भाय।
दीय दुसाली करि करै, कह्यो जु जोसीराय ॥ ७३ ॥
जिनि वह जोसीराय सुत, जांनहु जोगीदास।
संस्कृत भाषा भनि सुनत, भौ भारती प्रकाश ॥ ७४ ॥
जहां महाराज सुजांन जय, वरसलपुर लिय आंन।
छन्द प्रवन्ध कवित करि, रासौ कह्यौ वखांन ॥ ७५ ॥
श्री महाराज सुजान जय, धरम लरक मन आंन।
वर्षासन संकल्प सौ, दीय सांसण करि दान ॥ ७६ ॥
व्यतीपात के पर्व विच, परवानो पुनि कीन।
छाप आपनी आप करी, दास कविनि कों दीन ॥ ७७ ॥

सब गुन जांन सुजांनसिंघ, सब रायनि के राय ।
कविराज सु करि कृपा, बहुरि दयो सिरपाय ॥ ७८ ॥
जिन महाराज सुजांन कै, जोरौं कुंवर सुजान ।
कलि में दाता कर्ण सो, सूरज तेज समांन ॥ ७९ ॥
जिनकै नामै ग्रन्थ यहु, कर्यो दास कवि जान ।
राज कुवर की रीझ को, अब कवि करै बखान ॥ ८० ॥

अंत—

नयन२ रुद्र६ सागर७ अवनि१. ऊजल आश्विन मास ।
दसम द्यौस कवि दास कहि, पूरन भयो प्रकाश ॥

इति श्रीमन्महाराज कुंवार जोरावरसिंह विरचितायां वैद्यक सारे । प्रथम पुरुष मर्दी उपाय + + + अस्त्री कष्टी छूटे नाल परावर्त्ति वर्ननं नाम सप्तमो अध्यायः । ७ शुभं भवतु । कल्याण मस्तु ॥

लेखन—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ३९, पंक्ति १०, अक्षर ३२, साईज ९ × ५

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(१८) वैद्य विनोद (सारंगधर भाषा) । पद्य २५२५, । रामचन्द्र । सं० १७ ७६ वै० शु० १५ । मरोट

आदि—

श्री सुखदायक सलहीयै, ज्योति रूप जगदीस ।
सकत करी सोभइ सदा, श्री भगवत निशदीस ॥ १ ॥
हेमाचल ओपद करी, ज्यूं राजै भू मांह ।
युं उमापति राज है, प्रणम्यां आपद जांहि ॥ २ ॥
युगधर श्री जिनसिंहजी, खरतर गच्छ राजांन ।
शिष्य भए ताके भले, पदमकीर्ति परधान ॥ ३ ॥
ताके विनय वणारसी, पदमरंग गुणराज ।
रामचन्द्र गुर देव कौं, नीकैं प्रणयें आज ॥ ४ ॥
सारगधर अति कठिन है, बाल न पावे भेद ।
ता कारण भाषा कहूँ, उपजै ज्ञान उमेद ॥ ५ ॥
पहिली गुरु मुख सांभली, भाव भेद परिज्ञान ।
ता पीछै भाषा करी, मेटन सकल अज्ञान ॥ ६ ॥
पंडित भाषा देखि के, करिस्यै मोकुं हासि ।
सारगधर तो सुगम है, यौंहि कीयौ प्रकास ॥ ७ ॥

तेट पंडित बचन छे, ताको सुणि अधिकार ।
ज्यों तागौ मणि के विषे, छिद्र करे पैसार ॥ ८ ॥
ऐसी विधि मारग रच्यौ, मेरी मति अनुसार ।
कहूँ चिकित्सा सांभलौ, दोस न देहु लिगार ॥ ९ ॥
विविध चिकित्सा रोग की, करी सुगम हित आंणि ।
वैद्यविनोद इण नांम धरि, यांमैं कीयौ वखाण ॥ १० ॥

अंत—

पहिली कीनौ रामविनोद, व्याधि निकंदन करण प्रमोद ।
वैद्य विनोद इह दूजा कीया, सज्जन देखि खुसी होइ रहीया ॥ ६० ॥

× × ×

कविकुल वर्णन चौपाई ।

गरुआ खरतरगछि सिणगार, जांणै जाकुं सकल संसार
जिनके साहिब श्री जिनसिंघ, धरा मांहि हुए नरसिंघ ॥६४॥
दिल्लीपति श्री साहि सलेम, जाकुं मान्यों बहु धरि प्रेम ।
बहु विद्या जिनकुं दिखलाय, दयावांन कीने पतिसाहि ॥६५॥
शिष्य भले जिनके सुखकार, पद्मकीरति गुण के भडार ।
ताके शिष्य महा सुखदाई, सकल लोक मैं सोभ सवाई ।६६॥
वाचनाचार्य श्री पद्मरग, बहु विद्या जांने उछरंग ।
चिर जीवौ ध्रू रवि चद, देख्यां उपजै अतिहि आणद ।६७॥
रामचद अपणी मतिसार, वैद्य विनोद कीनो सुखकार ।
पर उपगार कारण कै लई, भाषा सुगम जो मइ करि दई ॥६८॥
रस[६] दग[२] सागर[७] शशि[१] भयौ, रित वसत वैसाख ।
पूरणिमा शुम तिथि भली, प्रन्थ समाप्ति इह भाख ।।६९॥
साहिन साहिपति राजतौ, औरगजेब नरिंद ।
तास राज मैं ए रच्यौ, भलौ ग्रन्थ सुखकद ॥७०॥
गछनायक है दीपता, श्री जिनचंद राजान ।
सोभागी सिर सेहरौ, वदैं सकल जिहांन ॥७१॥
मरोट कोट शुभ थान है, वसै लोक सुखकार ।
ए रचना तिहां किन रची, सवही कु हितकार ॥७२॥
पर उपगारी ग्रंथ है, सकल जीव सुखकार ।
थिर रहिज्यौ जां लगि सदा, तां लगि ध्रू इकतार ॥७३॥

इति श्री वणारस पद्मरग गणि शिष्य रामचंद विरचिते श्री वैद्यविनोदे नेत्र प्रसादन कल्प नामाध्याय । इति श्री वैद्य विनोद संपूर्ण । ग्रन्थ संख्या ३७०० ।

लेखनकाल—सं० १८१० फाल्गुण शुक्ला ६ सहजहानावाद। रत्नकलशभ्रातृ हितधर्मे लि.

प्रति—पत्र ९८

विशेष—प्रस्तुत ग्रन्थ तीन खण्डो में विभक्त है, जिनकी क्रमशः पद्य संख्या ४५६+१२९२+७७७=२५२५ है।

(दान सागर भंडार वं० नं० २५)

(१९) वैद्यहुलास (तिब्ब सहावी भाषा)। पद्य ४०४। मलूकचंद।

आदि—

अथ वैद्य हुलास—तिब सहावी भाषा लिख्यते।

दोहरा

निकु (ख ? क्ष) त देव चित्त धरन धर, रिद्धि सिद्धि दातार।
विमल बुद्धि देवे सदा, कुमति विनासन हार ॥ १ ॥
दूजे सरस्वती ध्याइयै, अरु सिमरो सारद माइ।
सुगम चिकित्सा चित्त रची, गुरु चरणे चितु लाइ ॥ २ ॥
श्रवणे प्रथमे सुनि लई, तिब सहावी आहि।
पाछे भाषा ही रची, गुनजन सुनिओ तांहि ॥ ३ ॥

× × ×

वैद्य हुलास जो नाम धरि, कीयो ग्रन्थ अमीकंद।
श्रावक धर्म्म कुल पक्ष(जन्म) को, ना (म) मलूक सु (सौं) चंद ॥ ५॥

अंत—

कुलांजण ककड़ासिंही, लौंग कुठ सु कचूर।
भीडगी जल थपत सो, महाकास हुइ दूर ॥४०४॥

इति श्री मलूकचंद विरचिते तिब्ब सहावी भाषा कृत नाम वैद्य हुलास समाप्तं १॥

लेखन—पं० प्र० श्री १०८ श्री चैनरूपजी पं० प्र० श्री १०५ श्री श्रीचंदजी ०० पनालालि लिखतं समाप्ता। संमत १८७१ मिती ज्येष्ठ वदि ४ अदितवार। श्री मोजगढ़ मध्ये।

प्रति—पत्र २६। पंक्ति १३। अक्षर ३०। साइज १०×४।

विशेष—इसकी एक अपूर्ण प्रति भी हमारे संग्रह में है। एक अन्य पूर्ण प्रति कृपाचंद्रसूरि ज्ञान भंडार में थी जिसमें इसके पत्र ५१८ थे।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२०) सप्त श्लोकी भाषा टीका। चैनसुख जती। सं० १८२० भाद्रपद कृष्णा १२ शनिवार।

आदि—प्रति अभी पास में न होने से नहीं दिया जा सकता।

अंत—संवत अठारे बीस के, मास भाद्रपद जाण।
कृष्णपक्ष तिथ द्वादशी, वार शनिश्चर मान॥ १॥
टीका करी सुधारि के, चैनसुख कविराय।
आज्ञा पाय महेस की, रतनचन्द के भाय॥ २॥

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी।

विशेष—टीका गद्य में है।

(यति विष्णुदयालजी, फतहपुर)

(२१) हरि प्रकाश—

आदि—

अथ हरि प्रकाशाभिधस्य वैद्यक ग्रन्थस्य व्रजभाषा प्रसादि शोधन मारण विधान।

रस उपरस, विष उपविषहि, सबै धातु उपधातु।
कहौ रतन, उपरतन औ, शोधनीक जे घात॥ १॥

अंत—

भल्ला तरु पुरु राम बहि, पंच लौंण त्रय क्षार।
सोधण कहें निर्घंट मैं, गुण मारण नहिं धार॥११॥

कही रसादिक विधि सबै ...।

प्रति—पत्र ९। पंक्ति १२। अक्षर ४५। साइज १०×७ अंगुल

(श्री जिनचारित्र सूरि संग्रह)

———

(ङ) रत्न परीक्षा विषयक ग्रन्थ

(१) पाहन परीक्षा । जान कवि । सं १६९१ ।

आदि—

करता सुमरण कीजिये, निश वासर यह तत्थु ।
निस्तारण तारण जगत, पोषण भरण समत्थु ॥
नबी महमद मुसथकार, चाहेत जिह्वा सीसू ।
ताकी चाहत आस सब, धर्मी पुनि पापीसू ॥
पाहन की परिख्या कहूँ, जैसे ग्रन्थ बखान ।
को मुहरो किन काम को, प्रगट कहत कवि जांन ॥
हिन्दी तुरको मति मथो, कथो खड बखानि ।
कहत जान जानत नहीं, सोउ लहत सुजानि ॥

अंत—

रखत कपूर जु अपने पास, कवल्ल थात दुख देत न तास ।
मन्द नारिवर कोयठ आदि, तिनको डेढि लागत है ताहि ।
पाहन परिख्या भाखि जान, जेसी विधि ग्रन्थनि परमानि ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—(१) दानसागर भंडार ।

(२) गुलाब कुमारी लायब्रेरी, कलकत्ता । गुटका नं० ३९

(२) पाहन परिक्षा (संग वर्णन)

आदि—

दोहा

किसन देव गुरु ध्यान कर, शिव सुत गौरि मनाय ।
संग जाति बर्नन करुं, पवृत ग्रांम होय ताय ॥ १ ॥

संग कहत कवी सग कुं, जुगल मिलण कहै सग ।
संग नाम पाषाण को, ताके अद्भुत रंग ॥ २ ॥

× × ×

संग गिलोला नाम है, अवलाखा रग तांहि ।
जहां तहां कहुं होत है, जात खार कै मांहि ॥ ८० ॥
नाम जराहि संग है, असमानो फोका ताहि ।
पूरब दखिण देस में, भरै घाव मिट जाय ॥ ८१ ॥
पचभदरा संग नाम है, लूण होत है तांह ।

(ग्रन्थ अपूर्ण)

विशेष—

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र २ । पंक्ति १६ । अक्षर ४२ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) रत्न परीक्षा । पद्य १३६ । कृष्णदास । स० १९०४ कार्तिक कृष्णा २

आदि—

कृष्णदेव गुरु ध्यान करि, सिव सुत गौरी मनाय ।
सग जाति वर्णन करौं, पढ़त ज्ञान होय ताहि ॥ १ ॥

अंत—

चन्द्र चाप मुनि वेद ही, सम्वत उरजु जु मास ।
कृष्ण पक्ष तिथि दूज ही, भूसुर कृष्ण जु दास ॥
भूसुर कृष्ण जु दास की, मन सुख नाम हैं ।
आया बीकानेर ग्राम, तोसाम हैं ॥ १३२ ॥
कृती करी यह ताहि, मित्र सुन लीजिये ।
छंद भग कहि होय, सुद्ध कर दीजिये ॥ १३३ ॥
जोहरी कृष्ण जु चंद ही, श्रावग कुल हि निवास ।
विक्रमपुर का वासिन, पुनि दिल्ली में वास ॥ १३४ ॥
जाति बोथरा नाम हैं, सुनो सयन दे ताय ।
ताही पढ़न के कारणे, मैं भाषा रची बनाय ॥ १३५ ॥
रत्न परिच्छा ग्रन्थ ही, पढ़ै सुने जो कोय ।
रत्न परीक्षा मुनि करे, रत्न सरीखा होय ॥
रत्न सरीखा होय, मान नहीं कीजिये ।
दया धर्म के बीच, मीत चित दीजिये ।

कहिये वचन विचारि, कपट तजि दीजिये।
भज कमला-पति चरण, सुरग-सुख लीजिये ॥ १२६ ॥

इति रत्नपरीक्षा ग्रन्थ।

लेखनकाल—संमत् १९०४ कातिक वदि ९ लि० महात्मा हरखचंद विक्रमपुर मध्ये।

प्रति—गुटकाकार नं० ३९

(बृहद् ज्ञानभंडार)

(४) रत्न-परीक्षा। तत्व कुमार। सं० १८४५ श्रावण कृष्णा १०

आदि—

आदि पुरख आदीसरु, आदिराय आदेय।
परमातम परमेसरु, नमो नमो नाभेय ॥ १ ॥

अंत—

श्रावण वदि दसमी दिनै, संवत अठार पैंताल।
सोमवार साचो सुखद, ग्रन्थ रच्यो सुविशाल।
खरतर गच्छ जाणे खलक, मोटिम वडे मंडाण ॥ ३ ॥
सागरचद सूरीस की, ता मधि साखा माण ॥ ४ ॥
ता शाखा में दीपते, महोपाध्याय जगीस।
आगम अरथ भडार है, पदमकुशल गणिश ॥ ५ ॥
प्रथम शिष्य तिनके कहूँ, वाचक के पद धार।
दर्शनलाभ गणि कहें, ताहि शिष्य सुविचार ॥ ६ ॥
पं० संज्ञा धारक प्रवर, तत्वकुमार सुजाण।
ग्रन्थ रच्यौ बहु हेत धर, दिन दिन अधिक बखाण ॥ ७ ॥

लेखनकाल—सं० १८४७

विशेष—बंग देश के राजगंज के चंडालिया आसकरण के लिये रचित।

प्रति—(१) प्रतिलिपि—अभयजन ग्रन्थालय।
(२) गुटकाकार—वृद्धिचंद्रजी यति संग्रह जेसलमेर।
(३) मुनि कांतिसागरजी साहित्यालंकार।

(२) रत्न परीक्षा। पद्य ५७०। रत्नशेखर। सं० १७६१ मार्गशीर्ष शुक्ला ५ गुरुवार। सूरत। शंकर के लिये।

आदि—

ऊंकार अनेक गुण, सिद्ध रूप परगास।
पांचु पद यामैं प्रगट, सुमिन पूरन आस ॥ १ ॥

अलख रूप यामें बसे, अनहद नाद अनूप ।
ब्रह्मरंध्र आसन सजे, रच्यौ अनादि सरूप ॥ २ ॥
सुमिरन याको साधिकें, रचिहु ग्रन्थ मति आनि ।
रत्न परीक्षा देखि कै, भाषा करहु बखानि ॥ ३ ॥
आन कवीसर के किए, संस्कृती सब ग्रन्थ ।
तातें मो मन में भई, भाषा रस गुन ग्रथ ॥ ४ ॥

सोरठा

भाषा रस को मूल, भाषा सब को बोध कर ।
तातें हम अनुकूल, भाषा कारन मन करयौ ॥ ६ ॥
सूरति गुन मूरति जिहां, वसत लोग धन आढ ।
ताहि विलोक कुवेर कत, मान धरत मनि गाढ ॥ ७ ॥
तहाँ वसत दातार मनि, गुनी धनी सुचिसील ।
भाग्यवंत वसुरन चतुर, भीम साहि लछि लील ॥ ८ ॥
शंकर शकर तास सुत, कुल मडन जस जास ।
ताहि विलोक विचछन ही, होवत हीये प्रकास ॥ ९ ॥
श्री श्रीवंश उधोत कर, धरमवंत धुरि धीर ।
सकल साह सिरदार वर, भजन दारिद नीर ॥१०॥
ताकी इच्छा इह भई, रतन सबन तै सार ।
या की भाषा करि पढ़ै, गढ़ै हीयन दिढ हार ॥११॥
ताकी रुचि सुचि साधकें, रचिहुं चित्त धरि चुप ।
मन वच क्रम मग पाइ वर, मनि जिन आनहु कोप ॥१२॥
वाचक रत्न प्रकास कर, रत्न परिच्छा भेद ।
कहत रत्न व्यवहार इह, मनसौं धरयो उमेद ॥१३॥
सवत सत्तरह सै अधिक, साठि एक करि भौंन ।
अगहन सुदि पंचम दिने, गुरु मुख लहि गुरु भौंन ॥१४॥
ऋषि सबै कर जोरि कै, मुनि अगस्ति ढिग आइ ।
पूछन रत्न विचार सब, विधि सौं प्रणमी पाय ॥१५॥

अंत—

छप्पय

विद्या विनय विवेक विभौ धानी विधि ग्याता ।
जानत सकल विचार सार शास्त्रन रस श्रोता ।
भीमसाहि कुलभान साहि शंकर शुभ लछन ।
पढत गुनत दिन रयन विविध गुन जानि विचछन ।
कुलदीपक जीपक अरपि भरीया लछि भडार जिहि ।
दोहि रत्न व्यवहार रस इह प्रारथना कीन तिहि ॥७७॥

दोहा

ता कारन कीनो अलप ग्रन्थ जु मो मति मानि ।
सज्जन सुनि सुध कीजीयउ, जहाँ घट मात्रा जानि ॥७८॥
अंचल गछपति श्री अमर, सागर सूरि सुजान ।
ताके पछि वाचक रतन, शेखर इमि अभिधान ॥७९॥
तिन कीनी भाषा सरस, पढ़त होत बहु मान ।
प्रथम लेख सुंदर लिख्यौ, विवुध कपूर सग्यान ॥८०॥
रवि शशि मंडल मेरु महि, जो लौं हुअ आकाश ।
पढ़ै सौ तौ लु थिर रहै, लीला लछि विलास ॥८१॥

इति श्री वाचक रत्नशेखर विरचिते रत्नव्यवहारसारे श्रीमच्छ्रीशंकरदास प्रिये मणिव्यवहारो नामाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

इति रत्न परीक्षा ग्रन्थ संपूर्णमिदं ॥

प्रतिपरिचय-(१) पत्र ३२ । पंक्ति १३ । अक्षर २५ से ४५ तक । साइज ११×५ ।
(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) अन्यप्रति—(वृहद् ज्ञान भंडार)

विशेष—वर्गनाम व पद्यसंख्या—१ वज्र पद्य १०५, मौक्तिक १२९, माणिक्य ९०, नीलमणि ४३, मरकत मणि ३३, उपरत्न ४७, नानोरत्न १८, माणिक्य ८१, प्रारंभिक १४ । कुल पद्य संख्या ५७० ।

(६) रत्न परीक्षा । पद्य ७० । रामचन्द्र ।

आदि—

प्रथमहि सुमर गनेश को, जातैं वाधे बुद्ध ।
ता पीछे रचना रचौ, रतन परिच्छा सुध ॥ १ ॥
रत्न दीपका ग्रन्थ में, रतन परिच्छा जानि ।
रामचन्द्र सौ समझि कै, भाषा करनो आनि ॥ २ ॥

अंत—

सवैया

मधुकर परीक्षा—निसा मुख ससी बुध गाइहू को काचौं लेहु,
ताके विच मनिह कों मेलिह निसा ठानिये ।
भा (तु ठ) दे देखत ही दुद्ध लाल रंग होत,
तातैं जानों सद्गुन सौं शुद्ध जीत जानिये ।

काल रंग विष हरे पीले पित वाय नसै,
पीतढयौ सो पेट सुलंनिलोपित दांनिये।
नीर पय जैसो य सोई राज मांन देत,
इहै वीध ननि के गुननि पहिचानिये।

इति रत्नपरीक्षा संपूर्ण।

लेखन काल—सं० १९२७ रा मिति आसु वदि १३ शनिवारे। शुभंभूयात्।

प्रति—पत्र ११। पंक्ति १३। अक्षर २५ से ३०।

(दानसागर भंडार व० नं० २५)

(च) संगीत-ग्रंथ

(१) रागमाला। पद्य ३८४। उस्तत। सं० १७५८ मगसर सुदी १३। भेहरा।

आदि—

भरथनाद ग्रंथ ताकी सांख (१) 'नादग्राम स्वरापदा।' आदि श्लोक। सर्व संगीत विधि

भाद नाद ध्यावै गुणगराम को मरम पावै सातो सुर सगम पधन वृसंत है।
चित बीच लै लागै गम कामै जोत जागै मृछंना अ क ताल बरग अनंत है।
आलत्या उघट किलक तानि निरत हमै राग रागनी सरूप वूझमै अनंत है।
इती भेद जानै सो सनि पिहछानै जोग सोई राग मह जान सोई कलावंत है॥ २॥

नाद वर्णण—

दोहा

एक आप हर रुप है, अनहद अगम अतोल।
लख चौरासी मै बन्यो, जोन अनूपम बोल॥ ३॥
बोलन मैं अरु पठन मै, राग कला मै सोय।
जोग सवन मै नाद है, बिना नाद नहि कोइ॥ ४॥

× × ×

अंत—

जो कछु देख्यो भरथ मै, कीनो योग विचार।
जो कुछ चूक परी कहूँ, सुरजन लेहू सुधार॥ ७६॥
नगर भेहरो वसत है, नदी सरस्वती कूल।
च्यार वर्ण चारौं सुखी, धर्म कर्म को मूल॥ ७७॥
उत्तर दिसि पछिम हित, अमर कुंड तट धन्य।
षट रस भोजन सोज जिह, तिनि की सैंभ्रमारम्य॥ ७८॥

प्रति—(१) पत्र ३। पंक्ति २७। अक्षर १८। साईज ४।×७।
(२) गुटकाकार प्रति में गाथा ५६ पीछे लिखते-लिखते छोड़ दिया है।
(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) राग माला। पद्य ९०। सं० १७४६ वि०।

आदि—

अथ गान कतुहल भाषायां राग संयोग॰ ॥ कानरठ ॥
शुद्ध कानरठ आदि दे, भेद कानरे पंच।
कहु तिम तैं संगीत कै, गुन जन मानस संच ॥ १ ॥
प्रथम कहत हों गाइ कै, शुद्ध कानरठ एक।
भेद चार के गाईयइ, ताको सुनहू विवेक ॥ २ ॥
वागेसरी—कारठ इहाँ धनासरी दोउ मिलि अभिराम।
एकै सुर करि गाइये वागेसरी सुनाम ॥ ३ ॥

अंत—

स्वर साधारण काकली श्रुत संगीति निवेद।
बिनु स्वर कैहू न समझीए विस्तर तान सुभेद ॥ ९० ॥

सर्व गाथा सलो (क) १०४। इतिरागमाला सम्पूर्ण।

लेखन—संवत् १७४६ वर्षे माह वदि कृष्ण पक्षे तिथि इग्या (र) रस दे (दि) न बोधवारे पंडिते रामचन्द गणि लीपीकृतं भटनेर मध्ये श्री रसते सोभ भवतो। श्री छ।
प्रति—पत्रा २। पंक्ति २०। अक्षर ५०। साईज १०×४।।
(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) रागमाला

आदि—

चले कामनी कंत के, गृह सुर अरु सब मेव।
रहनि! रुप लक्षन कहों करो कृपा गुरु देव ॥ १ ॥

भैरव राग लछनं

सोरठा

धरे रुद्र को भेष, तीनि नैन माथे जटा।
भालचंद्र की रेख, भैरव को लछन सरस ॥ २ ॥

अन्त—

देसकार लछन—

नैन कमल मुख चंद, कुछ कठोर कंचन बरन।
हरति नाह दुख दंद, देसकार सुकुमार तन।

इति षट राग तीस रागिनी समेत समापतं ।
लेखनकाल—१९ वीं शती ।
प्रति—पत्र १ । लम्बी पंक्ति ४५+४३ । अक्षर १७ । साईज ४॥।×१६ ।
(अभय जैन ग्रन्थालय)

(६) रागमाला

आदि—

भैरुं शिव मुख तैं भयो, धनी सुगति सुर सोय ।
सरद प्रात ही गाइये, जाति सु भडो होय ॥ १ ॥

मोदक छन्द

धौवत सुर गृह ताकौ जानौ, शिव मूरति संगीत बखानौ ।
कंकन उरग और शशि भाल, सुर सुरि जटा गरै रुड माल ।
सेत वसन नैन फुनि तीन, सिद्धि सरुप अरु महा प्रवीन ॥ २ ॥

सोरठो

कहो भैरवी नारि, वैराडी मधु मधुधुनी ।
सैंधवि तेहु विचारि, बगाली हू जानियौ ॥ ३ ॥

विशेष—प्रथम पत्र ही उपलब्ध है । ग्रन्थ अधूरा ही प्राप्त हुआ है ।
लेखनकाल—१९ वीं शती ।
प्रति—पत्र १ (एक तरफ) । पंक्ति १३ । अक्षर ४८ । साईज १०×४॥ ।
(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) रागमाला । दोहा ३६ ।

आदि—

अथ रागमाला दूहा

स्याम वरन तन दुख हरन सब रागन को राइ ।
चवर ढुरै मरदन करैं, वनिता भैरों भाइ ॥ १ ॥
पुहप माल गल छाजि है, राग करत दै ताल ।
धाम फटक सरपो तरंग भाव भैरवी वाल ॥ २ ॥

अन्त—

वैंनी लावी स्याम वहु, वगाला रग मेत ।
राग रागनी तीस षट, सुनि राइ कर हेत ॥ ३६ ॥

लेखनकाल—१८ वीं शती।

प्रति—पत्र २। पंक्ति २७। अक्षर २०। साइज ४।×७।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) रागमाला। पद्य ८६।

आदि—

रसनिधि गुननिधि रूपनिधि राग रंग निधि श्याम।
श्री नट नारायण प्रगट, ताकों करूं प्रणाम॥ १॥
गुण निधि गंगादास, हरिजन साह कल्याण सुव।
हरिजस केलि निवास, रागमाला ता हित गुही॥ ५॥

अन्त—

मधु माधुवा मिलि गोर तनु, धूमल हार शृंगार।
भस्म पुण्ड्र अति अरन तनु सबु भूषण उदार॥ ८६॥

प्रति—पत्र २। लक्ष्मीप्रभु लिखित।

(श्री सीताराम शर्म्मा, राजगढ़)

(८) राग मंजरी—। शाकद्वीपी भूधर मिश्र। सं० १७३० माघ वदि ९।

आदि—

श्याम घन स्याम सुख आनन्द को धाम, जाको,
राधावर नाम काम मोहन बखानिऐ।
मन अभिराम मुरली को सुर ग्राम धरैं,
याम याम यम यम ध्यान उर आनिऐ।
लसे वनमाला दाम वाम प्यारी गोपीवाम,
मुनि गावैं जाको साम काम रूप जानिऐ।
भूधर नेवाज्यो राम वस्यो आए नन्द ग्राम,
तिहू लोक ऐक धाम साची जिअ मानिऐ॥ १॥

दोहा

रध्र[0] राम[3] मुनि[7] चन्द्रमा[1], नोमी माघ की स्याम।
दछिन गढ़ नादेरि लगु, उपज्यो मन यह काम॥ २॥
सूबा नाम विहार है, गढ़ मुगेरि निज धाम।
आजम साह पयान में, देख्यो दन्तिन ग्राम॥ ३॥
साक द्वीपी भूमिसुर, मिश्र भार्गव राम।
ता सुत भूधर यहो कही, राग मंजरी नाम॥ ४॥

छे दृपंन . संगीत को, मतो कहे कछु भेद।
राग रागिनी समय अरु, लछन पचम वेद ॥ ८ ॥

× × ×

इति सोमेश्वर मते राग रागिनी प्रथम प्रकास। अथ हनुमन्मते।

अंत—

सत्रह से चालीस में, दूज उजरी पाख।
मीरा तीर लिखी यहे, कटक स्वार तहा लाख ॥ ३ ॥
आजम साह महाबली, आए उन्हके साथ।
भूधर करि यह पुस्तकी, दीन्ही गिरिश के हाथ ॥ ४ ॥

इति श्री मिश्र भूधर वैद्य राज पंडित सकल विद्या विनोद शाकद्वीपि द्विजवर विरचित रागमंजरी पुस्तक संपूर्ण।

लेखनकाल—सं० १७४२ काती वदी १२ बुध बीजापुर मध्ये लिखितं मो० विद्यापति तत्पुत्र हरिरामेण।

प्रति—पत्र २७। पंक्ति ८। अक्षर ३२।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(१०) संगीत मालिका—महमद साहि।

आदि—

प्रारंभ के १० पत्र नहीं होने से नही दिया जा सका।

मध्य—

एक पताक त्रिपताक कहि पद्म कोप पुनि होए।
अलि पद्म कह शास्त्र पुनि, संस पक्ष सुनि लोए ॥२४१॥

गद्य

पहिले ही पाउको फिराई स्वस्तिक वांधियहि हाथै। (फिराई स्वस्तिक वांधयहि हाथे) फिराइ स्वस्तिक कीजहि। पीछे हाथ को स्वास्तिक अरु पाऊन को स्वस्तिक विलगाई फिरावत वाएं दाहिनै ले जइये पीछे हाथ पाउ वेर हूँ ऊँचे नीचे कीजहि तिहि पीछे उद्दत अगिहा उरो मंडर ए तीनिऊँ करण कीजहि तव आक्षिरे चित नाम अंगहार होई।

अंत—

इति कल्पनृत्यं। इति श्री पेराज साहा वंशान्वये मानिनी मनोहर कामिनी काम पूरन विरहनी विरह भंजन सदा वसतानंद कंदारि गज मस्तकाकुंश श्री

मत्तत्तार साह्यात्मज महमदसाहि विरचितायां संगीतमालिकायां नृत्याध्याय समाप्त। शुभं भवतु ।

लेखन काल—१९ वीं ।

प्रति—पत्र ११ से ५३ । पंक्ति २० । अक्षर १६ । (मध्य के भी कई पत्र नहीं) (अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(११) हीय हुलास । सटीक । पद्य ६७ ।

आदि—

अथ राग रूपमाला लिख्यते ।

दोहा—

प्रथमहि ताको सुमिरियै, जिणे दीनौ गुरु ग्यान ।
ज्ञानी गुन गावें सदा, ध्यानी धरे जु ध्यान ॥ १ ॥
अंबर थम्बौ थभ बिन, धरती अधर धराय ।
मनुष्य रूप हुय अवतर्यौ, देखत कलि कौ भाव ॥ २ ॥
हीयें हुलास या ग्रन्थ को, राख्यो नाम विचार ।
यामें सिगरे रागन के, रचेय रूप सिंगार ॥ ३ ॥

अंत—

महलार—

बीन गहे गावत वहुत, रोवत है जलधार ।
तन दुर्बल विरह दह्यौ, विरहिन नाम मल्हार ॥ ६६ ॥
सेझ बिछाई कमल दल, लेट रही मन मार ।
लेत उसास निसियरि तन, तनक वियोगिनी नार ॥ ६७ ॥

इति हियहुलास ग्रन्थ रूपमाला संपूर्ण ।

अथ रागमाला की टीका लिख्यते या को विचार याही मे याकी मूर्छना याही में तीन ग्राम सप्त स्वर याहि मे ग्राम १ ग्राम २ ग्राम ३ । दूहा—

अन्त—

रागिनी पांचमी केदारा वखत घरी २ भारज्या २ भारज्या १ मारु घखत घटी २

इति रागमाला राग ६ रागिनी ३० भारज्या ४८ सर्व मिलि ८४ नाम संपूर्ण ।

[इसके बाद रागिनी-उत्पत्ति दिवस-रागिनी, रात्रि-रागिनी आदि के कई पद्य है ।]

इति छतीस राग रागिनी नाम संपूर्ण ।

लेखन काल—१९ वीं शती ।

प्रति—पत्र ४ । पंक्ति १७ । अक्षर ५२ । साईज १०॥×५ ।

विशेष—टीका-टिप्पणी रूप (संक्षिप्त स्पष्टीकरण मात्र) है ।

(महिमा भक्ति भंडार)

(छ) नाटक ग्रन्थ

(१) प्रबोधचन्द्रोदय नाटक । हरि वल्लभ ।

आदि—

श्री राधा वल्लभ पद कमल मधु के भाइ ।
हित हरि वंश बड़ो रसिक, रह्यो तिननि लपटाइ ॥ १ ॥
ताके चरननि वंदि के, वन चन्दहि सिर नाइ ।
रचना पोथी की करौं, जाते करैं सहाइ ॥ २ ॥
कियो प्रबोधचन्द्रोदय जु, नाटक दीनो तोहि ।
कृष्ण मिश्र रचि बहुत विधि, वहै दिखाउ सुजोहि ॥१६॥
कीरति वर्मा की सभा, तिनकै चित यह चाउ ।
सो नाटकु नायक अवहि, इनकौं सजि दिखराउ ॥१७॥
यहे बात गोपाल जु, मोसौं कही बनाइ ।
तातैं अब घर जाइ के, आनो जुवति बुलाइ ॥१०॥

अन्त—

हरि वल्लभ भाषारच्यो चित में भयो निसंक ।
श्रीप्रबोध-चन्द्रोदयहि छठयौं बीत्यो अंक ॥

समाप्तोयं ग्रन्थः ।

लेखन काल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र १४+१९+१५+१२+१२+१५ । पंक्ति ११ । अक्षर ३२ ।
साईज १०×५ ।

विशेष—राजा कीर्तिवर्मा तथा गोपाल का प्रारंभ में उल्लेख मात्र है ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(२) प्रवोधचन्द्रोदय नाटक

आदि—अथ प्रवोधचन्द्र नाटक लिख्यते ।

कवित्त

जैसे मृग तृष्णा विषै जल की प्रतीति होत,
रूपै की प्रतीति जैसें सीप विषै होत है ।
जैसे जाके विनु जाने जगत सत जानियत—
विश्व सव तोत है ।
ऐसें जो अखंड ज्ञान पूर्ण प्रकाशवान,
नित्त समस्त सुध आनन्द उद्योत है ।
ताही परमातमा की करत उपासना हैं,
निसन्देह जान्यो याकी चेतनाहीं जोत है ॥१॥

ऐसे मंगल पाठ करी सूत्रधार अपनी नटी वुलाई यहा आज्ञा दीज । सूत्रधार वोल्यो ।

अन्त—

विशेष—प्रति के केवल तीन पत्र होने से अंत का भाग नहीं मिला, तथा कर्ता का नाम भी ज्ञात नहीं हो सका ।

प्रति—पत्र ३ । अपूर्ण । पंक्ति २४ । अक्षर ६२ । साईज ९।" × ४।" ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३) हनुमान नाटक । जगजीवन ।

आदि—

श्रीमज्जगजीवन कवे आत्म विनोदार्थं हनुमान्नाम्ना नाटक पर(?)यतुं समुद्यतः ।

कहे प्रिया कविराज कहि रामायन की बात ।
नाटक श्री हनुमान कौ नचौ अंक द्वे सात ॥

अन्त—

सातवें अंक का समाप्ति वाक्य—

उठि जानुकि रन स्रवन दे दसआनन गत जोति ।
दुदभिरि मृभेदग धुनि ! अंत सख धुनि होति ॥ २९ ॥

इति श्री जगज्जीवन कृते महानाटके रावननिदहनो नाम सप्तम अंकः ।

इसके बाद आठवें अंक के ५४ वें पद्य तक है । बाद के पत्रे नहीं हैं ।

प्रति—पृष्ठ ७२ । पंक्ति १८ । अक्षर १२ । साईज ६" × ९।।" ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(ज) काव्य ग्रन्थ

(१) कथा

(१) अंवड चरित्र। हिन्दी गद्य । क्षमाकल्याण।

आदि—

वर्द्धमान भगवन्त के पावन पद अरविंद।
आतम चित्त अंतरधरी प्रणमी नवपद वृंद ॥ १ ॥
अंवड नामे भवनिपति चावो चौथे काल।
श्रावक वीर जिनेश को ताको चरित्र विशाल ॥ २ ॥
श्री मुनि रत्न सुरिन्द कृत संस्कृत सय संबंध।
वर्तमान अवलोक के विरचुं भाषा बन्ध ॥ ३ ॥

गद्य—

धर्म सै सर्व लक्ष्मी संपजै धर्म सै प्रशंसनीक रूप संपजै, धर्म सै सोभाग अरु वडौ आउखौ जीव पावै बहुत क्या कहें धर्म सें सब मनो वंछित मिले जैसे अंवड क्षत्रिय के धर्म के प्रसादे सर्व संपदा मिली आपदा मिटी उस अंवड का दृष्टान्त दिखावै है।

अन्त—

वाचक अमृतधर्म वर सीस क्षमाकल्याण,
पालीताना पुरवरे चरित रच्यौ यह जान।
सय अठारा चौपन समै सुदि आषाढ सुमास।
तृतीय तिथि कुंजवार युत सिद्ध योग सुप्रकास ॥
आर्या उत्तम धर्मरुचि पुत्री सम सुविनीत।
नाम खुश्याल थी निमित्त, यही कीनौ धरि चित्त ॥ ३ ॥

लेखन काल—१९ वीं शताव्दी।
प्रति—पत्र ३७। (महिमा भक्ति भंडार)

(२) कथामोहिनी। पद्य १२२। जान कवि। सं० १६९४ अगहन शुक्ला ४।

आदि—

आदि अगोचर अलख प्रभु निराकार करतार।
दैनहार ज्यौ सकल तन, रचनहार संसार ॥ १ ॥

रवि ससि उडिन अकास सव पल मै करै प्रकास ।
देत हुलास उदास कौ पुजवन आस निरास ॥ २ ॥
नाम महम्मद लीजियें, तन मन हे आनंद ।
पूजैं मन की इच्छ सव, दूर होहि दुख दंद ॥ ३ ॥
अवहि वखानों जानि कहि, सुलप कथा चितु लाहि ।
पढत न हारे रसन जिह लिखत न कर अरसाइ ॥ ४ ॥

अन्त—

जौ लो मोहन मोहनी जीये इह संसार ।
एक अग सगही रहे रचक घटयो न प्यार ॥२११॥
सोरह से चोरानवै ही अगहन सुद चार ।
पहर तीन में यह कथा, कीनी जान विचार ॥१२२॥

इति कथामोहनी कवि जान कृत संपूर्ण ।
लेखन काल—सं० १६३० वि० ।
प्रति—गुटकाकार पत्र ८ । पंक्ति १८ । अक्षर १७ । साईज ६×९॥ ।
इस प्रति में कवि जान कृत सतवंती (१६७८) भी है ।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(३) कुतवदीन साहिजादैरी वारता—

आदि—

अथ कुतवदीन साहिजादैरी वारता लिख्यते ।

वडा एक पातिस्याह । जिसका नाम सवल स्याह । गढ मांडव थांणा । जिसकै साहिजादा दाना । मौजे दरियावतीर । जिसकै सहर मैं वसै दान समद फकीर । जिसकी औरत का नाम मौजम खातू । सदावरत का नेम चलातू । जो ही फकीर आवै । तिसकुं खांणा खुलावै । एक रोज इक दीवान फकीर आया । दावल दांन घरां न पाया ।

अन्त—

वेटे वाप विसराया, भाई वीसारेह ।
सूरा पुरां गलड्डी मांगण चीतारेह ॥१०७॥

वात—

ऐसा कुतवदीन साहिजादा दिल्ली वीच पिरोसाह पातस्याह का साहजादा भया दावलदान फकीर की लडकी साहिवा से आसिक रह्या वहुत दिनां प्रीत लगी । दुख पीड आपदा सहु भागी । पीरोसाहि का तखत पाया साहजादा साह कहाया । यह सिफत कुतवदीन साहिजादे की पढै वहुत ही वजत सुख सै वढै यह वात गाह जुग से रहि । ढढणी ने जोड कर कही ।

इति श्री दूतका ढढणी कै प्रसंग कुतवदीन सहिजादै की वात संपूर्ण।

लेखन काल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र २४ से ३०। पंक्ति ३२। अक्षर २४। साईज ६।×८।
(अभयजैन ग्रन्थालय)

विशेष—१०७ पद्य दोहे-सोरठे हैं, बाकी गद्य है, इस वार्ता की प्रचीन प्रति १७ वीं शताब्दी की भी उपलब्ध है, पर उसका पाठ इससे भिन्न प्रकार का है।

(४) चंद हंस कथा। टीकम। सं० १७०८ जेठ वदि ८ रवि।

आदि—

अथ चन्द्रहंश कथा लिखिते।

दोहा

ऊंकार अपार गुण, सबही आर आदि।
सिधि होय याकुं जपे, अक्षर एह अनादि॥ १॥
जिण वांणी मुख उचरै, ऊं सबद सरुप।
पिंडित होय मति बीसरो, अखि (क्ष)र एह अनूप॥ २॥

अंत—

ऐसी जुगति खिचीयो भार, जाणे ताकुं सब संसार।
संवत आठ सतरा से वर्ष, करत चोपइ हुआ हरिष॥ ४३८॥
पढित होय हसो मति कोय, बुरा भला अखिर जो होय।
जेठ मास अर पखि अधियार, जाणो दोइज अर रविवार॥ ४३९॥
टीकम तणी वीनती एह, लघु दीरघ संवारि जु लेह।
सुणत कथा होय जु पापि, हुं तिनका चरणां कु दास। ४४०॥
मन धरि कथा एहै जो कहै, चद्रहश जेम सुख लहै।
रोग विजोग न व्यापे कोय, मन धीर कथा सुणे जो कोय॥ ४४१॥

इति श्री चंद्रहंश कथा संपूर्ण।

लेखनकाल—लिखितं रिषि केसाजी पापड़दा मध्ये संवत् १७६३ वर्ष मास काति वदि ११ सौमवार दिने कल्याणमस्तु।

प्रति—पत्र ३१। पंक्ति १४। अक्षर २५। साइज ८×६॥।

विशेष—भाषा राजस्थानी मिश्रित है। रचना साधारण है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) जम्बूचरित्र। चेतनविजय (ऋद्धिविजय शिष्य)। सं० १८५२ श्रावण सुदी २ रविवार। अजीमगंज।

आदि— प्रति प्राप्त न होने से नहीं दिया गया।

अंत—

वाचक पद धारक भए, ऋद्धिविजय गुरु देव।
तिनके शिष चेतनविजय, नहीं ज्ञान का भेद ॥ १७ ॥
श्री गुरु देव दया किया, उपजी मन में ज्ञान।
भाषा जंबू चरित की, रचना रची सुजान ॥ १८ ॥
सवत अठारे बाव (वा) न, श्रावण को है मास।
शुक्ल तीज रविवार को, पूरो ग्रन्थ विलास ॥ १९ ॥
बंग देश गंगा निकट, गज अजीम पवित्र।
श्री चिन्तामणि पासको, देवल रचा विचित्र ॥ २० ॥
सतरै शिखर सुहावनो, गुमटो च्यार सुचंग।
शोभै कळश सुवर्ण के, इकइ सरप अभंग ॥ २१ ॥
ऊपर चौमुख राजते, श्री सीमधर देव।
भाव भगति चित लायके, सब जन करते सेव ॥ २२ ॥

(जयचन्द्रजी भंडार)

(६) जम्बू स्वामी की कथा

आदि—

अथ जंबूस्वामी की कथा लिख्यते

एक समै श्री महावीर स्वामी राजगृही नगरै समवसर्या। राजा श्रेणिक वाणी सुणै छै। एता मह एक देवता आयो महाऋद्धवंत। श्री भगवंत सै पूछै स्वामी मेरी थिति केती है। भगवंतजी ने कहा सात दिन आऊखा तेरा है। देवता सुण कै आपणें स्थानक पहुँचा। तद श्रेणिक पूछै स्वामी ए देवता कौन है कहां उपजैगा। तद श्री भगवान कह्यो ए देवता जंबूस्वामी का जीव छै इला केवली होयगा।

अंत—

हे श्रेणिक एह जबुना पांच भवना दृष्टांत संक्षेपें जाणिवा। अनेरा ग्रन्थनि विषइ विस्तार प्रचुर घणो होसी। इहां सक्षेप छइ। ए जबुनु चरित्र सांभली ने सद्दहसी ते आराधक जीव कह्या। ए जंबूना अध्ययन ने विषै एकविंशमो उद्देसम।

इति श्री जंबूस्वामी की कथा सम्पूर्णम्।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ५७ से ७७। पंक्ति ११। अक्षर २७। साईज ८×५॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) दसकुमार प्रबन्ध । शिवराम पुरोहित । सं० १७५४ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ मंगलवार ।

आदि—

श्री मन्मेघाभिधानाय मत्प्रशास्त्रे नमाम्यहं ।
गणेशाय सरस्वत्यै कथा-बोधः प्रदीयतां ॥
दूहा —नाम लियै नव निधि सधै, बधैः ज्ञान गुन भेव ।
खल खडन मंडन सुरिधि, विघन विहंडन देव ॥ १ ॥
संकट परे सदा भजें, हरिहर ब्रह्म सुरेस ।
विघन हरन सब सुख करन, बदू बहैं गनेस ॥ २ ॥
मेघ नाम गुरु के चरण, शरण गहुं सुख दैन ।
कविता दाता भजन तैं, ध्यान धरे चित्त चैन ॥ ३ ॥

× × ×

९ वें पद से ६१ पद्य तक बीकानेर के राजाओं की ऐतिहासिक वंशावली एवं वर्णन है। उनमें से कुछ पद्य जो ग्रन्थ और ग्रन्थकर्ता के सम्बन्ध में है, नीचे दिये जाते हैं।

अथ श्रीमतां राठौराभिधानजातीनां महन्महीपालानां वंशवर्णनं ।

× × ×

धरा न भूप अनूप सम, सब विधि जाण सुजाण ।
दीन्हो कवि सिवराम कूं, सधुन वसन धन धान ॥ ५० ॥
वास वसायो नूप नृप, अपने दे सुभ धाम ।
वासी अहिपुर नगर को, प्रोहित कवि सिवराम ॥ ५१ ॥
सनि सनेह सिवराम सौं, मरुधरेस महा भूप ।
देख निदेस हुहै दयौ, अद्भुत कथा अनूप ॥ ५२ ॥
बुधि बल नीति सहास रस, सुनत सुखद श्रुति होइ ।
दस कुमार भाषा कथा, यथा विरुच रुचि होइ ॥ ५३ ॥

× × ×

बरस वेद[४] सर[५] सात[७] भू[१], सित पख अगहन मास ।
भगर वार त्रयोदसी, कथा जनम दिन जास । ६१ ॥

अन्त—

इति श्री मन्महाराजधिराज महा[राज] श्रीमदनूपसिंह नृपाज्ञया प्रोहित सिवराम विरचिते दसकुमारप्रबन्धे एकादस प्रभाव विश्रुतचरितम् संपूर्ण ।

श्लोक

श्रीमदनूपसिंहानामाज्ञया शर्म्मणे कथा ।
रचिता शिवरामेण शिवरामो व्यलीलिखत् ॥ १ ॥
अनूपसिंहनृपैः श्रवणोत्सुकैः प्रवचनेपि तथैव विचक्षणैः ।
दशकुमारकथा वितथा भवेन्नहि यथा तथा क्रियतां चिर ॥ २ ॥
यद्रूपं मदनो घनो गत मदो दृष्ट्वाभवत् साम्प्रतम् ।
यत्पादाब्जमवेक्ष्य कच्छपकुल नीरेगमल्लजिनम् ।
बुद्धिं यस्य कुशाग्रभागसदृशीं सेचाग्मद्गीष्पतिः
सोय श्रीमदनूपसिंह नृपति र्जीव्याच्चिरं भूतले ॥ ३ ॥
सुयशोनूपसिंहानाम् तेजो भूति सुखानि च ।
सन्तु भूपाधिपानां च दान विज्ञान-सालिनाम् ॥

शुभमस्तु श्रीमतां ।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र १७६ । पंक्ति १० । अक्षर १२ । साईज ११×५॥ ।

विशेष—दशकुमारचारित नामक संस्कृत ग्रंथ का भापा पद्यानुवाद ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(९) प्रेमविलास चौपई । जटमल । सं० १६९३ भाद्र सुदि ५ रविवार जलालपुर ।

आदि—

दोहा

प्रथम प्रणमि सरसती, गणपति गुण भण्डार ।
सुगुर चरण अंभोज नमि, करूं कथा विसतार ॥ १ ॥
पोतनपुर नामा नगर, इन्द्रपुरी अवतार ।
कोट नदी उत्तग गृह, वनघारी सुखकार ॥ २ ॥

अंत—

प्रेम विलास सु प्रेमलत, सांप सर (?) मवह्यो नेह ।
प्रीत खरी यह जानीये, दीनौं किनू न छेह ॥ ७ ॥

चौपाई

प्रेम लता की वरनी प्रीता, जटमल जुगत सकल रस रीता ।
सुमति सुरसती सद्‌गुरु दीनी, सब रस लता कथा मुहि कीनी ॥ ७६ ॥

सोरठा

सब रस लता सु नाउं, मधि सिंगार अरु प्रेम रस।
विरह अधिक फुनि ताम, सुनति अधिक सुख ऊपजै ॥ ७७ ॥

चौपाई

संवत सोलह सै त्रेयानु भाद्रमास सुकल पख जानु ।
पंचमि चौथ तिथैं संलगना दिन रविवार परम रस मगना ॥७८॥

दोहा

सिंध नदी कै कंठ पइ मेवासी चो फेर।
राजा बली पराक्रमी कोऊ न सक्के घेर ॥ ७९ ॥

चौपाई

पूरा कोट कटक फुनि पूरा, पर सिरदार गाढ का सूरा।
मसलत मन्त्र बहुत सु जाने, मिले खांन सुलताण पिछाने ॥८०॥

दोहा

सद्दा को सहिबाजखां बहरी सिर कलवत्र।
जानत नाही जेहलो, सब अचान कौ छत्र ॥८१॥

चौपाई

रईयत बहुत रहत सुराजी, मुसल्मान सुखा सनि माजी।
चोर जार देख्या न सुहावै, बहुत दिलासा लोक बसावै ॥८२॥

दोहा

बसै अडोल जलालपुर, राजा थिरु सहिबाज।
रईयत सकल बसै सुखी, जब लगि थिर तू राज ॥८३॥

चौपाई

तहाँ बसत जटमल लाहौरी, करनै कथा सुमति तसु दोरी।
नाहर बंश न कुछ सो जानै, जो सरसति कहै सो आनै ॥८४॥

सोरठा

चतुर पढो चित लाय, सभ रसलता कथा रसिक।
सुनत परम सुख दाय, श्रोता सुन इह श्रवण दे ॥८५॥

दोहा

सुनहि कथा दुर्जन सज्जन दुर्जन अवगुन लेह ।
सूकर पायस छाड के मुख घृष्टा कुं देहि ।।८६।।

इति श्री प्रेमविलास प्रेमलता की मवरस लता नाम कथा नाहर जटमल कृता संपूर्णा ।

लिपिकाल—संवत् १८०९ रा वर्ष मिती वैशाख वदी ७ दिने गुरु वा सरे श्री मरोट नगर मध्ये चतर्मासी कृते पं० प्र० श्री १०५ श्री सुखहेमजी गणि शिष्य सरूपचन्द्रेण लिपिचक्रे शुभं भवतु ।

प्रति—(१) पत्र ८ । पं० १६ । अक्षर ५४ । साईज १०।।×५ ।

प्रति—(२) पत्र ११ । पंक्ति १४ से १६ । अक्षर ३५ । साईज १०×४।।। ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(९) वहलिमां की वार्ता—

आदि—

हों बलिहारी ताजियां जिन्ह जाति कही ।
तुरीया खेटत ताटजमरक्षा सट मही ।। १ ।।
बहली म उपति जेथी काबिल गजनी ।
पहिली बहिली मसरि जिये पीछे टोट उमत्ति ।।

वात—

पांच पैगम्बर उरस से उतरे । वनवास के विषै तपस्या करते थे । सवा पांच मण भाग । पचास मण दूध का । गैब का पेला पक्के । चार पैगम्बर लैटे लैटे दो पहरे उठे ।

अन्त—

ये लखु असवार फोज ले करि काबा गजनी गया । सो वहाँ जाई पातस्याही करी । ये दोनों ही पातसाही जबर हुई । खूब अमल जमाया । बहोत वरस पातस्याही करी । पीछे बीसती कु गये । जदी पछे कहाणी तमाम हुई । ।

दोहा

राणी पला राणी सोर घनी राहिब भाई ।
वात वणाई ख्याती करी चारण घनी चितरग ।।
कोड़ी बरस रहसी वातड़ी कहसी चित माहे उमंग ।
साल १३३१ की हुआ बलीम पठाण ।
चारण को चित उमगीयो कही वात वखाण ।।

इती श्री बहलीमां की राहिब साहिब की वार्ता संपूर्ण हुवी ।

लेखन संवत्—१९०५ का मिती जेठ सुदी ६ वार बुधवार लिखते नगर सीकरी मांहि। राज महाराजाधिराज श्री रामप्रतापसिंघजी कौड़ी वरस करो ।

प्रति—(१) गुटकाकार। पत्र १२ से ५६ । पंक्ति १९ । अक्षर १२। साईज ७×९।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(१०) वुध सागर । जान सं० १६९५

आदि—

अथ वुधसागर ग्रन्थ लिख्यते ।

चौपाई

हीजै आदि अगोचर नाम, तो सब पूजै मनसा काम ।
अभिगति गति सुर असुर न जांनत, मांनस वपुरो कहा वखांनत ॥१॥
येक जीभ ताको कछु बस नां, हार्यो सेस सहस द्वै रसना ।
है अभिगति को जलधि अपार, ताको कोई न पैरन हार ।२॥
काहू वाको भेद न पायो, निगम अगम निगमै में पायो ।
अलख भेद में मन दोरावै, सो आपुन को निर्बुध पावै ॥३।

अन्त—

ये सु कथा तुम सौं कही सकल काहु इक ठाव ।
ताकौ ग्रंथ वनाइकैं धरि बुधिसागर नांव ॥चौ० ४०५॥
जब ग्रन्थ ही पढ़ि तुम सुख पावहु, तब मोको चित तें न भुलावहु ।
ज्यों ज्यों लाभ ग्रन्थ तें लहिये, मेरी सुरति कियेहि रहिये ।
बुधिसागर पर जो तुम चलिहौ नीके मान भरनि को मलिहौं ॥
बुधिसागर में जो मन धरिहै, तातैं कबहू चूक न परिहैं ॥२ ॥
दाव सलेंम तवहि सिर नायो, सो करिहो जो तुम फरमायो ।
विदा होय अपने घर आये, कवि पंडित तब निकट बुलाये ॥३॥
सब मिल दीनों ग्रन्थ बनाई, रीस बहुत दीनौं कछु राई ।
जग में उपज्यो ग्रंथ उजागर, माला रत्न नाव बुधिसागर ॥४॥
चल्यो ग्रन्थ उपरि करि भाइ तवहि भयो रांइन कौ राइ ।
पाछे जिते भये जगु राइ पढ्यो ग्रथ यह हितु चित लाइ ॥५॥

दोहा

सोरह सै पंच्यानुवै संवत हौ दिन मांन ।
अगहन सुदि तेरस हुती ग्रथ कियो कवि जान ॥

इति ग्रन्थ बुधिसागर सपूर्ण सम्प्त (माप्त)।

लेखन काल— अथ संवत् १७१६ मिती आसौज सुदी १४ वार सोमवार ता० ११ मास मुहरमु स० १०७० पोथी लिखाइत पठनार्थ फतहचन्द लिखतं भीख देवैं। श्रीमाल टाक गोत्र सुभं भवत। श्री

लिखीया वहु रहै, जे रखि जाने कोइ।
गलमल मीटी होइ॥

प्रति—पत्र १८३। पंक्ति १८। अक्षर २१। साईज ४॥।×८॥।

(अभय जैन पुस्तकालय)

विशेष—इस ग्रन्थ की अन्य एक प्रति दिल्ली के दिगंबर जैन ज्ञानभंडार मे है। उसमें अन्त की प्रशस्ति भिन्न प्रकार की है, अत. वह भी नीचे दी जाती है—

दोहा

हांसी ऐसी ठौर है, उत जो रोवती जाई।
इच्छा पूजे सुखित ह्वं हसत खिलत घर जाई॥

चौपाई

पातिसाह को करौ बखान, साहिजहां ढिलो सुलतान।
दुहु जगत में भयो कबूल, गह्यौ पथ विजसरा रसूल॥१॥
ऐसो दोनौ ग्यांन इलाह, दोनों जुग जीते पतिसाह।
इन के वडे जिते ह्वे गये, ते सब पातिसाह ही भये॥२॥
चिगज तिमर उमर बबर, वहुरि हिमायू साहि अक्बर।
पाछे जहांगीर सुलतान, ताके उपजे साहिजहान॥३॥
जहाँगीर कीनौ तप कौन, साहिजहाँ उपजै जिन भौन।
साहिजहाँ की सब जग आन, सप्त दीप पर ज्यों तप भान॥४॥
थहरत सप्त दीप के लोइ, ज्यों लगि पवन दीप की लोई।
रार्ना में नर हीरा नाई, राइ निरहीन राई राई॥५॥

दोहा

पातिसाह सौ नेकु वर, काहू कों न बसाथ।
डंड परै सेवा करें, राजा राहा राइ॥१॥
शास्त्र कियौ नव नव कथन मूल शास्त्र मर्याद।
बुद्धि वडाई पाइये जुगन रहै अपवाद॥२॥
कियौ शास्त्र कवि जान यह. साहजहाँ की भेट।
देस देस में विसतरयौ छानौ रह्यौ न नेट॥३॥
जो लौं तारो चन्द्र रवि, मेरु नदी जल राज।
ग्रन्थ येह तौ लौं रहे, स्वहित पर हित काज॥४॥

प्रभुताई या ग्रन्थ की, जानत चतुर सुजान।
खोर होइ सो देखि कै, दूरि करो सुग्यांन ॥ ५ ॥

श्री क्यामखानी न्यामत खां कृत ग्रन्थ बुधिसागर समाप्तं ।

सम्वत १८०४ वर्षे चेत्र द्वितीय सुदि ९ बुधिवारे पांडे हरिनारायण लिखापितं वाच (न) र्था। काष्टा सिंघे माथुर गछे पुहुकर गणे हिंसार पट्टे भट्टारक श्री खेमकीर्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री महमकीर्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्दजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री जगतकीर्तिजी विराजमाने। पांडे हरिनारायण वासी फतेपुर का वांसल गोत्र स्वामीजी श्री देवेन्द्रकीर्तिजी का शिष्य पोथी लिखाई श्री जहन्नावाद मध्ये ॥ इति ॥

(११) मैना का सत्त।

आदि—

प्रथमहि विनऊं सिरजनहारु। अलख अगोचर मैया भडारु ॥
आस तोरी मम वहुत गोसाईं। तोरे डर कांपैं करर की नांई ॥
शत्रु मित्र सब काहू संभारे। भुगत देई काहू न विसारे ॥
फूलि ज रही जगत फुलवारी। जो राता सो चला संभारी ॥
अपने रंग आपु रंग राता। बूझे कौन तुमारी बाता ॥

दोहा

बधन आखि हमारियां एको चरित न सूझि।
सोवत सपनो देखियो कोउ करे कछु बूझ ॥

अंत—

मैना मालिन नियर बुलाई। धरि झाटा कुटनी निहुराई ॥
मुंड मुंडाई कैसे दुर दीने। कारे पीरे मुख टीका कीने ॥
गदह पलानी के आन चढाई। हाट हाट सब नगर फिराई ॥
जो जैसा करे सु तैसा पावे। इनि बातनि का अनखु न आवे ॥
आगे दिये जो जो रहवाना। को दो बोयें कि लुनिय धाना ॥

दोहा

सत मैना का साधन, थिर राखा करतार।
कुटनि देस निकारि, कीन्ही गंगा के पार ॥

इति मैना का सत्त समाप्त।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी

प्रति—गुटकाकार । पत्र ५०॥ से ६७ । पंक्ति १३ । अक्षर १२ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय वि० गुटका)

विशेष—मालिन ने मैना को सत (शील) से च्युत करने का प्रयत्न किया पर वह अटल रही । बीच मे १२ मास का वर्णन है ।

(१२) मोजदीन महताब की वात । पत्र ९४ ।

आदि—

सेहर इरानी पातिस्या खुदादीन तसु नाम ।
साहिजादा सिर मोजदीन मीनकेत के धाम ॥ १ ॥
भया अठारह वर्ष का रगा इश्क के राह ।
सहिजादा सिर उपरै संक न मानें साह ॥ २ ॥

अंत—

मोजदीन के खास में हुरम तीनसौ साठ ।
ता उपर महिताब का धडा अमेरा धाट ॥९३॥
मरदो कवहु न कीजीयै पर महिरी से प्रीत ।
जो कोइ करो तो कीजीयो मोजदीन की रीत ॥९४॥

इति मोजदीन महताब की वात संपूर्ण ।

लेखन काल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ३ । (लच्छीराम यति संग्रह)

(प्रतिलिपि हमारे सग्रह में)

(१३) राधा मिलन—

आदि—

श्री राधा मिलन लिख्यते ।

श्री किसन लीला । श्री वृन्दावन विहार जानि उजैनि को वास छोड़ि सुधा दीपन रसीस्वर की माता श्री पूरणमासि जु वृन्दावन मे वास करन कु आई । पोतो एक साथ लै आई । ताकों नाम मधु मगल है । सो श्री किसनजी को गुवाल भयो है । सो श्री किसनजी के संग फिरे ।

अंत—

तब उनकी मा (ता) कीरति ने पुचकारि छाती सौं लगाइ लई । अरु कहन लागी बेटी तोकों अवार बोहत भई है । तु रसोई जीमि लैं भोजन सीरौं होइ गयो हैं । तब

भोजन करीं बीरी खाई सखिनी मिलि खेलनि लागि। और मुखरा अपनैं घर गई। अरु श्री किसनजी वन विहार करते (करते) सखा व गउवन सहित आपने घरकुं सिधारे।

इति श्री वृन्दावन माधव की कथा श्री माधौ श्री राधा विलास रास क्रीडा विनोद सहित चतुर्थ अंक समाप्त शुभं। श्री राधा किसन प्रीति सें चारि वारि मिल्या।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ३२। पंक्ति २०। अक्षर १८। ६॥×९॥।

विशेष—इसकी चार प्रतियें हैं। रूपावती वाले गुटके में भी यह ग्रन्थ है। उसके आदि में ५ दोहे हैं व अन्त भिन्न प्रकार का है।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(१४) रूपावती। सं० १६५७।

आदि—

जंबुदीप देग तहां घागर, नगर फतेपुर नगरां नागर।
आसि पासि तहां सोरठ मारू भाषा भली भाव फुनि रू।
राजा तहां अलफखां जनाहु चहुव.न हठी का पहिचानह।
ताकर कटक न आवै पारा समद हिलोरनि स्यों अधिकारा।
तुरक त मकि चढ़े केकाना नगर गर नगर मू परे भगाना।
राजपूत असि चढ़ि करि कौपह रविरथ थकै गिमनि कौं लोपह ॥ १ ॥

दोहा

ता घरि पूत सुलछनां, मन मोहन सुर ज्ञान।
चिरंजीव दिनपति उदो दूलह दौलति खांन।

चौपाई

अलपखांन चहुवान की सरभरी कौ करि सकै न देख्यों कर भरी।
इह विधि कीयो आप वखार करम जोति स्यौं दिपै लिलार।
इन्द्र की सभा सुनी हम कानि परतकि देखी इन्ह पहचांनि।
जास्यों रस शो नो निधि पावै जहिस्यों रिशि सो मूल गवावै।
दीनदार दया असि कीनो हजरति कह्यो सुशिर धरि लीनु।
ता ढिगि सेरखांन निहर सोहे दीनदार अर सभात विमोहै।
सारदुल अर संघ विराजै गुजै साल शिवालो भाजै।

दोहा

ताहि हमीर साहिबखा औहदखांन उकील।
एक ही एक समगल बैठे करह सबील ॥ २ ॥

तहिका राज महि कथा उतारी, जहां को बुधि परईश हमारी।
जे है गये अवह के कविजन, तिन्ह गुन सुर कहै मै सव जन।
इन स्यौं कछु अधिक नहीं आई, जहां तुरे तहां लेहु वनाई।
चोरि चोरि अछर सव जोरे काठौ खोर जै सवे विखोरे।
शास्त्र अखिर वेह आनी अै दीसत हे पासि लगीनी।

दोहा

सन हजार निवोतरे रवील आखरि मास।
सवत सोलह सतपनै हम कीनी वुधि परकास॥

अंत—

कुंडलियां

जो वह चाहै सो करै आदि पुरस करता व दोस नु किमही दीजिये। कुरे कहन कहाव कुंडल॥ कुरे कहन कहाव, पाव अन्तर गुन ज्यान्ह।

लेखन काल—सं० १७५४ वर्षे फागुण मासे वृख्य तिथौ तृतीया वुधवासरे शुभं भवतु। पद्य १९५।

प्रति—पत्र ५२। पंक्ति २१। अक्षर १६। साइज ६×१०।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(१५) लैला मजनूं की वात। पद्य ६५९। कवि जान।

आदि—

प्रथम चित्त सों लीजिये, अलख अगोचर नाम।
सुमिरत ही कवि जांन कहि, पूजै मनसा काम॥ १॥
साहिजहां जुग जुग जीवो, जिह हजरत सौं हेत।
जोई ईच्छा जीव की, सोइ करता दीन॥२६॥

अंत—

पेम नेम जान्यौं नहीं, ते निहचै पसु आहि।
सो मानस कवि जान कहि, जिह करता की चाहि॥५८॥
लैलै मजनू वाचिकै पैमु वढयो मन जान।
योरे दिन में ग्रन्थ यह, बांध्यौ बुधि परवीन॥५६॥

इति लैले मजनू ग्रन्थ कवि जांन कृत संपूर्ण।

लेखन काल—१८ वीं शताब्दी

प्रति—गुटकाकार। पत्र ५७। पंक्ति २१। अक्षर १४। साईज ६×१०।

(१६) लैले मजनू री वात

आदि—

श्री गणेशायनमः। अथ लैलै मजनूरी वात लिख्यते।

संवरकन्द विलायत। तहां साहि जुलम पातसाही करै। तहां विलायत ऐसी, जिसकी कौन तारीफ करै। वहुत ही जो इसकी विलाइत ये तीसू विम। जो कहां तांई तारीफ करिये।

दोहा

देख्या समर सुहांवनो, अधिक सुरंगा लोग।
नारी नैण सुहांवणी, पांन फूलदा भोग॥ १॥

अंत—

ऐसा प्यार दोनों का निवह्या है। जैमा सवही का निवहो। जिसकी आसकी लगै। जिसकी ऐसी निवहियो। तिस वीच वहुतही निवाहीयो।

दोहा

लैलैं मजनूं नेह था, तैसा सव का होय।
अखिया की अखिया लगी, निरवरही नहि कोय॥ १॥

इति लैलै-मजनूरी वात समाप्ता।

लेखन—सं १९२० मासानुमासे माघ मासे कृष्ण मासे कृष्ण पक्षे तिथौ अमावस्यां सूर्यवासरे। लिपिकृत्वा आत्मारामेण।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ४६। पंक्ति १३। अक्षर १६। साईज ७×७।

एक अन्य प्रति भी है।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(१७) विक्रम पंच दण्ड चौपाई। मुनिमाल। १७ वीं शती।

आदि—

शान्ति जिनेसर पद नमी, विक्रम चरित उदार।
पच दण्ड छत्रह, तणी, कथा कहूँ शुभकार॥ १॥
आगति थोडी खरच वहु, जिस घरि दीसै एम।
तिस कुटुम्ब का माल कहि, महिमा रहसी केम॥ २६॥

अन्त—

रिण अन्धारेउ मेटि दांनि प्रगट जगि जायउ।
ताते विक्रमादित्य, सांचउ नाम कहायउ॥

देई सर्व आशीस, जगति जिके नरनारी।
शशि रवि लगु थिर त (र) हो, श्री विक्रम उपगारी ॥

लेखन काल—सं १७४८।

प्रति—पत्र ३०। पंक्ति १६। अक्षर ४०।

(गोविंद पुस्तकालय)

(१८) बीरबल पातसाह की वात।

मध्य

पातसाह तैंमूर समरकन्द की फतह करी तहां एक अन्धी लुगाई कैद में आई। पातसाह पूछी तेरा नाम क्या है। लुगाई कही मेरा नाम धौलति है। पातसाह कही धौलति भी आन्धी होती है। लुगाई कही धौलति अन्धी न होती तो तुम सरीखे लगड़े की घर में क्यूं आवति।

प्रति— गुटकाकार। पत्र १० से ४५। पंक्ति १२। अक्षर २०। साईज ८।×६।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१९) वैताल पचीसी। भगत दास।

आदि—

गुरू गनेश के चरन मनावौ। देवी सरस्वती के ध्यावौ।
अकबर पातीसाह होत जहिआ। कथा अनुसार किन्ह मैं तहिआ॥
सुरा पानी न सुनीए काना। परवत अमन सीन्धु सब माना।
अचल इन्द्र सम भुजै राजा। तषत आगरा मोकाम भल छाजा॥ १॥

× × ×

अस्थल अकबरपुर वासा। बहुत सन्त ताही करै निवासा।

× × ×

तेही पुर है कवि जन के वासा। हरि की कथा सदा परगासा॥
बरन काहू नाहा राघौ दास। तीन्ह के पुत्र कथा परगासा।

अंत—

दाशन्ह को दास भगत मोही नाउ, हरिके चरन सदा गीत गाउं।
बरना काहु है लघुता गाती, हरि जस कथा कीन्ह बहु भाती।

× × ×

दुनौ वीर तब नाउ कराहे, देवी वीर तब आह।
देई वर नृप वीक्रम कह, अस्तुती करत पुनि आह।

इति वैतालपचीसी विक्रमचरित्रे भगतदास विरचिते । कथा पचीस समाप्त ।

लेखन काल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ४८ । पंक्ति २ । अक्षर ४२ से ४५ । साईज १०।×५ ।

विशेष—प्रति वहुत अशुद्ध है ।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(२०) शनिसरजी री कथा । विजयराम ।

आदि—

श्री गुरु श(च)रण सरोज नमो, गणपत गुण नायक ।
नमो शारदा सगत विगत, वाणी सुख दायक ॥
नमो राधका रवन, नमो पारवती प्यारा ।
नमो वीर वजरंग, लाल लगोटै वारा ॥
सुर गुरु मुनि अरु संत जन, सब के प्रणमुं पाय ।
रचुं कथा रविपुत्र की, मोय सुध बुध देहो सहाय ॥ १॥
व्यास पुत्र शुखदेव नमो, सद ग्रन्थ सुणायो ।
वालमीक मुनि नमो, बड़ो हरि चरित्र वणायो ॥
नमो सूरदा संत, कृष्ण की कीरत गाई ।
तुलछी जिनकुं नमो, बनै पुत्रका वणाई ॥
केशव नरहर और कवि, जा पर प्रभु की जोत ।
विजैराम वरणन किया, मन बुध निर्मल होत ॥ २ ॥

अंत

कुंडलिया—

आशायत दुर्गेश को गादी वैठक गाम ।
लूणी कोठे वसत है, समदरशी सो नाम
.. . स्याम रो स्याम विराजै ।
चरण कमल की सेवा सदा विजैराम साजै
कविजन किरपा करी, सुख सोनग अर व्यासा
बालमीक जे देव, सूर तुलसी विसवासा
सबे संत सिरपर वस्या, उरैं विराजो श्याम
कथा रसक रवि पुत्र की वरण करी विजैराम ॥१५॥
आद अत दोहु अक, बाहु पर बिंदु आई
जोम घड़ी कुं जोड़, समत के वरप गिणाई
रवि ऊवयो तुलरास रवि सुतवार विराजै
सौ षोड्स उस कला संयुक्त राकापति ऊपर राजै

तिण दिवस कथा तीजे पहुर प्रीत जुगत पूरण करी
बात विक्रमादीत की, विध विध कीरत विस्तरी ॥ १५९॥

प्रति—गुटकाकार (राव गोपालसिहजी वैद के संग्रह में)

(२१) श्रीमाल रास। सं० १९२४ काती वदि १३ भृगु।

आदि—

ॐ ह्रीं नमः सिद्धेभ्यः। अथ श्रीपाल रासो लिख्यते।
श्री जिन गुरु परनाम करि हिय थापि जिन नाम
सिरी पाल मैना तनौं कछुयक करौ बखान ॥ १ ॥

जंबू भारत खेत नगर चंपापुर मांहि,
नृप अरदमन कुमार नाम श्रीपाल कहाहि।
अति उदार अति सूर कोट बलभर भुज सज्जै,
बहु गुन कला निवास दैख रिपु भय गहि भज्जै।

अंत—

वेद नयन निधि चंद राय विक्रम संवत्सर
कार्तिक पक्ष असेत त्रयोदश भृगु वासर वर।
उत्तरा फाल्गुण नखत अर्क तुल लग्न वृछी कौ।
मध्य समापति कियौ पढौ पढावौ सुनो नित
भावौ बारबार नर सुर के सुख भोग कै छिप्र होठ भवपार ॥ २९ ॥

इति श्रीपाल रासौ समाप्तं। शुभ संमतसर मिती मार्गशिर्ष वदि १२।

लेखन—संवत १९२५ शुभवंत। लिख्यतं पंडतं कालीचरन ब्राह्मन कान (कुब्ज) जैनी नैकोलमध्ये मोहल्ला छिपैटी लिखाइ भरपाइ लिखवाई लाला गोकलचंद नै हाथ-रस के वासी नै पठनार्थे शुभ भवतु कल्याण मस्तु।

प्रति—गुटकाकार। पत्र ४७। पंक्ति ७। अक्षर २१। साईज ७।×४॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२२) सनि कथा। पद्य २७७। गणपति। सं० १८२६ वसंत पंचमी बुध बागौर।

आदि— अथ सनि चरित्र लिख्यते।

दूहा—

श्री वृन्दावन चन्द्र, को ध्यान गणपति धार।
पीछे श्री सनिदेव की कहिहु कथा विस्तार ॥ १ ॥
वल्लभ सुत वीठल विरुद करे वर्णन जो कोय।
तिह गणपति गुण मथन में नवग्रह मङ्गल होय ॥

अंत—

ग्रन्थ उत्पत कथन

राव श्री जसवन्त, तासु सुभगां अन्तेवर
कला सिन्धु करणोत, नाम तिहि सरस कुंवरि वर ॥ ३२ ॥
विक्रम रवि सुत भ्रात, दिव्य पुस्तक लिख दीनी।
ता पर कवि गणपत्य, वित्ति सद्‌मत्ति सु चिन्ही ॥ ३३ ॥
व्रज पध्धति भाषा विमल, आपे छंद वर ठकित की।
विविध भांति मेटण व्यथा, कथा कथी सनी चरित्र की ॥ ३४ ॥

छप्पय

सांगावत जसवन्त, भवन अन्तेवर भारिय।
राजावत कुल रूप, ओप ईसरदा धारिय ॥
अमरि कुवरि गुण अवधि, प्रेम मति भगति परायण।
सत गुरु गणपति दास, पास से अरज सुभायण ॥
आंबेर नाथ अरधंग वर, कुंदण बाई वत कही।
ता ऊपरि सनि चरित की, भूरि कथा सुंदर भई ॥ ३५ ॥

दूहा

,संवत अष्टादस सु सत छावीसा वरसानि।
वसंत पंचमी वार बुध, पूरण ग्रंथ प्रमाण ॥ ३६ ॥

कवित्त

संमत सत नव दून, वरस छावीस बखानं।
बुधि सुदि माल वसंत पंचमि तिथि परमानं।
मेदपाट धर मांहि नग्र वागोर नवे निधि।
मंदिर श्री गिरिधरन रीति कुल वल्लभ की विधि
गुजेंरा गौर सुग निति दुज, सुरतांन देव सुत सुरत की
कवि गणपति लीला कथी, कथा सुभग सनि चरित्र की ॥ ३७ ॥

दूहा

अमर नगर वर उदयपुर अटल कृपा इगलिंग।
पति हिन्दू चित्रकोटि पति राण तपे अडसिंघ ॥ ३८ ॥

कवित्त

श्रवण सुनि हि सनि चरित, प्रेम धारिय निज पाणी को।
पढहि कण्ठ निति पाठ, सरब दुख हरहि सदन को।
नृप दशरथ कृति तवन बहुरि विक्रम वर दायक।
धीर विदुस चिति धरहि दिव्य रिधि सिधि के दायक ॥

कहि गणपति हरिजस कथम, प्रगठ पुण्य बल पाजकी।
हूंहै ता ऊमर सदी विधू कृपा मजराज की ॥ २९ ॥

इति श्री सनिचरित लीलायां विक्रमादित्य अवन्तिका पुरी प्रवेश निज स्थान प्राप्ति राज्य प्राप्ति वर्णनम् पंचमो उल्लास संपूर्णम्।

लेखन काल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—(१) गुटकाकार। पत्र २६। पंक्ति २१। अक्षर १३। साइज ६॥×८॥

चिपकने से कुछ पाठ नष्ट हो गया है।

प्रति—(२) गुटकाकार। पत्र १७। पंक्ति १६। अक्षर २९। साइज ७॥×५॥

विशेष—ग्रन्थ में ५ उल्लास हैं पद्य ४६—४४—१०७—४१—३९=२७७ हैं।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२३) ज्ञान दीप। पद्य ८६०। कवि जान। सं० १६८६ वैशाख कृष्णा १२।

आदि— अथ ज्ञान दीप ग्रथ कवि जान कृत लिख्यते

प्रथम जपवै नांव जगदीस, ज्यों प्रगटै बुधि बिसवा बीस।
कर्ता भेद न बरने जांहि, ना कछु आंवत है बुधि मांहि ॥ १ ॥
जो कछु है धरनी आकास, रचनहार सबकौ अविनास।
मानस आपहिं ना पहिचानत, करता की गति कैसें जानत ॥ १ ॥

\+ × ×

साहिजहां साहन मन सांह, जगपर साहिब कीयौ इलाह।
जंबूदीप दीपनि में दीप, छहु मुगता रखवै घट सीप ॥
मानत है दूरी लौं आंन, जस प्रगट्यो जग साहि जहांन।
साहिजहां सम आज न कोइ, पाछै भयौ न आगें होइ ॥
जहांगीर छत्रपति है दाता, तो ऐसौ सुत दयौ विधाता।
जाकौ दादौ साहि अकब्बर, कौंन जु जासों करै तकब्बर ॥
खुरासांन कों पठवे माल, रोम सांम के देहि रसाल।
मानत हैं सातों इकलीम, कर जोरे करिहैं तसलीम ॥
रहौ चिरंजीव कहि जांन, कोटि बरस लौं साहिजहांन।
कक्ष मोहि बुधि कौ परवांन, साहिजहां जस करों बखांन ॥
सुनहुं कांन दे सब ससार, ज्ञान दीप कौ करों विचार।
जामें ज्ञान होइ सो मांनत, दीप ज्ञान याकों परि जानत ॥
पढ़ै याहि आवत है ज्ञान, तातें भाख्यौ दीपग ज्ञान।
यामें तो बात बहु राम, सब काहू के आवै काम ॥
सुनि सुनि जगत सयानों होइ, सीखयौईं जनमत ना कोइ।

× × ×

ज्ञान दीप कवि जान कहि, कीने हित चित लाइ।
सीखस्रु ग्रंथन में हुती, कथी सकल सुखदाइ॥

अंत—

संवत सोलह सै सु छयासी, जांन कवी यह बुधि परकासी।
तिथि बारस बदिहिं बैसाख, दस दिन मांहि सुनाई भाख॥
बुधि परवान सुनाई गाइ, खोर दूर करि लेहु बनाइ॥

× × ×

सिधि निधि घर में बहु भई, आप सम्हारे काम।
राज कियौ तेसठ बरस, सुख रस सों बहराम॥
सुख रस सौ बहराम, जांम आठों बीतत है।

× × ×

रूम चीन अरु मारली, बहु बिध बाढी रिधि।
आप संभारे तें भई, घर मे यों नौ निध सिधि॥१॥

इति श्री कवि जांन कृत ज्ञानदीप संपूर्ण।

लेखन-काल-संवत् १८९२ मिति चैत्र सुदि १३ दिने लिखितं प्रतिरियं लक्ष्मीचंद पतिना नवहर मध्ये चिरं सखतसिंध पठनार्थं न करे।

प्रति—(१) पत्र २३। पंक्ति १५। अक्षर २४०। (जिन चरित्र सूरिज्ञान भंडार)

(२) पत्र १६। (जयचन्द्रजी भंडार)

(क) ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ

(१) अमर बतीसी । पद्य ३९ । हरीदास । सं० १७०१ आसू सुदि १५ ।

आदि—

प्रथम मनाइ देवी सारदा की सेव करूं, दूसरे गणेस देव पाइ नाइ सीसजू ।
हरीदास आंन कविराइ कै पासाइ बधि, अखिर उकति जैसी वदतु कवीसजू ।
साहि दरबारि महाराजा गजसाहि तनै, कीयौ गज गाहु कमधजन कै ईसजू ।
ताको जस जोरि कछु मेरी मति सारू कहु, अमर बतीसी के सवईया बतीसजू । १ ।

अंत—

सत्रै सै इकोतरा, आसू पूरन मासि ।
सखी अखी सरसती, कथा कवि हरदासी । ३७ ।
अमर बत्तीसी अमर की, कही सुकवि हरदास ।
कूरिन कौ न सुहाइ है, सूरनि कै मन हास । ३८ ।
च्यारी ढहथ कवित इक, सवईये प्रथम बत्तीस ।
अमर बत्तीसी के कहे, कवि रूपक सैंतीस । ३९ ।

इति श्री कवि हरदास विरचिते अमर बत्तीसी सपूर्ण ।

लेखन-काल-संवत् १७०४ वर्षे फागुण वदि ५ दिने लिखित पं० मानहर्षमुनिना दहीरवास मध्ये ।

प्रति—पत्र २ । पंक्ति १८ । अक्षर ६६ । साईज १० × ५ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) कवीन्द्र चान्द्रिका । सुखदेव आदि अनेक कवि ।

आदि—

श्री गनपति गुरु सारदा, हीन्यौं मानि मनाइ ।
मनसा वाचा करमणा, लिखौं कवित्त बनाइ ॥ १ ॥

कासी और प्रयाग की, कर की पकर मिटाइ।
सबहि को सब सुख दिये, श्री कवीन्द्र जग आइ ॥ २ ॥
सकल देस के कविनि मिलि, कीन्हें कवित्त अपार।
श्री कवीद्र कीरति करन तिनमें लीने सार ॥ ३ ॥
श्री कवीन्द्र द्विज राज की लखहु चन्द्रिका ज्योति।
दुनी गुनी के दुख दहति, दिन दिन दूनी होति ॥ ४ ॥
पहिले गोदा तीर निवासी, पाछे आइ बसे श्री कासी।
ऋगवेदी असुलायन साखा तिनको ग्रन्थु भयो है भाषा ॥ ५ ॥
सब विषयनि सों भयो उदास, बालपना में लयो सन्यास ॥
उनि सब विद्या पढी पढाई, विद्यानिधि सुकवीन्द्र गुसाई। ६ ॥

सवैया

तीरथि सबै अन्हाइ गाइ नसताई, जाइ कीन्हों काजु आजु देखौ कैसौ सुरसरी को।
बहै सुखदेव सुर नर मुनि वृस नाम धन्य धन्य कहैं जैत वार बाजी भरी धी।
नवो खड दसौं दिसि दीप दीप मैं सुजसु सोरभयो जग मैं गहै याकोनु छरी को।
कवि इन्द सरस्वती विद्या बुद्धि महावर करचौ छुड़ायौ ज्यौं छुड़ायो कर करीको ॥

अंत—

जगत सरभयो धर्म, जलपूरी रह्यो, तार्में कमल कवि इन्द्र सोहे।
भक्ति पत्र ज्ञान बीच कोस जय किंजल्क सील रस मोहे।
सब को वधन तीरथ में, तीरथ को वधन काव्यो सोहू सुवास उपमा कों कोहै।
श्याम राम बानी वर कहें निसि दिन प्रफुल्लित यातें जु हरि रवि जोहे ॥

शुभ भूयात्। श्लोक संख्या ४२५१।

विशेष—इसमें निम्नोक्त कवियों की कविताओ का सग्रह है—सुखदेव रचित पद्य ४, नन्दलाल १, भीख २, पंडितराम १, रामचन्द्र १, कविराज ४, धर्मेश्वर २+१, कस्यापि १, हीराराम २, रघुनाथ कवि १, विश्वंभर मैथिल १, धर्मश्वर १, शंकरोपाध्याय १, रघुनाथ की स्त्री ३, भैरव २, सीतापति त्रिपाठी पुत्र मणिकठ २, मगराय१, कस्यापि १२, गोपाल त्रिपाठी पुत्र मणिकंठ १, विश्वनाथ जीवन १, नाना कवि १०, चिन्तामणि १७, देवराम २, कुलमणि १, त्वरित कविराज २, गोविंद भट्ट २, जयराम ५, गोविद २, वंशीधर १, गोपीनाथ १, यादवराम १, जगतराय १, राम कवि की स्त्री ३।

लेखन-काल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र १९। पंक्ति ८। अक्षर ४५ से ५०। साईज १२×५॥।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(२) इसकी एक अपूर्ण प्रति महिमा भक्ति जैन ज्ञान भंडार में है जिसकी प्रतिलिपि अभय जैन ग्रन्थालय में है।

(३) कायम रासा (दीवान अलिफ़खान रासा)। जान।

आदि—

रासा श्री दीवान अलिफ़खां का दोहा ॥

सिरजन हार बखानिहै, जिन सिरज्यौं संसार।
खभू गिरतर जल पवन, नर पस पछी अपार। १।
एक जात ते जात बहु, कीनी है जग मांहि।
अनंत गोत कवि जान करि, गनति आवत नांहि। २।
दोम महमंद उच्चरौं, जाके हित के काज।
कहत जान करतार यहु, साज्यो है सब साज। ३।
कहत जांन अब वरनिहैं, अलिफखांन की जात।
पिता जान बढि ना कहौं, भाखौं साची बात। ४।
अलिफखांनु दीवान कौं, बहुत बड़ो है गोत।
चाहुवान की जोडी कौं, और न जगमे होत। ५।
अलिफखांन के वस मैं, भये बडे राजान।
कहत जान कछु ये कहैं, सब को करौं बखान। ६।

अंत—

पूत पिता को देखिकै, वाढत है अनुराग।
कहत खान सरदारखां, कोट बरष की आग।

इति रासा संपूर्ण।

लेखन काल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ७०। पंक्ति १५ से १७। अक्षर १८। साइज ५॥। × ८॥।।

विशेष—ग्रन्थ का नाम कवि ने लेखक के लेखानुसार "रासा दिवान अलिफखांका" रखा होगा। इसमें अलिफ़खां की पूर्व परम्परा प्रासंगिक रूप से देकर अलिफ़खां का विस्तार से वर्णन है। और जैसा कि ग्रन्थ के मध्य के निम्नोक्त दोहे से स्पष्ट है ग्रन्थ सं० १६९१ मे समाप्त कर दिया गया था पर कवि उसके बाद भी लम्बे अरसे तक जीवित रहा अतः पीछे के वंशजो का भी हाल देना उचित समझ कर उसने पीछे का हिस्सा रच कर ग्रन्थ की पूर्त्ति की।

यथा—

सोरह सै इक्यानुवें, ग्रन्थ क्यौ इहु जांन।
कवित पुरातंन मैं सुन्यो, तिह बिध कर्यो बखान।

पूर्ति—

दौलतखां दीवनं कौं, अब हौं करौं बखांन।
तेग त्याग निकलंक है, जानत सकल जिहान।

जान कवि बहुत बडा कवि होगया है। इसके ७० ग्रन्थों का संग्रह हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, के संग्रहालय में पहुँचा हैं।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(४) जसवन्त उद्योत (जसवन्त विलास) पद्य ७२०। दलपति मिश्र।
सं० १७०५ आषाढ सुदी ३। जहांनाबाद।

आदि—

अथ महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवन्तसिंहजी को ग्रन्थ मिश्र दलपति कौ कह्यौ लिख्यते।

दोहा

प्रथम मंगला चरन, देव चरन चित लाइ।
गनपति गिरा गिरीस की, विनती कही बनाइ॥ १॥

× × ×

अथ कवि वंस वर्णनं—

अकबरपुर अनुपम सहरु, बसे सुरसरी तीर।
चारों वर्ण रहैं जहां, धर्म धुरंधर धीर॥ ५॥
दीप मिश्र माथुर तिहां, सदा कर्म षट लीन।
साधु सिरोमणि शील निधि, पंढित परम प्रवीन॥ ६॥
तिन पुनि राम नरेस ढिग, कियौ कछु दिन बासु।
पाठे नृप कौविद धरनि, जगमगातु जसु आसु॥ ७॥
सदाचार गुन गन निपुन, तासु तनय सिवराम।
तिनके सुत तुलसी भए, सकल धरम के धाम॥ ८॥
तुलसी सुत दलपति सु कवि, सकल वेद द्विज दासु।
तिन बरन्यौ बल बुद्धि सौं, श्री जसवन्त विलासु॥ ९॥
पांच अधिक सत्रह सई, संवत को परिमांनु।
ग्रीष्म रीति आषाढ सुदि, तीज वार हिम भानु॥१०॥
नगर जहांनाबाद जहां, रच्चै चक्रतो भूप।
तहां दलपति जसवन्त की, पोथी रची अनूप॥११॥
नगर जहांनाबाद कौ, बरनन कर्यौ बनाइ।
जहां नृपति जसवन्त कहं, मिल्यौ कवीसुर आइ॥१२॥

अन्त—

> जो जसवन्त उदोत कहँ, सुनै श्रवन चितु लाइ।
> तिहि मानौं हरिवंश की, पोथी सुनी घनाइ ॥१८॥
> कछुक वंस बरण्यो प्रथ (म) विष्नु पुरानहि मानि।
> करनि साठि नरिन्द की, बरनी लोक कथानि ॥१९॥
> लोक वेद बुधि जन सकल, कहत एकही रीति।
> यह विचारि या ग्रन्थ महँ, मानहु परम प्रतीति ॥२०॥

इति श्री तुलसीराम सुत दलपति कवि विरचते जसवन्त उदोते वंसावली प्रकरनो संपूर्णं। शुभ भवतु। श्री।

लेखनकाल—सं० १७४१ रा मागिसिर व० १४ वार भोम दिने लिखंत मेडता नगर मध्ये लिखतं चूरा महीधर पोथी ब्रा० चूरा महीधर छै शुंभ भवतु।

प्रति—पत्र ४०। पंक्ति २७ से २९। अक्षर २४। साईज़ ७×९॥

विशेष—ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्व का है।

(अनूप संस्कृत लायब्रेरी)

(५) दिल्ली-राज वंशावलि। पद्य ११९। कल्ह। (जहांगीर के राज्य में)

आदि—

> इकवार होइ प्रसुत नारी, कृपा राखी ईस।
> पाप को नाम न जाणीयइ, सइ पुन्य विस्वे वीस।
> राजान ब्राह्मण अवर कोइ, करइ नाही रीस।
> राजान हूवइ सूरवसी, पृथ्वी मांहि पृथीस।

अन्त—

> तीरे गगण अखरत चंद सरस सवच्छर जायो।
> आदित वार कहैं कल्ह कातिक वदि प्रतिपदा।
> सधर ध्रुव जोग जांणि धुअ पजाब को मुगर।
> नगर लाहोर कोट थिर नृप जांहगीर साह अकबर सुतन।
> साह हुमाऊ वस वर जहाँगीर महमद को सुजस आणंद कर ॥ १९ ॥

इति वंसावली संपूर्ण।

लेखन-काल—पं० दानचंद्र लिखितं श्री नवलखी ग्रामे सं० १७३९ व० कार्तिक वदि ३ दिने।

(बृहद् ज्ञान भण्डार, प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(६) दिल्ली राज-वंशावली । किशनदास । औरंगजेब के राज्य में ।

आदि—

ॐ नम । अथ राजावली लिख्यते ॥

ॐकार का ध्यान लगाओ, शिव सुत चरन आनि मन लावौ ।
समरे आदि भवानी आई, गुरु किरपा तै या बुद्धि पाई ।
दिल्ली पति जो राजा भए, तिन भूपति के नामु गिनए ।
प्रथ में कृत जुग हरि प्रगटीया, चारि अवतारि वपु धरि आया ॥

अंत—

औरंग जेब साह आलमगीर सम जग सिरताज ।
निस वज्या डका धर्म का, त्रय लोक में अवाजु ।
कवि महाराजा जु भनै, किशनदास करै आसीस ।
तुम राज सुथिर करौ जुग जुग लाख बीस पचीस ।
यथा जुगतै बुद्धि आही, तथा अछर कीन ।
जहां दीन होइ सो सवारि पजो दोष मुझै न दीन ।

विशेष—इस ग्रन्थ मे द्वापुर युग सोमवंश वर्णन से लगाकर अकबर तक का वर्णन उपरोक्त कल्ह रचित वंशावली से ज्यों का त्यों उठाकर रख दिया गया है ।

(वृहद् ज्ञान भंडार, प्रतिलिपि–अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) दीवान अलिफखां की पैड़ी । जान कवि ।

आदि—

श्री अलिफ खां कीपैड़ी लिखते ।

पहलैं अल्लाह सुमिरिये, जिन्ह सुभर उपाया ।
सौल जिलांवण कारणैं, रखै नहीं काया ।
मांणस दे सारे नहीं, सो कर सुभाया ।
सोई जिन्ते जांन कहि, जिस वोद सुदाया ।

अन्त—

सोल्हसै इकईस मैं जनमे दीवाणा ।
कीये उजले मयामखां चकवै चौहाणा ।
संवत हुवा तिश्रासिया लेखै परवाण ।
वैकुंठ पहुंचे अलिफ खां छडु दीया जांण ।

इति श्री दीवांन अलिखां जी की पैड़ी संपूर्ण । समाप्त ।

लेखन—अथ सं (व) त १७१६ मिती कातिक वदि ११ सनीसर वार ता० २३ महुरंम सं० १०७० लिखिइतं पठनार्थ फतैहचंद लिखतं भीखा।

प्रति—पत्र १४। पंक्ति १५–१६। अक्षर १५। साइज ५॥। × ८॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(९) पंवार वंश दर्पण। पद्य ३०। दयालदास सिंढाय।

आदि —

वीणा धारद कर विमल, भव नारद सुरभाय।
हंसारूढ दारद हरो, शारद करो सहाय ॥१॥
धार उजयनी के अधिप, जिनह वीर वर जान।
कहूँ सार आचार कृत, वंश पवार वखान ॥२॥

अन्त—

अनल कुंड उपत्र कोप सत्रिय वशिष्ट किय।
अरबुद धार उजीय देव सुरथान राज दिय।
पिंड शत्रुन किय प्रलय, कोम परमार कहाये।
पुनि वाराह पुराण गिरा श्रुति व्यास जु गाये।
जिण कुळ अजीत लोभी, सुजस सुभट सिद्ध अवसाण रो।
अनकल विरद परियां हना खाटण सुजस खुमाण रो ।२५।

लेखन—इति श्री परमार वंश दर्पण सि (ढा) पच दयालुदास खेतसीयोत गांव कुवियै के निवासी ने वनाय संपूर्ण हुआ। ठाकुरा राज श्री अजीतसिंहजी खुमाणसिंहोत गांव नारसैर ठाकुरौं की आज्ञा से वनाया। पंवारों की पीडिया एक सौ वतीस की उदारता वीरता का वर्णन कीया मिति पोष कृष्ण ३ संवत् १९२१ का (इसके बाद विस्तृत नामावलि है)

विशेष—इसमें २५ छप्पय और ५० दोहे हैं।

(भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, प्रतिलिपि–अभय जैन ग्रन्थालय)

(ञ) नगर-वर्णन

(१) आगरा गजल। पद्य ९४। लक्ष्मीचंद। सं० १७८० आषाढ़ शुक्ला १३।

आदि—

सरसती मात सुभावनी क, देहो दास कुं जानी क।
अकबराबाद की टुक आज, उतपति कहत है कविराज ॥१॥
अकबर साहजी गुणधाम, रमते निकले इह ठाम।
इहांइ एक देख्या खासा क, अकबर साह तमासा क ॥२।
गीदर सेर कुं झीले क, ठाढे पातिसाह भाले क।
हजरत लोक कु ऐसी क, पूछे बात ऐसे की क ॥३॥

अन्त —

अकबराबाद है ऐसा क, लखिये इन्द्रपुर तैसा क।
सब गुन सहर है भरपूर, देखत जात है दुख दूर ॥९१॥
जबलग गगन अरु इंद्राक, पृथवी सूर गन चंद्राक।
सुवसो तब लगे पुर एह, सहर आगरा गुन गेह ॥९२॥
सवत सतरै सै असी क्या क, आषाढ़ मास चित धसियाक।
सुदि पख तेरमी तारीख, कीनी गजल धुए बारीक ॥९३॥
अपनी बुद्धि के सारुक, कीनी गजल ए धारुक।
लखमी करत है अरदास, नित प्रति कीजिये सुविलास ॥९४॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) आबू शैल री गजल। पद्य ६५। पनजीसुत चेलो। सं० १९०९ वैसाख वदी तीज।

आदि—

ब्रह्म सुता पद धीनवु, मन गणराज मनाय।
शोभा आबू शैल की, वरणूं उक्ति बणाय ॥ १ ॥

अंत—

सीधो करण नाइ साथ, भैरो जगू दोनु भ्रात ।
सत उगणीस नौ की साख, वदि पख लाग तौ वैसाख ॥ ६२ ॥
राजी रहै सारा रीझ, तापर करी आखा तीज ।
जिलीयो गाम रतनूं जात, पनजी सुतन चेलो पात ॥ ६३ ॥

(प्रतिलिपि—अभ यजैन ग्रन्थालय)

(३) इन्दौर वर्णन ।

आदि—

सकल गुणँ करि सोहतो, सकल देश सिरदार ।
अति इंदोर उघोत है, सब जाणत ससार ॥ १ ।

छंद पद्धडी

सब सिरै सहर इंदौर साच, वर्णनु गुनह तिनके जु वाच ।
जिण नगर मांहि धनवान जाण, वलि बुद्धि सुद्धि बलवत वखाण ॥ १ ॥

अंत—

नगर सांच वरण्या सहु, चितधर अतिही चूप
अब वर्णन हासी करुं मानव री सुख दाय ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(४) उदयपुर गजल । पद्य ८० । यति खेतल । सं० १७५७ मार्गशीर्ष ।

आदि—

जपूं आदि इकलिंगजी, नाथ दुवारै नाथ ।
गुण उदयापुर गावतां, सतां॰ करो सनाथ ॥ १ ॥
सघन अंब गिरिवर सघन, सिरघर रमै सुर राय ।
राठ सेन सुप्रसन रही, प्रथम नमता पाय ॥ २ ॥
आंबेरी उमया रमन, भुवाणै भोलानाथ ।
रतन पुर हणमत रिधु, सो सुप्रसन्न सनाथ ॥ ३ ॥

अंत—

खर तर जती कवि खेताक, आखै मौज सुं एताक ।
राणा अमर कायम राज, लायक सुन जस मुखलाज । ७८ ॥
लायक जस मुख लाज, सुनहु तारीफ सहर की ।
गुमियन सुन के गजल,-निजर कर नेक मेहर की ।

फतै जु गरुर फजर, रिधु अमरसिंह जू राना
उदयापुर जु अनूप, अजब कायम कमठाना
वाढी तलाव गिर बाग वन, चक्रवर्त्ति ढलतै चमर
अन भग जंग कीरत अमर, अमरसिंह जुग जुग अमर ॥ ७९ ॥

संवत सतरै सतावन, मिगसर मास धुर पख धन्न ।
कीन्ही गजल कौतुक काज, लायक सुणतसु मुख लाज॥ ८० ॥

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ३ । पंक्ति १६ । अक्षर ४७ । साईज ९॥।×४॥ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(५) कापरड़ा गजल- पद्य ३१ । यति गुलावविजय । संवत १८७२ चैत्र कृष्णा ३ ।

आदि—

सरस्वती पाय प्रणमुं सदा, रिद्धि सिद्धि नित देय ।
दुख विनाशन सुख करण, अविरल वाणी देय ॥ १ ॥
देश चिहु दिसि दीपतो, सदा सुरंगो देश ।
तिह कापरडो वर्णवु, भैरु भली विशेष ॥ २ ॥
गजल करुं गोरातणी, सुणता उपजै स्नेह ।
बालक बुद्धि वधारवा, अकल ऊपजै एह ॥ ३ ॥
ज्ञानी ध्यानी बहु गुणी, पाखड रहै न कोय ।
इण खंडे जन पुर अधिक, रग रली घर होय ॥ ४ ॥

अंत—

संवत अठारह जाणुंक, वरस बहुंत्तर आणुक ।
चैत्र मास है चगा, वद पखं तीज दिन रगा ॥ २९ ॥
तपा गच्छ यति है गुलाब, किया इस गजल का जाव ।
जिसने कहियै कैसीक, आखियो देखी ऐसीक ॥ ३० ॥

निजरी

बावन वीर सधीर वार चामुंड माई, राज करो रस मंड भाटी वर सुभ सवाई ।
माम नृपति महाराज आज अधिक यश गाजै, कापरड़े कमधज खुशालसिंह नित राजै ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(६) गिरनार गजल। यति कल्याण। सं० १८३८ माह वदि २।

आदि—

दोहा

वर दे मात वागेसरी, गजल कहुं गुण खाण।
जबर जग है जीर्ण गढ, वाचा तास वखाण ॥ १ ॥
महबत खान महीपति, रघु विराजै राज
गय थट्ट हय थट्ट गाजता, सब ही सारे साज ॥ २ ॥
सकल लोक आगै खड़ा, वाबी के दरबार।
सत विराजै अमर छव, दिन दिन दे दैकार ॥ ३ ॥

॥ गजल ॥

दिन दिन होत है दैकार, गिरवर गाजते गिरनार
दामोदर कुंड है सुख दाय, करता स्नान पातक जाय ॥ १ ॥
देवल ऊच है धज दड, नीचे खूब खेती कुड।
भवेसर नाथ सचू देव, सारत लोक जाकी सेव ॥ २ ॥

अन्त—

अैसी नारिया अलेख, उपमा कही ऐसी देख।
संवत अढार अड़तीसेक, महा वदि बीज के दिवसेक ॥ ५१ ॥
कीनी यात्रा गढ गिरनार, कहता गजल अति सुखकार।
घर के अखर मेज सौभार, गढ पुवणमो गिरनार ॥ ५२ ॥
खरतर जती है सुप्रमाण, कवि युं कहत है कल्याण

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

(७) गिरनार जूनागढ वर्णन। मनरूप विजय।

आदि—

बरणू अबहि सोरठ वखान, रीझै जु सुनहि सब राव रान।
गिरनार जिहा तीरथ गजेन्द्र, वदै जु सुरहि इद्राणी इंद्र ॥ १ ॥

अत—

जूनोगढ जग येष्ट, श्रेष्ट वानी तिहा सोहै।
दल सब्बल दईवान, मम्र जन देखत मोहै ॥
श्रावक जिहां सुखकार पार जिनका कुन पावै।
धरम करत धनवंत, गुणह बद बद्दे जु गावै ॥

तिण देश तीर्थ शत्रुंज शिखर, भले गिरनार बखाणिये।
मनरूपविजय कवि कहै मरद, अवस सोरठ चित आणिये ॥ १ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(८) चित्तौड़ गजल। पद्य ५६। यति खेतल। सं० १७४८ श्रावण वदि १२।

आदि—

दोहा

चरण चतुरभुज धारि चित, अरु ठीक करो मन ठौर
चौरासी गढ चक्कवइ चावो गढ चित्तौड़ ॥ १ ॥

गजल

गढ चित्तौड़ है वंका कि, मानु समंद में लंका कि।
विडद पूरत लहलवनी, अरु गंभीर तीर रहति कि ॥ २ ॥
अला दैति अल्लावदिन, बंधी पुल चढी पखवीन
गैबी पीर है गाजी कि, अकबर अवलियौ राजी कि ॥ ३ ॥

अंत—

खरतर जती कवि खेताक, आखै मौज सुं पुताक।
संवत सतरैसै अड़ताल, सावण मास ऋतु बरसाल।
वदि पख बारखी तेरी कि, कीनी गजल पढियो ठीक ॥ ५५ ॥

कलश

पढ़ो ठीक बारीक सु पंडिताणे जिन्हां रीत सगीत की ठीक पाई
च्यारुं कूट मालुम चित्तौड़ चावा जिहां चंडिका पीठ चामुण्ड माई।
झीली वावसे झीकतें झरणारे झीगरी झीठ दरखत जोड़ भीडं
कहै कवि खेतल यु वहे वितारे गजल चित्तौड की खूब वणाई ॥

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र २। पंक्ति १७। अक्षर ४७। साईज १०×८।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(९) जोधपुर वर्णन गजल। गुलाव विजय। सं० १९०१ पौष कृष्ण १०।

आदि—

समरूं मन शुद्ध शारदा, प्रणमुं श्री गुरु पाय।
महियल में महिमा निलो, मरुधर है सुखदाय ॥ १ ॥
तिण देसै जोधाणपुर, दिन दिन चढतै दाव।
सकल लोक सुखिया वसै, राज करत हिन्दु राव ॥ २ ॥

गजल

जोधहि नगर है फैमाक, मानु इन्द्रपुर जैमाक ।
कहिये सोम तिन केतीक, आपनी बुध है जेतीक ॥ १ ॥

अन्त—

पोसह मास पलि वदि पक्ष, दसमी तिथह भृगु परतक्ष ।
समझो सुकवि चित हि लाग, यारन्ह रीन कीनी थाय ॥ १०१ ॥

लेखन—स १९०१ रो गजल जोधपुर री है पं० नान विजय प० गुलाब विजयजी कृत।

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१०) जोधपुर नगर वर्णन गजल । पद्य ४९ । हेम । स० १८६६ कार्तिक सुद १५ ।

आदि—

दोहा

समरू गणपत सारदा, धरू ध्यान चित धार ।
जपू गजल जोधाण की, निपट सुणो नर नार ॥१॥

× × ×

मुरधर देश है मोटाक, तिहां नहीं काहे का तोटाक ।
जिसमें शहर है जोधान, घणूं ताहि मिट हो थान । २॥

अन्त—

धली अठार छासठ वर्ष, हिकमत करी काती हर्ष ।
निपट ही पूर्णिमा तिथ नीक, ठावी गजल कीनी ठीक ॥४६॥
तप गच्छ गच्छ में सिरताज, रिधु जिणंद सूरही राज ।
मुनि वरनेम मही में मौद, कहे कवि शिष्य हेम कर जोड़ ॥४७॥

कवित्त

योधनयर जगजाण इन्द्रपुर ही सम ओपत ।
धाजत धज्ज छत्तीस नित्य उच्छव कर नरपति ।
राज ऋद्ध बहु रीत प्रीत नर नार रु पेखो ।
अही सूर चंद अडिग दुनी धाड नर थे देखो ।
धाह जी वाह ओपम वधिस मनुष्य घणा सुख माण री ।
कवि दिह जिसडी कही जग शोभा जोधाण री ॥ ४७ ॥

(प्रतिलिपि—अभयजैन ग्रन्थालय)

(११) जोधपुर वर्णन गजल

आदि—

सारद गणपति शिर नमुं, निश्चै इक चित्त होय।
गढ जोधाणो वर्णवुं, मोटो बुद्धि घो मोय ॥ १ ॥
सबही गढों शिरोमणि, अतिही ऊँचो जाण।
अनड़ पहाड़ां ऊपरै, जालम गढ जोधाण ॥ २ ॥
राज करै राठौड़ वर, श्री मानसिंह महाराज।
अदल आण वरतै अखंड, दूसरो अवर न आज ॥४॥

गढ जोधाण अति मारीक, जाणै धरा जुग सारीक।
जरुवर कोट पक्का जोर, जाके जोड़ नावै और ॥१॥

(त्रुटित प्रति—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१२) झींगोर गजल। जटमल नाहर।

आदि—

झींगोर कोटी खूब देखी नारी एक सुनार की।
मन लाइ साहिब आप सिरजी पत सिरजण हार की।
मुख चंद मुष्ट निसाण चाढे नैन घाली सार की।
अलि मस्त आळो नाजि नखरा कळी जान अनार की।

अन्त -

कर ओढ गूंघट को विराजै, सबल फोज विठार की।
बहु खूब खूबाँ खूब सोभा खूब छवि गुलजार की।
बनी अजब महिमा, अजब सोभा नौंस सिंघार की।
मुख जटमल सिफत कीनी, कामनी किरतार की।

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१३) डीसा गजल। पद्य १२१। देवहर्ष।

आदि—

चरण कमल गुरु लाय चित्त, गजल करुं सुखदाय।
कै प्रवदति पोथी किया, विपुल सुज्ञान बताय ॥ १ ॥
चीन हादेश कथीर सु, पहिर खुशी नहीं होय।
हीरा मणि माणक सही, लीला कवि जन लोय ॥ २ ॥
घ (घ !)र नीली भाणधार में, गुणीयल नर शुभ गाम।
मग फल रस कस नीपजै, धवल नवल सुख धाम ॥ ३ ॥

जपुं सिद्ध दीसा धणी गोला सुजस गय सूर।
धानेरा गढ सम धण जँमी जालिम नूर॥ ४॥
सकल लोक सेवा करै, प्रबल विहार पठाण।
रीधू विराजै राज ऋद्ध, दिली पत दीवाण॥ ५।

फजल छप्पय कवित्त

अन्त—

सुणता मंगल माल देव कुशल गुरु पाँछित दाता।
चुगली चोर मच्छर मदा सुख आपै साता।
चन्द्र गच्छ सिरचंद गुरु जिणहर्ष सूरीसर गाजै।
प्रतपी सूप जिम पुर भणा सब दालिद्र भाजे। १२०॥
पुण्य सुजस कीधो प्रगट, जिहा सिद्ध अषा माता धणी
कवि देवहर्ष मुनि यी कहै, रीधे सुजस लीधा धणी॥ १॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१४) नागौर वर्णन गजल। ८३ पद्य। मनरूप। स० १८६२।

आदि—

मरु धर देश है मोटा क, अनधन का जु नहीं तोटा क।
जिस में शहर के ते जोर, निपट ही अधिक है नागोर॥ १॥
महीपति मानसिंह महाराज, सबही भूप का सिरताज।
दल बल प्रबल अरियण खेस, डड ही भरे दसही देस॥ २॥

अतः—

गुम है अधिक करो कुन गाय, पंडित पढे पार न पाय।
भविजन सुणै रीझै भूप, महिमा कही कवि मनरूप॥ ८२॥

कवित्त

गजल सुणो जे गुणी भली तिनके मन भावै
सुणै राव राजान, उमग तिनके चित्त आवै।
पंडित सुणै प्रवीण हरख उपजै हिय उलसै।
अवर सुणै नर नार, बडे चित्त माया विलसै।
मग रतन सहर नागौर है कहो कीरत केती करों।
कूड नहीं जाण तिलमात कथ,निरख दाद देज्यो नरा॥ ८३॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१५) पाटण गजल । पद्य १४५ । कर्त्ता देवहर्ष । सं० १८५९ फागुन ।

आदि—

सरस वचन द्यो सरसती, पामी सु गुरु पसाय ।
विघन व्याधि भवभय हरण, विकल ज्ञान वर दाय ॥ १ ॥
परम बुध परगट कवि, अर्णव जिम गंभीर ।
मेरी बुध अति मंद है, ज्यूं छीलर सरनीर ॥ २ ॥
खरी धरा नव खंड में, सतर सहस्स गुजरात ।
संखलपुर राणीश्वरी, मोटी वेथ मात ॥ ३ ॥
धर नीली मंदिर धवल, अक्षय लाछि अलक्ष्य ।
सर्व लोक सुखिया वसे, खूबी करै खलक्ष ॥ ४ ॥
रथ पायक हय गय घणा, दिन दिन चढते दाव ।
गायक वाल गाजै गुहिर, राज करै हिन्दू राव ॥ ५ ॥

अन्त—

सखी मिल करत वर्यर्ण रसाल, ज घर कंन होय नीहाल
संवत अठार उणसठ वरस, फागण वाणी सु दिखी सरस ॥ १४४ ॥
गाइ गजल गुणमालाक, खोल्या सुजस का तालाक
धरके अक्षर मन सुभ ध्यान, सुनतां होव नित कल्याण ॥ १४५ ॥

कलश कवित्त छप्पय

सुणतां नित कल्याण, दने दुख दालिद्र दूरै ।
प्रणमो सद्गुरु पाय, सदा मन वांछित पूरै ॥
खरतर गच्छ सिर ताज, श्री जिन हर्ष सूरि गुरु राजै ।
सेवै पवन छत्तीस, गच्छ सगलां सिर गाजै ॥
पाटण जस कीधो प्रगट, जिहाँ पचासर त्रिभुवन धणी ।
कवि देवहर्ष मुखथी रटै, कुशल रग लीछा घणी ॥ १ ॥

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—पत्र ६ । पंक्ति १४ । अक्षर ४५ । साइज १० । × ४

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१६) पाली नगर वर्णन (कवित्त ढालादि में)

आदि—

पाली नगर सुहामणो, देख्यां आवै दाय ।
वर्णन ताको अब चर्वू, सामण करत सहाय ॥ १ ॥

अन्त—

आण वहै जिननी सदा रे, प्रतिदिन मन ससनेह ।
नाम जपै श्री पूज्या नो रे, ज्यूं चातक मेह ॥ १ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) पूरब देश वर्णन । पद्य १३२ । ज्ञानसागर (नारण) ।

आदि—

कोई मैं देख्या देश विशेष, मतिरे भय का भय ही में ।
जिह रूप न रेखा नारी पुरुषा, फिर फिर देख्या नगरी में ॥
जिहाँ काणी कुबरी मधरी बधरी, लगुरी पगुरी ठूंठे फई ।
पूरब मति जाज्यो, पच्छि जाज्यो, दक्षिण उत्तर है भाई ॥ १ ॥

अन्त—

घणु घणु क्या कहुं, घरो मैं किंचित बोई ।
सब दीठो सब लई, देश दीठो नहा जोई ॥
जाणी जेती बात, तिती मैं प्रगट कहाणी ।
झूठी कथ नहीं कथी, कही है साच कहाणी ॥
पिण रहित हूँ इक बात री, तन सुख चाहै देहधर ।
नारण घरी अरू क्या पहर, रहे नहीं सो सुघट नर ॥ १३२ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(१८) पोरबन्दर (सोरठ देश) वर्णन । पद्य २६ । मनरूप

आदि—

तिण देश पुरहबिंदर प्रसिद्ध, वर्णं यूं ताहि गुन सुन विशुद्ध ।
कीरति ताहि की सुनहु कान, अलका पुरी ज्यू ओपम सुं आन ॥ १ ॥

अन्त—

पुरबिंदर है प्रसिद्ध, सारां बिंदर में सिर हर ।
जिन प्रसाद जिम बिंब, नित्य पूजै तिहां घड नर ॥
गच्छ पति महिमा घणी, करै नरनारी उमग कर ।
सुणै सूत्र सिद्धान्त, धरम मग अथग हिये धर ॥
शत्रुंज भेंट गिरनार सह, रीत प्रम खरचै सु रिद्ध ।
कथ मनरूप महिमा करै, पुर बिंदर दीठौ प्रसिद्ध ॥ २६ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैनग्रन्थालय

(१९) बीकानेर गजल । उदयचन्द्र यति । सं० १७६५ चैत्र ।

आदि—

शारद मन समरूं सदा, प्रणमुं सद्गुरु पाय ।
महियल में महिमानिलो, सन जन कुं सुखदाय ॥ १ ॥
वसुधा मांहे बीकपुर, दिन दिन चढते दाव ।
सर्व लोक सुखिया वसै, राज करै हिन्दु राव ॥ २ ॥
पर दुख भंजनरिपु दलन, सकल शास्त्र विध जाण ।
अभिनव इन्द्र अनूपसुत, श्री महाराज सुजाण ॥ ३ ॥
बांकी धर गढ वंकड़े, रिपु दल कीना जेर ।
चावो च्यारे चक में, निरख्यों बीकानेर ॥ ४ ॥

अन्त—

मूलणा

संवत सतर पैंसठ रे मास, चैत्र में गजल पूरी कीनी ।
माता शारदा के सुपसाइ सु रे, मुझे खूब करण की मति दीनी ॥
बीकानेर सहिर अजब है प्यारूं, चक में ताकी प्रसिद्ध दीनी ।
उदैचन्द आनन्द सु युं कहै रे, चतुर माणस के चितमाहि लीनी ॥
चावो च्यारे चकमें नवखण्ड मे रे, प्रसिद्ध बधो बीकानेर वाइ ।
छत्रपति सुजाण सा जुग जुग जीवो, ताके राज्य में वाजते नौबत थाइ ॥
मनसुं खूब वणाई के रे सू सुणाइ के लोक सुवास पाइ ।
कविचन्द आणंद सु यु कहै रे धू धू धू धू धू खूब गजल गाइ ॥

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।
प्रति—पत्र ६ । पंक्ति १२ । अक्षर २५ । साईज ५ × ८॥।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२०) वड़ोदरा गजल । दीप विजय । सं० १८५२ मार्गशीर्ष शुक्ल १ शनिवार

आदि—

पटमय (पद्र) क्षेत्र है वीराक, छटणी बहुत है नीराक ।
फिरती गिरद सो कोशांक, क्यों रहैं शत्रु की हौसांक ॥
मानुंराव दामाजीक, जैसा न्याय रामादिक ।
गोला न्याल सै सन्ध्याक, किल्ला तेतना वंध्याक ॥

अन्त—

कलश सवैया—

पूरण किद्ध गजल्ल अवल्ल अकार से बावन चित्त उल्लासें ।
थावर वार मृगशिर तिथि प्रतिपद पक्ष उजासें ॥

उदयो तके थाट उदय सूरि पाटद लक्ष्मी सूरि जिम भान आकाशें।
प्रमेय रतन समाम परनन सेवक दीपविजय इम भासें ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२१) बंगाला की गजल। यति निहाल।

आदि—

दोहा

श्री सद्गुरू शारद प्रणमी, गवरी पुत्र मनाय।
गजल बंगाल देश की, कहूँ सरस बनाय ॥

गजल

अवल देश बंगाला कि, नदियां बहुत है नालाकि।
संकड़ी गली हैं घटी जोर, जंगल खूब घिर चहुं ओर ॥
नवलख कामरू इक द्वार, दस्तक बिना नहीं पैसार।
बांए हाथ बहनी गंग, दक्षिण ओर परबत तुंग ॥

अन्त —

रेखता

यारो देश बंगाला खूब है रे जिहां बहत भागीरथी आप गंगा।
जिहां सिखरसमेत पर नाथ पारस प्रभु झाडखंडी महादेव चंगा ॥
नगर पचेट में रघुनाथ का बड़ा स्थान है गंगा सागर सुसंगा।
देश उड़ीसा जगन्नाथ अरु धा कुंड के न्हात सुध होत अंगा ॥

दोहा

गजल बंगाला देश की भाषित जती निहाल।
मूरख के मन मां बसै, पंडित होत खुस्याल ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२२) भावनगर वर्णन गजल। पद्य ३२। भक्ति विजय। सं० १८६६ कार्तिक पूर्णिमा।

आदि —

आश्वनाथ प्रणमी करी, धरूं ध्यान शुभ ध्याय।
भावनगर भेदह भणृं, सहु नर नारी सुहाय ॥ १ ॥

अन्त—

गजल

गुर्जर धरह गुण केसाक, जो ज्यों सकर पय जैसाक्।
तिनकी सिफत कवि काहै ताम, नव खण्ड मांहे तिन का नाम ॥१॥

अन्त—

संवत् अठार छासठ साच वलि तिहाँ मास कातक वाच ।
पूनम सकळ को दिन देख, वदी है गजल भाव विशेष ॥११॥
तप गच्छ धणी छाजादंत, विजैजिनेन्द्रसूरि शोभत ॥
सेवक भक्तिविजय कर सेव, पढी है गजल पूज पंच देव ॥१२॥

(प्रतिलिपि —अभय जैन ग्रन्थालय

(२३) भावनगर वर्णन । पद्य २५ । हेम । सं० १८६६ कातिक पूर्णिमा ।

आदि—

पच देव प्रणमुं प्रथम, ऋषभ सत वड रीत ।
नेम पार्श्व बर्द्धमान नित, परम धरू चित प्रीत ॥१॥
गुण गाऊँ गुज्जर धरा भावनगर भल मंत ।
राजे सुण गुण राजवी, सुण रीझे सुण सत ॥२॥

छन्द त्रोटक

गहिरो भत देश गुजारयं निभ्रम प्रमांजु नारी नरंय ।
धणी ऋद्धि वृद्धि जिये घर में, धरे चित्त सुवत्त दया धरमे ॥१॥
पंडित नेम गुरु के पसाव, मन शिष्य हेम उजल सुभाव ।
सुन कै जु रीझ है नर सयान, वाह जू वाह वदइ महीवान ॥२४॥

दोहा

संवत अठारह छासठे पूनम कार्तिक पेख ।
भावनगर का गुण भला, बरण्या कवि विशेष ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२४) मंगलोर (सोरठ) वर्णन ।

आदि—

नाभि नन्द कुं नमन कर, संत नेम सुखकार ।
पार्श्ववीर पाय प्रणमतां, प्राणी उतरै पार ॥

छन्द पद्धरी

मंगलोर सहर मोटे मंडाण, उद्योत जगत मांहि कैलास जाण ।
पहलो सु कोट अतही प्रचड, नहीं इसौ अवरन यही सु खंड ॥१॥

अन्त—

तरुण तेज गच्छ तपै, विजय जिनेन्द्र सूरीश्वर ।
ज्ञानवंत गम्भीर, नमै सहू को नारी नर ॥

योग अष्ठ विध जाण याण अमृत सत पदियत।
संग सकल मिल सदा, निज उच्छव करते नित॥
देश परदेश मांहे दीपत, जीरत अष्ट करंद भरी।
कीरत सत गच्छ पति तणो, कथ जोड्डण मेंद रह करी॥१४।

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२५) मरोट गजल। यति दुर्गादास। सं० १७६५ पौष कृष्ण ५।

आदि—

सम्मत सतरै पैंसठै, पोह वदि पांचम्म।
श्री गुर सरसती सानिधै गजल करी गुण रम्य॥१॥
गुणीयल ग्राहक दुसी, लहद दुसी कोई खोट।
दुरस कही दुरगेस मुनि, किले कोट मरोट॥२॥

अन्त—

जब जग आग माही करी, तब लग कोट नींव धरी।
औसा कोट वरणाय, चित में घूर धरता चाय॥
आग्रह दीपचन्द उल्हास कहता जती यूँ दुरगादास।
सुण है रांजियो स्याबास गजल खूब कीनी रास॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२६) मेड़ता वर्णन गजल। पत्र ४८। मनरूप। सं० १८६५ का सु० १५।

आदि—

मरुधर देश अति मोटाक, नित नित चढ़े नव कोटाक।
तिनही देश की सुन ताम, निज ही कीर्ति नव खण्ड नाम॥

अंत—

सम्वत अठारह पैंसठ* साच, वलि सुद मास कातिक वाच।
पखही सुकल पुनम पेख, दाखी गजल कवि मन देख॥४६॥
सब ही गच्छ में सिरताज, राजत अटल तप गच्छ राज।
भक्ति ही विजय गुण भारीक, जाकुं सघर धर सारीक॥४७॥
तिनके शिष्य मनरूप साह, यही है गजल वाह जी वाह।
वांचै सुनै नर वहरीत, पावै अचल मन बहु प्रीत॥४८॥

---

*अन्य प्रति में—

संवत अठारह तयासी साच, वलि कार्तिक मास ही वाच।
पख ही सकल पूनम पेख, दाखी गजल कविजन देख॥४६॥

कवित्त

सब ही में सहर जु सिरह, पुरह मेदनी पिछानौ।
इनका गुन अनपार, जाहि में रहस म जानौ॥
भाव भक्ति जिन मेर, जठै श्रावक सुखकारी।
दय वंत दातार निपुण भ्रम में नर नारी॥
जिन धर्म मरम जाणण जिके, हित कर मानव हेरतो।
सुरपुरी माँहि इन्द्र पुर सरस विण मरूधर माँहि मेड़तो ॥१॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२७) मेदनीपुर (मेड़ता) महिमा छन्द। पद्य ३९। भक्ति विजय। सं० १८६६ का० शु० १५।

आदि—

नाभि नन्द नित्त नित नमुं, शन्त नेम सुख कार।
पारस श्री वर्द्धमान प्रति, धरूं ध्यान चित्त धार॥

छन्द पद्धरी

द्रिग दिट्ठ मिट्ठ मरुधरा देश, वकि शहर मेदता है विशेष।
वड़ कवि करत तिन के वखान, मानव जूं ' त यह सतमान ॥१॥

अन्त—

सवत अठार छासट्ठ वर्ष, हद मास कार्तिक आन हर्ष।
पूनम जु प्रथम कुजवार पेख, वड तप गच्छ दिपत विशेष॥ ३७ ॥
विजैजिनेन्द्रसूरि भरपूरि राज, कर तेज धर्म के केई काज।
कवि कहत भक्त कर विन्हु जोड, मेड़तो सधा मुरधरा मौड़॥ ३८ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(२८) लाहोर गजल। पद्य ५६। जटमल नाहर।

आदि—

देख्या सहिर जब लाहौर, विसरे सहिर सगले और।
रावी नदी नीचे वहै, नावा खूब ढाली रहै॥ १ ॥
बोले बसकां बग तीर, निरमल वहै आछा नीर।
बसती सहिर है चौराश, बारह कोश गिरदी वास॥ २ ॥

अन्त—

है जिहां आइ गुल रंग, लाल गुलाब बहुत सुरंग।
पिपल राइवेल चंबेल, मरूआ मौगरा गुल केल॥ ५४ ॥

कितेइक मागणी के फूल, कणेयर कमल मालति मूल।
शोभानगर की अनेक, जटमल कहै केती एक ॥ ५५ ॥
लहानूर सुहावना देगया होत अनन्द कवि जटमल वर्णन करि होत सुखकन्द॥५६

लेखन—सं० १७६५ मेहरसर मध्ये पद्मा।

प्रति—पत्र ६ (अन्य कृतियों के साथ) जिसमें पहले पत्र में यह गजल है। कुल पंक्तियाँ ३४। अक्षर प्रति पंक्ति ६७। साइज १०।×४।

विशेष—अन्य प्रति में पद्य संख्या ६० है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२९) सांडेरा छन्द। पद्य २५। अपूर्ण।

आदिः—

समरत सरसति सामणी गणपति के गही पाय।
सुगुण सुगुरु के नाम जप, करत है छन्द बणाय॥ १ ॥
छन्द हाटकी
सकल देश मों सिर देश, अनोपम गुणवंत गोढाण।
वस है भल्ला सहिर अवल्ला साढेरा शुभ ठाम॥
प्रबल प्रतापी दिनकर सरिसो पाले राज प्रमाण।
एसौ सांडेरा नगर सवाई परगट पुण्य प्रमाण॥ १ ॥

अन्तः—

पोसाला परगट विहु, अति सोभित अभिराम।
बहुले टाल पढे जिहा, ज्ञान रसिक हुई ताम॥ ३ ।

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(३०) सिद्धाचल गजल। पद्य ६९। यति कल्याण। (स० १८६४ भा० सु १४)।

आदिः—

चरण नमुं चक्केसरी, प्रणमु सद्गुरु पाय।
विमलाचल गुण वर्णवु, श्री सिद्धगिरि सुप(स) य॥ १ ॥
गजल छंद हिरणफाल
गुणवंत वाहु के गहगीर, पूरत हरत सन की पीर।
भूषण भाय है भल्लीक, यह घन घटा है वल्लीक॥ १ ॥

अन्तः—

संवत अठार चौसट्टेक भाद्र सुद चउदसी ठेक।
कीनी गजल दौलत हेत, चित में भार अखर समेत॥ १८ ॥

जै भभै गुणे तस हर्ष हुय, सदा सुख होई सुख लहत ।
खरतर जती है सुप्रमाण, कवि यु कहत कल्याण ॥ ६६ ॥

इति श्री सिद्धाचल गजल संपुरण ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति—टिप्पणाकार पत्र १ । पंक्ति ५४ । अक्षर २४ । साईज ९। × १७ ।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(३१) सूरत गजल । यति दीपविजय । सं० १८७७ मार्गशीर्ष २ ।

आदि—

दोहा

सरसत पद प्रणामुं सदा, प्रणमुं गुरु के पाय ।
गजल सूरत की गाऊंगा, श्री गुरु देव सहाय ॥

गजल

सूरत शहर है सुथानाक, दिपर दीपता थानाक ।
अलका भूमि पै आईक, कोट कोट सै पड़ खाईक ॥ १ ॥
पूरे लोक से पूरेक, अमर वास कु घुरेक
शोभा देत है कमठाण, अट्टा पहुंचती असमान ॥ २ ॥

अन्त—

करके कृपा तप गच्छ भान, आना शेहर अपनो जान ।
जाणी संघ अपनो आश, आना पूज्य जी चौमास ॥ ८१ ॥
सतोतर सतंवा अठार, मिगसर मास द्वितीयासार ।
परण्या दीप श्री कविराज, सुरत सेहर को साम्राज ॥ ८२ ॥

कलश छप्पय:—

मंदिर सूरत सेहेर, ता वरनन इह कीनो ।
सब सेहरां सिरताज, सूरत सेहर नगीनो ॥
नीको सूरत सेहर लख कोशां लख धावो ।
देखन की जस हौंस सौं देखन पैं आवो ॥
श्री गच्छ पति महाराज कुं, चित लेख लिखनै लिद्ध ।
दीपविजय कविराज ने, इह सूरत सेहेर वरनन कीद ॥ ८३ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(३२) सोजत वर्णन गजल । पत्र ६३ । मनरूप (संवत १८६३ कार्ती सुद १५)

आदि—

चाल गजल

मुरधर देश देशां मौड, राजहि करत है राठौड ।
वरणूं ताहि का वाखांन, जग जन सब सचा जान ॥
भनु जिहा मानसिंह भूपत्ति, राग छत्तीस गुण है रत्त ।
थाका तेज का वाखान, रटते सदा राय हीं रान ॥

अन्त—

सवन अठार तेहुसह यात्र, वलि सुद मास कार्तिक थात्र ।
पूनम तिथ के दिन पेख, दरस ही यजल कीनी देख ॥ ६१ ॥
तप गच्छ सदा मोटा नाम, पंडित भक्तिविजय है नाम ।
सहि तिन देव सूरह साम, मल शिष कवि मनरूप भाम ॥ ६२ ॥

कवित्त:—

गजल कही गुणवंत भला, कवि तिण मन भावै ।
रीझै राय ही राण सुणै, नर अवर सरावै ॥
भावन वल अवहु वेद भेद, वांचै सु वखाणै ।
चारण भाट ही चतुर जिके, गुण थोहोला जाणै ।
सोझाली नयर करनी सुकथ, जे जे ठौड हुती जोती ।
कवि मनरूप अरजह करै, गुन सब रीझो गहा पती ॥ ६३ ॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(ट) शकुन, सामुद्रिक, ज्योतिष, स्वरोदय, रमल और इन्द्रजाल ।

(१) अवयदी शकुनावली । रायचन्द । सं० (१८) १७ द्वितीय ज्येष्ठ वदि ५ नागपुर ।

आदि—

महावीर कौ ध्याइकें, प्रणम सरसति मात ।
गणपति नित्तप्रति जै करै, देवै बुधि विख्यात ॥१॥
गुरु चरणन कौ वंदणा, कीजै दीजै दान ।
इस विधि सेती जावतां, पाइजै सनमान ॥२॥
रीतै हाथ न जाइये, गुरु देवों के पास ।
अरु विशेष पृच्छा विषै, मुद्रा श्रीफल तास ॥२१॥

गद्य—

अहो पृच्छक सुणहु तुम तौ गुणवन्त बुधिवन्त हौ परं तेरी बुधि अरु गुण लोक रहण देते नांही तुम्ह तौ सब ही लोगु सेती भलाई करते हो सो (लो) गु तुम्हारी भलाई जांणते नांही । लोगु बड़े दुष्ट है इस वास्ते स्थिर चित्र हुइ करिकै अत्र एक वार्ता करहु ज्यो अपणे मित्र भाई बंध है तिस मिलिज्यौ सभही कार्य तेरे भला होइगा ।

अन्त—

संवत सतर दुतीय ज्येष्ठ वदि पंचमी वसती नागपुर वणिक सरम ।
श्रीपाट गजीगे प्रगट मति सुजाण सिष गुण गेह ।
जती रायचन्द लिखी सुकनोती ससनेह ॥२॥
भले जतन सौं राखियौ यह अब याकौ सारा ।
कल्प वृक्ष ज्यौं देतु है वंछित फल श्री कारा ॥२१॥

(३२) सोजत वर्णन गजल । पद्य ६३ । मनरूप (संवत १८६३ काती सुद १५)

आदि—

चाल गजल

मुरधर देश देशां मौड़, राजहि करत है राठौड़ ।
वरणू ताहि का वाखांन, जग जन सब सच्चा जान ।।
भनु जिहा मानसिंह भूपत्ति, राग छत्तीस सुण है रत्त ।
वाका तेज का वाखान, रटते सदा राव ही रान ।।

अन्त—

सवन अठार तेहुसह यात्र, वलि सुद मास कार्तिक वाच ।
पूनम तिथ के दिन पेख, दरस ही गजल कीनी देख ।। ६१ ।।
तप गच्छ सदा मोटा नाम, पंडित भक्तिविजय है नाम ।
सहि तिन देव सूरह साख, मल शिष कवि मनरूप भाख ।। ६२ ।।

कवित्त:—

गजल कही गुणवत भला, कवि तिण मन भावै ।
रीझै राव ही राण सुणै, नर अवर सरावै ।।
भावन वल अवहु बेद भेद, वांचे सु वखाणै ।
चारण भाट ही चतुर जिके, गुण बोहोला जाणै ।
सोझाली नयर करनी सुकव, जे जे ठौढ हुती जोती ।
कवि मनरूप अरजह करै, गुन सव रीझौ गहा पती ।। ६३ ।।

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

(ट) शकुन, सामुद्रिक, ज्योतिष, स्वरोदय, रमल और इन्द्रजाल ।

(१) अवयदी शकुनावली । रायचन्द । सं० (१८) १७ द्वितीय ज्येष्ठ वदि ५ नागपुर ।

आदि—

महावीर कौ ध्याइकैं, प्रणम सरसति मात ।
गणपति नितप्रति जे करै, देवै बुधि विख्यात ॥१॥
गुरु चरणन की वदणा, कीजे दीजै दान ।
इस विधि सेती जावतां, पाइजै हनमान ॥२॥
रीतै हाथ न जाइयै, गुरु देवों के पास ।
अरु विशेष पृच्छा विषै, मुद्रा श्रीफल तास ॥२३॥

गद्य—

अहो पृच्छक सुणहु तुम तौ गुणवन्त बुधिवन्त हौ परं तेरी बुधि अरु गुण लोक रहण देते नांही तुम्ह तौ सब ही लोगु सेती भलाई करत हो सो (लो) गु तुम्हारी भलाई जांणते नांही । लोगु वड़े दुष्ट है इस वास्ते स्थिर चित्र हुइ करिकै अब एक वार्ता करहु ज्यो अपणे मित्र भाई बंध है तिस मिलिज्यौ सभही कार्य तेरे भला होइगा ।

अन्त—

संवत सतर दुतीय ज्येष्ठ वदि पंचमी वसती नागपुर वणिक सरम ।
श्रीपाठ गजीगे प्रगट अति सुजाण सिघ गुण गेह ।
जती रायचन्द लिखी सुकनोती ससनेह ॥२॥
भले जतन सौं राखियौ यह अब याकौ सारा ।
कल्प वृक्ष ज्यौ देतु है वंछित फल श्री कारा ॥२१॥

लेखन—संवत १८९६ रा मिती ज्येष्ठ वदि ५ इति श्री अबयदी शुक्रा (कना) वली संपूर्णम ।

कर दुख बिगरी नेयम दुख, तन दुख समज समान ।
लिख्यो जात है कठनसु सठ जानत आसान ॥१॥

प्रति—(१) पत्र २० । पक्ति १० । अक्षर २६ से ५० । साइज १० × ४॥

(२) गुटकाकार । पत्र ११ । पंक्ति १५ । अक्षर ३४१ । साइज ८॥ × ४॥ । सं. १८९१ वि. (अभय जैन ग्रन्थालय)

(२) केशवी भाषा । जोशी त्रिलोकचन्द्र ।

अन्त—

लालचन्द इवेतम्बरी, पुन उन ही को ध्यान ।
भिन्न भिन्न समझाय के, दियो अभय पद दान ॥

लेखन—संवत् १८७० माधव सुदि ३ भावहर्षीय कस्तूरचन्द लिखित ।
प्रति—पत्र ४ ।
विशेष—केशव रचित संस्कृत ज्योतिष ग्रन्थ की भाषा टीका है ।

(श्रीचन्द्रजी गधैया भंडार, सरदारशहर)

(३) चंपू समुद्र (सामुद्रिक) । भूप । सं० १७२५ वि० ।

आदि—

पीता धीता नहिन सो गङ्गा गीता कांय ।
रोता होंही तान कोई सीतानाथ सहाय ॥१॥
सुंडार दड अखंडित बलए, अलिगण मण्डित गंड स्थले ।
घर दस्पति सुअवरद अमीच वन्दे गण नायक भवपुन्ने ।
बागी भूपण कण्ठ कवि भूपहि दीजै दानि ।
अङ्ग अङ्ग लछमन सवै कहो समुह बखानि ।
बत्तिस लच्मन पुरप को प्रथमहि कहो विचारि ।
बहुरि कहो सब अङ्ग को, जो वर देहु मुरारि ॥

अन्त—

अन्त अनुरि मध्या जय भनी भूप अनूप ।
हो हि पुरप ते उत्तम सामुद्री यह काव्व ।
भूपा परति अलपटहि सिद्धि वहा है सव्व ॥

इति भूप भाषित चंपू समुद्रे तृतीय सर्ग शुभमस्तु ।

लेखन—संवत् १७२५ मिति सावन वदी अमसा १५, पोथी लिखा जानसाही।
प्रति—पत्र ४३। पंक्ति ७। अक्षर २४। साईज ९×४।

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(४) ज्योतिष सार भाषा—कवि विनोद। कृष्णदत्त।

आदि—

अथ गणेस स्तुति

रिद्धि सिद्धि गणाधिपति नर महेश सुत का धर ध्याने।
हृदय कमल में कितेरे हृदय कमल में दे उगाने ॥ टेक॥
अरुण कुसुम की माल कण्ठ और परशु कमल है जिनके कर।
अरुण माल में लाल सिंदूर दिद्दा अरुण अधर।
सर्व अङ्ग है मनुष्य का गज सीस विराजे अति सुन्दर।
मुख सुखवाहन कि तुम तो सुपक वाहन लम्बोदर।
बन्धु मित्र सुत दार गेह में क्यों होता है अग्याना।
कृष्ण दत्त श्री कृष्ण भक्ति बीन कभी नहीं होती गुजराने।
भूत भविष्यत वर्तमान जो तिन काल बतलाता है।
जोति शास्त्र सब शास्त्रशिरोमणि, विना भाग्य नहीं आता है॥ टेर॥

अन्त—

शिखरि स्युगमा तुम्ह ते, पाद नैन मे रोग।
राज पीडित कृश तनु में भया मिला देष संयोग॥१२॥

इति केतु फलं। इति श्री कृष्णदत्त विप्र विरचित जोतिसार भाषा कवि विनोद नवग्रह फलं समाप्तं।

लेखन काल—२० वीं शती।
प्रति—पत्र ८ से २६। पंक्ति ११। अक्षर २८ से ३२। साइज १०×५।

(अभय जैन ग्रंथालय)

(५) तुरकी सुकनावली।

आदि—

हमल १

सुणि हो पृच्छक इण काल कै आवणे आणंद खुशी, नेक वखत है दुस अरु चाड दफै होइगा, विरहा तेरा मन चित्या होइगा, इच्छा पूजैगी मन ॥१॥

अन्त—

सुण हो पृच्छक यः फाल युं कहत है तुझे साहिब चिंतार्थी छुडावैगा सर्व सिद्ध होइगी अच्छा फक है तेरा काम होइगा खुदाइ का हुकम है फतै होइगी ॥१५॥

इति तुरकी सकुनावली संपूर्ण।

लेखन काल—१९ वीं शती, पाली मध्ये ॥

प्रति—पत्र २। पंक्ति ९। अक्षर २४। साइज ८॥×४।

(अभय जैन ग्रंथालय)

(६) पासा केवली—

आदि पत्र खो गया है—

अन्त—

जिस कारज की चिंता तू बार बार करता है सो कारज दर हाल सिद्ध होइगा किसी थांनक सु लाभ कै वासतै अपणा पुत्र भेजता है अथवा तू जाणौ की करता है सो दर हाल लाभ सेती आवैगा। जो तेरी गई वसत होइगी सो भी आवैगी, एक दिन में अथवा दो दिन में तेरे हाथ कछु लख भी आवैगा ॥१॥

इति पासा केवली समाप्त ॥१॥

दूसरी प्रति में पाठ भिन्न प्रकार का है यथा—

सुनि हो पृछक इस पासे का नाम विलक्षण है जा चित्त में वाता चीतवत हो सो सफल होइगी। पुत्र धरती सौं प्राप्ति होइगा, राजा के घर सौं तथा किसी वडो जाइगा सौ प्राप्ति हुवैगा।

इति पासा केवली सम्पूर्णम् ॥

लेखन—संवत् १८३२ रा मिति आसू वदी ८ दिनै लेखि विक्रम मध्यै।

प्रति—(नं० १) पत्र २ से ७। पंक्ति ४। अक्षर ३५। साइज ७॥×४।

(नं० २) पत्र २ से ७। पंक्ति १२। अक्षर ४२। साइज १०×४

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(७) बारह भुवन (९ ग्रह) विचार। सार (?)।

आदि—

ज्युं विचार ज्योतिष को, कहत न आवै पार।
अब फल बारह भवन के, बरणत है कवि सार ॥१॥

तन भुवनै सुरज करैं, नर कुरूप बहु केस
विनै रहित क्रोधी सहज, सार विन्त सविवेस ॥२॥

अंत—

एसे बारह भुवन पर ज्योतिस साश्त्र विचार।
फल नवगृह को वर्ण क्यो सार बुद्धि अनुसार ॥१॥

इति नवग्रह फलं

लेखन काल—१९ वीं शती। १८ वीं शती की कई प्रतियां भी संग्रह में है।

प्रति—(१) पत्र ३। पंक्ति १५। अक्षर ४८ से ५२। साइज १०×४॥

(२) पत्र ५। पंक्ति ११। अक्षर ३०। साइज १०×४।

(३) पत्र २। पंक्ति १८। अक्षर ४८। साइज ९×४

(४) पत्र ४। पंक्ति १५ से १८। अक्षर ३६ से ४०। साइज ९॥।×४।

(५) पत्र ३। पंक्ति १६। अक्षर ४०। साइज ९×४। अपूर्ण।

(६) तीन प्रतियो के फुटकर पत्र ३। सं० १८३८ आसू वद। लिहिमता लूणसर।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(८) मेघमाल मेघ। सं० १८ १७ कार्तिक शुक्ला २ गुरुवार। फगवाड़ा।

आदि—

परम पुरुष घट-घट रम्यौ ज्योति रूप भगवान।
सकल रिद्ध सुख दैन प्रभु, नमति मेघ धर ध्यान ॥१॥
ज्योतिक ग्रन्थ समुद्र है, जांकी ले इक विन्दु।
मेघमाल मेघे रची, प्रगटे प्रिय जग चन्दु ॥८॥
मेघ विचार प्रथम ए थाई, जैसे श्वकै कही बनाई।
काल सुकाल तणी यहि बात, गुरु किरपा कर कह्यो विख्यात ॥३॥

अन्त—

दृटपटा छन्द

ी अटुमल मुनिसजी सब साधन राजा, १रमानन्द सु शीस है ग्रन्थ विगुनि साजा।
ेष्य भयो सदानन्द तिसतें उपमा भारी, चौदा विद्या युक्त सोई आज्ञा गुरु कारी ॥ १ ॥

चौपाई

ताहि शिष्य नारायण नाम, गुण सोभा को दीसे ठाम।
तांको शिष्य भयो नरोत्तम, विनयवंत आज्ञा नमगोत्तम ॥ ११ ॥

ता सेवा मैं मयाजु राम, कृपावंत विधा अभिराम।
तिनकी दया भई मुझ ऊपर, उपज्यो ज्ञान सही मोही पर ॥ १७ ॥

अडिल्ल

तौते मेघ माल इहु कीनी, जो गुरु के मुख ते सुन लीनी।
इसको पढ़े सौ शोभा पावै, सो जग में पंडित कहलावै ॥ १८ ॥

रसावल छन्द

मुनि शशि वसु को जान महि, संवत ए आखत।
कातिक सुदि गुरुवार मान १५ मिति तिथि भाखत ॥
उत्राषाढ नक्षत्र दिवस, मही एक विकीलत।
जो घट अक्षर होइ, ताहि कवि सुध करि कीजत ॥ १९ ॥

लीलावती छन्द

एक देस जलंधर सोभे सुन्दर नाम दुपा या ठौर कह्यो।
शुभ दान पुन्य की ठौर इही है मानों सुर पुर आन रह्यो ॥
पण्डित नर सोभे कवि ते भारी गीत वजत रसयो।
ग्रह ग्रह मङ्गलचार जु होवे तामे पुर इक एह वसयो ॥ २० ॥

दोहा

सकल रिद्धि करि सोभए, फगवाड़ा शुभ थांन।
तहां मेघ कवता करि, आछी विध मन आन ॥ २१ ॥
चूहड़मल्ल जु चौधरी, फगवारे को राउ।
चतुर सैनका सोभ हैं, जिह उडगण शशि थाउ॥ २२ ॥

गीया छन्द

कर सर्व छन्द मिलाइ इकठा कही सख्या यास की।
द्वात्रिंश अक्षर के हिसावै अठसै अनचासकी ॥
इहु छन्द सत अरू उनीसै कही कवि इहु भास की।
सगानु सख्या दोढ जानै, मेघमाल विलास की ॥ २३ ॥

लेखनकाल—२० वीं शताब्दी।
प्रति—पत्र १७। पंक्ति १९। अक्षर ४५। साइज १० × ४॥

(श्री जिनचरित्रसूरि सग्रह)

(९) रमल शकुन विचार। फाल फते की।
आदि—
फाल फते की—अरे यार बहुत दिन चिंता की है अब तेरी फिकर चिंता
मटेंगी रोजी तेरी फणक होगी, अय तू अचित रहणा। जो कहांई

देश परदेश जाणां होई, अथ सौदा करण होई बेचण होई × सगाई करणी होई सौ कीजे, वैगो एक आदमी तेरा वही करता है तो रद् होगा।

अन्त—

राजा प्रजा सुखी बैमार कुं कुसल दर हाल सुं छुटैगा ×
सर्व भला हो॥ सर्व कांम प्रमांण चढ़ैगा।
रमल शकुन विचार समासम शुभं भवतु।

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी। पं० सरूपा लिखतं।

प्रति—पत्र ३। पंक्ति १५। अक्षर ४८। साइज १०×४।

विशेष—इस प्रकार की अन्य कई शकुनावलियें पाई जाती हैं।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१०) शीघ्रबोध वचनिका—

आदि—

विघन कदन वारन वदन, सिद्ध सदन गुण एन।
करहु कृपा गिरिजा सुतन, दीजै बानी बैन॥

लेखनकाल—सं० १९१९।

प्रति—गुटकाकार

विशेष—शीघ्रबोध ज्योतिष ग्रन्थ की भाषा टीका है।

(यति ऋद्धिकरणजी भण्डार, चूरू)

(११) सकुन प्रदीप। जयधर्म। सं० १७६२ आश्विन ५। पानीपत में रचित।

आदि—

स्वस्ति श्री जिन राज मुक्ति मन्दिर वर नायक।
सकल जगत सुखकार सरस मङ्गल बहु दायक॥
सजल जलद सम अङ्ग, विमल छिन छिन गुणधारक।
मथन कमठ शठ मान, इति भय पाप बिधारक॥
सर्पादि राज पद्मावती, जाके वंछित युग चरण।
कर जोरी चहुं नति करत, नित पार्श्वनाथ भव भय हरण॥

अन्त—

शकुन शास्त्र संसार, निरखे श्लोक जु अति कठिन।
श्री जयधरम विचार, संस्कृत ते भाषा करी॥ १९१॥

संवत् सतरै से बीते, बासठ उपरि जान।
आश्विन मित तिथि पचमी, शशि सुत वार बखान। १९२॥
श्री पानीपथ नगर मंझार, जिन धर्मी श्रावक सुखकार।
पुण्यवत महा धनवन्त, दयावन्त अतिहि गुणवन्त॥ १९३॥
आचरहि नित प्रति षट कर्म, श्री मुख भावत पालहि धर्म।
नन्दलाल नन्दन सुभ कार, श्री गोवरधनदास उदार॥ १९४॥
ताके हेत रची यह भाषा, शकुन श्रुत के लेकर शाखा।
शकुन प्रदीप सु याको नाम, महा निर्मल ज्ञान को धाम॥ १९५॥
पण्डित लक्ष्मी चन्द गुरू, ता प्रसाद तें एह।
छन्द रच्यो यह ग्रन्थ शुभ, गोवरधन दास सनेह॥ १९६॥
पढ़त सुनत उपजै मती, मगलीक सुखकार।
सकुन प्रदीप तन्त्र यह, कविजन लेहु सुधार॥ १९७॥

प्रति—(१) जयसलमेर भंडार (अपूर्ण)।
(२) पंजाब भंडार (पूर्ण)।

(१२) सामुद्रिक। पद्य २११। रामचन्द्र। सं० १७२२ माघ कृष्णपक्ष ६। भेहरा।

आदि—

अथ सामु (द्रि) क भाषा लिख्यते। दोहरा—
सरसति समरू चित्त धरि, सरस वचन दातार।
नरनारी लक्षन कहु, सामुद्रक अनुसार॥ १॥
सामुद्रक ग्रन्थ मे कहे, अगम निगम की बात।
इसह जांण जो नर हुवइ, ते होई जग विख्यात॥ २॥
आदि अन्त नर नार की, सुख दुःख बात सरूप।
कुहं अनेक प्रकार विध, सुणो एकत अनूप॥ ३॥
प्रथम पुरूप लक्षण सुणों, मस्तक पद पर्यंत।
छत्र कुंभ सम सीस जसु, ते हुवै अवनी—कंत॥ ४॥

अन्त—

वनवारी वहु बाग प्रधान, यहं वितस्या नदी सुथान।
न्यार वण तिहां चतुर सुजान, नगर भेहरा श्री युग प्रधान॥
वड़े वड़े पाति साह नरिंदा, जाकी सेव करे जन वृन्दा।
पातिसाह श्री ओरंग गाजी, गये गनीम दसो दिस भाजी॥ ८९॥
जाके राज ग्रन्थ ए कीनै, सस्कृत शास्त्र सुगम करि दीनै।
सवत् सतरं से वावीसा, माघ कृष्ण पक्ष छठि जगीस॥ ९०॥

गिरवर माहे सुमेर विराजै, ज्योति चक्र जिम सूरज छाजै ।
गच्छ माहे खरतर गच्छ राजा, जाकै दिन दिन अधिक दिवाजा ॥ ९१ ॥
श्री जिनसिंह सूरि सुखकारी, नाम जपै सब सुर नर नारी ।
जाकै शिष्य सिरोमण कहियै, पद्मकीर्ति गुरु वर जसु लहियै ॥ ९२ ।
विद्या च्यार दस कंठ बखाणें, वेद च्यार को अरथ पिछानै ।
पद्मरङ्ग मुनिवर सुख दाई, महिमा जाकी कही न जाई ॥ ९३ ॥
रामचन्द मुनि इन परि भाख्यौ, सामुद्रिक भाषा करि दाख्यौ ।
जां लगि रहि ज्यो सूरिजी चन्दा, पढहु पढित लहु आणन्दा ॥ ९४ ॥

प्रति—१९ वी शताब्दी । पत्र २ अपूर्ण । हमारे संग्रह मे है । अंत भाग बीकानेर के जिनहर्षसूरि भण्डार के बडल नं० १६ की प्रति से लिखा गया है। यह प्रति सं० १७९९ की लिखित १३ पत्रो की है ।

विशेष—ग्रन्थ मे दो प्रकाश हैं, प्रथम में नर लक्षण मे ११७ पद्य एवं द्वितीय नारी-लक्षण मे ९४ पद्य, कुल २११ पद्य हैं ।

(जिनहर्षसूरि भंडार)

(१३) सामुद्रिक शास्त्र भाषाबद्ध । पद्य १८८ । नगराज । अजयराज के लिये रचित ।

अथ सामुद्रिक शास्त्र भाषाबद्ध लिख्यते ।

आदि—

एक बालक सब लक्षण पूरे, देखत जाई दोष सब दूरे ।
आगम अगम आदि मुनि साखी, ज्यु सामुद्रिक ग्रथे भखी ॥ १ ॥
आगम लछन अग जणावै, सवे ऊरध पूरे फल पावै ।
ताका अथ कहूं विचारा, समझत कहत सुनत सुखकारा ॥ २ ॥

अन्त—

सुगुन सुलछन सुमति सुभ, सज्जन को सुख देत ।
भाषा सामुद्रिक रचौ, अजैराज के हेत ॥ ६६ ॥
जो जानइ सो जान, दाता दोहि अज्ञान फुनि ।
जानवनो अरू दान, अजैराज दुहु विधि निर्पुन ॥ ६७ ॥

इति श्री सामुद्रिक शास्त्रभाषा बद्ध पुरुष स्त्री सुभाशुभ लक्षण सम्पूर्ण ।
लेखनकाल – संवत् १८७४ ना वैशाख सु० १ दिने ।
प्रति—(१) पत्र ८ । पंक्ति १२ से १५ । अक्षर ४० से ४८ । साइज ९॥ × ४।
(२) पत्र १० । पंक्ति ११ । अक्षर ४० । साइज १० × ४।

(३) पत्र २ से ७१ आदि अन्त के पत्र नहीं।

(४) पत्र ४। पंक्ति २१। अक्षर ६०। साइज १२"×५॥। सं० १७५१। उदेई-भक्षित।

विशेष—६२ वे पत्र की अन्त की पंक्ति से कर्त्ता का नाम नगराज जान पडता है।
'नगराज सुगुन लछन अजैराज बूझई सही ॥ ६२ ॥
प्रस्तुत ग्रन्थ में नर लक्षण के पद्य १२१, नारी लक्षण के ६७, कुल १८८ पद्य हैं। प्रति नं० २ में आदि के २ पद्य नहीं एवं ३ अन्य कम होने से १८३ पद्य ही हैं।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१४) इन्द्रजाल चातुरी नाटकी। सं० १९११ लिखित।

आदि—

अथ इन्द्रजाल लिख्यते।

चातुरी भेद विधान में कहो जु तुम से जे सुनियो दे कान रे।
अब चातुरी भेद उपदेस बतावो, पति राखो कुछ छाने रे॥
गोप्य सौ गोप्य चातुरी करणी, जाणे नहिं कोय।
प्रगट करी बात सब बिगडी, कछु न तमासो होय॥

अन्त—

इति सरनो जो इन्द्रीजीत जो होय, इन्द्रीजीत जो होय के रेणा।
गोप्य जो सोई हडण जो जन, १२ के आणी जुग में जे सारा॥
इति युक्ति सु रहिके जाणा जु खि सोही।

इति इन्द्रजाल चातुरी नाटकी सम्पूर्ण।

लेखन—संमत् १९११ मार्गशीर्ष कृष्ण ७ रविवासरे।

प्रति—पत्र २४। पंक्ति १९। अक्षर २०। साइज ६॥×८॥

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१५) इन्द्रजाल (नाटक चेटक)

आदि—

अथ तालक लोह हरताल अनुक्रम लिख्यते।

नागर वैल का पांन कै मध्यें काथो मासा १ हरताल मासा २ छाल चावीजें पीक वामण मे थूकतां जाय निगले नहीं।

अथ नाटक भेद लिख्यते ।

करता करता जुग साचे सांई, मूरख अपनी लोक जानत नाई ।
कहेता हूँ बात तू सुनरे प्यारे, सब घट व्यापिक सौ तो सबसों न्यारे ॥ ॥
मन्त्र यन्त्र तन्त्र तें सुनले सारे, नाटक को भेद अब कहूँगा रे ।
टूटे अग्यांन अरु खूटे तारे, दिल की जो संसै सब दूर डारे ॥२॥

अथ चेटके भेद लिख्यते—

दोहा

तुम कूं कहि सरवन सुनी, सरवे नाटक भेद ।
अब चेटक उपदेश कर, मिटे जीव को खेद ॥१॥

अन्त—

मुख सु बोलो बात यह, जो गहको हुय जाय ।
तब कपड़ा फाड़त फिरे, कछु न लागे उपाय ॥७८॥

अथ दीपावतार लिख्यते इन्द्रजाल प्रियोग ।

लेखन काल—२० वीं शताब्दी ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र ३५ । पंक्ति १० । अक्षर १५ । साइज ४॥ × ३।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१६) इन्द्रजाल—

आदि—

अथ इन्द्रजाल लिख्यते ।

गुरु बिन ज्ञान नहीं ध्यान नहीं हर बिनु नर बिन मोक्ष न मुक्ति रे ।
करनी करनी सार सकल में, इस विध भाखे उक्ति रे ॥१॥
इन्द्रजाल माल इह गुन की, गुरु गम नहीं पावे रे ।
वेद पुरन कुरान में नाहीं, व्यास न जानी बातें रे ॥२॥
प्रथम भेद वेद को सारो, सोह मन्त्र लेखे रे ।
आसन पदम सदन माँहि बैठे, सूर चन्द्र घर ल्यावे रे ॥३॥

आसन सयम यतन विध, साध वाद विवाद कछू नधि बाद ।
मन्तर जन्तर तन्तर सारे, नाटिक चेटिक कहस्यूं रे ॥
विधि विधान चातुरी वेदक, कोक निरन्तर कहस्यों रे ।
सादा बांदा तस्कार विद्या, जोति रूपक सारे रे ॥
कहत हम तुम सुणे महेश्वर, यही धरद तुम पालो रे ।

अन्त—

छटाक खस-खस, सबा तोले खल सुस, साढ़े सात मासे वंस लोचन, पांच मासे गऊ रोचन, पांच मासे सुहागा, चार मासे नर कचुर, चार मासे नौसादर, चार मासे शहद खसपी बारीक सवकु पीस मिलाय सहद मिलाय पीस गोली चण प्रमाण की करे। मसाण की दवा पानी में घाल प्यावे।

लेखनकाल—१९११ के आसपास।

प्रति—पत्र ६९। पक्ति १९। अक्षर १९। साइज ६॥×८॥

विशेष—इसमें मंत्र जंत्र तंत्र वैद्यक का समावेश है।

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(१७) इन्द्रजाल—

आदि—

कौतिक या संसार के, वरणि जाय नहिं एक।
जितने सुने न देखिये देखे सुने अनेक॥

प्रति—गुटकाकार।

(यति रिद्धिकरणजी भंडार, चूरू)

(१८) योग प्रदीपिका (स्वरोदय)। पद्य ६९०। जयतराम। सं० १७९४ आश्विन शुक्ला १०।

अन्त—

सवत सतरा से असी अधिक चतुर्दश जान।
आश्विन सुदी दशमी विजै, पूरण ग्रन्थ समान॥९०॥

लेखनकाल—सं० १९४४ फागुण सुदी १३। फलोदी।

प्रति—पत्र २८।

(श्रीचन्दजी गधैया संग्रह, सरदार शहर)

(१९) रमल प्रश्न—

आदि—

अथ रमल प्रश्न—

साधु चंद्रमा उगे तिण दिन थी दिन गिणीजे शुभ दिने रमल का जायचा देखणा १६ ही घर मे देखिये लहीयान किमे घर किसी पडी है उस घर से विचार होय तैसी

बात कहणी पहली सकल कुं देखीयै ऐही ऐसी सकल कहां पड़ी है जैसा घर मै होय तैसी हुक्म करणा प्रथम चोर प्रश्न चोर की बात पूछे चोर किस तरफ गया है।

मध्य—

सातमै घर में जैसी सकल होय तैसी और जैती जायगा होय तितरे चोर, चोर सकल १ चोर घर मै आय पड़ी तो आदमी लम्बा खुबसूरत मुसलमान है दाढ़ी बड़ी है कान वडै हैं नाक ऊँचा है जवां साफ है मुह सिर ऊपर तिलसमां की सहिनांणी है लाल सफेद रंग है इति प्रथम ॥१॥

अन्त—

नेस खारज है तो पाछा देती वखत झगडा सै दैगा। सावत दाखल है तो उधारा दैणा नहि दिया तो जावैगा नेक मुनकलवा होय तो घणा मांगे तो थोडा दीजे ॥५२॥

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—(१) पत्र १९। पंक्ति १२-१३। अक्षर २९ से ३४। साइज पत्र ९ १०×४।; पत्र १० से १९ इंच ८॥×४॥

(अभय जैन ग्रंथालय)

(२०) स्वरोदय—चिदानन्द। सं० १९०५ आश्विन शुक्ला १० शुक्रवार।

आदि—

नमो आदि अरिहंत, देव देवन पतिराया,
जास चरण अवलम्ब गणाधिप गुण निज पाया।
धनुष पंच संत मान, सप्त कर परिमित काया,
वृषभ आदि अरु अन्त, मृगाधिप चरण सुहाया।
आदि अन्त युत मध्य, जिन चौवीश इम ध्याइये,
चिदानन्द तस ध्यान थी, अविचल लीला पाइए ॥१॥

अन्त—

कह्यो एह संक्षेप थी, ग्रन्थ स्वरोदय सार।
भाणे गुणे जे जीव कुँ, चिदानन्द सुखकार ॥४५२॥
कृष्ण साखी दशमी दिन, शुक्रवार सुखकार।
निधि इन्दु सर पूरणता, चिदानन्द चित धार ॥४५३॥

(प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रंथालय)

(२१) स्वरोदय । पद्य १३० । मयाराम (दादू पंथी) । जहांनाबाद ।

आदि—

अथ ग्रंथ सरोदो लिख्यते ।

दोहा

सत चित आनन्द रूप है, अचप अचपळ जोय ।
नमसकार ताकूं करूँ, कारज सिद्ध जुं होत ॥१॥
गुरु दादू कुं सुमर नित वनवारी सिर नाय ।
कव अखयर धर साध सब, हूँ जो सळ सिहाय ॥२॥
अचारज सिव जानीये, प्रगट किया जग सोय ।
नाम सरोदै ग्रन्थ को, मैं वरण्यों अब सोय ॥३॥

अन्त—

दादू पन्थी सुद्ध उपासी, जहाँनाबाद जू दिल्ली वासी ।
जिन जो जुगत भली यहुं आनी, मयाराम जांनी ॥१३०॥

लेखनकाल—२० वीं शताब्दी ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र १९ । पंक्ति १० । अक्षर १७ । साइज ४॥ × ३।

(अभय जैन ग्रंथालय)

(२२)स्वरोदय— । पद्य २७ । वल्लभ ।

आदिः—

बुद्धि विमल दीजै कविहि, स्यो सुगुन सुभ छन्द ।
कथौं सुरोदय ज्ञान कछु, गुरु गणपति पग वंदि ॥ १ ॥

× × ×

जैसें दधि तै माखन लीजै, छांडि हल'हल अमृत पीजै ।
मथि के सकल सुरोदय ग्रथ, रच्यौ सुलभ स्यों भाषा पन्थ ॥ २६ ॥

दोहा—

सस्कृत बानी कठिन, समझत पंडित राज ।
सुगम ग्रन्थ वल्लभ रच्यौ, हृदयराम कै राज ॥ २७ ॥

इति सुरोदय नक्षत्रमाला ।

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी ।

प्रति— पत्र १ । पंक्ति १६ । अक्षर ५० । साइज १० × ४

(अभय जैन ग्रन्थालय)

(२३) स्वरोदय। वैकुण्ठदास।

आदि—

दोहा—

ज्योतिष दीपक जगत में, जो प्रापत किह होय।
जाके पढ़े मनुष्य को, गुह्य सुगम सब लोय ॥ १ ॥
मूक प्रश्न गर्भ त्रय, मेघ घमाघम जानि।
लाभालाभ सुख दुःख जो, वैकुंठ सत करे मानि ॥ २ ॥

अन्त—

ससि स्वर ससि बुध सुक्र है, प्रश्न करे जु कोय।
असुभ नास सुभ होयगी, स्वर परीच्छा सच होय ॥ ५९ ॥

इति स्वर प्रिच्छा वैकुण्ठदास कृत स्वरोदय।
लेखनकाल—सं० १९१७ मि० वि० १।

(बृहद् ज्ञानभंडार)

(२४) स्वरोदयः —। दोहा ६४।

आदि—

सिवचरण करि वन्दना, ज्ञान सुरोदय देह।
प्राण पाय इड़ा पिंगला, असुभ फल लेह ॥ १ ॥

अन्त—

दाहिनी नाड़ जब ही बहे। कय तत्व आगिनी तत्वकहे॥
जामे जो चाले अरू आवे। निहचे सो नर नासही पावे ॥ ६४ ॥

(बृहद् ज्ञान भंडार)

(२५) स्वरोदय भाषा (गद्य)

आदि—

अथ सरोदो लिखते भाषाकृत

दोहा—

पठन बीज पुसतग तहां, पिंड ब्रह्मंड बखानो।
तत्व ज्ञान सुरदसौ निवर्ति प्रवरती जामो।
पिंडे सो ब्रह्म हे प्रथमी तत्व फेरि दोठ सूर पच पंच तत्वन के पंच पंच भेद।

मध्य—

जो सूर जानतो नहीं होय तौ नेत्रम की कोर सौं आरसी में जानिये।

तत्व कान नाक नेत्र मूदे। अगुरोया तो पाछे खास मारे। नैत्रन की कोर खोलि दिखाय। तत्व पहिचाने मडल परे सो जानिये।

× × ×

अन्त—

विश्वासी होय ज्ञाति स्वमन होइ बात सत्य कहे दुष्ट की संगति न करे निन्दक की संगति न कर ताकुं यह स्वरोदय ज्ञान दीजे। इति श्री शिव शास्त्र स्वरोदय संपूर्ण।

लेखन-काल—लिखित जीवण सं० १९५७ मी आसोज वदि ११ वार बुधवासरे सहर करोली मध्ये संपूर्ण ॥

प्रति—पत्र ४। पंक्ति १६ से २३। अक्षर ४३ से ५५। साइज १०×४॥

(अभय जैन-ग्रन्थालय)

(२६) स्वरोदय भाषाटीका।

आदि—

शिव कु नमस्कार करिके देहस्थ ज्ञान कहतु—पु और इडा-पिंगला
नाडी तिनके योग थे भावी शुभाशुभ फल—ऐसो स्वरोदय कहत है।

अन्त— अर्थ—

निश्चह बैठि के अजलि मध्ये ले मोर आगे उचो डारियो तब
जिनको दफल गिरे सो पूर्ण अङ्ग वूझिवै। याथे शुभाशुभ
विचार करणा। इति स्वरोदय विचार लिखितं ॥ १ ॥

विशेष—६६ संस्कृत श्लोकों का अर्थ

लेखनकाल—१८ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ११। पंक्ति १३। अक्षर २६। साइज ८×४॥

(अभय जैन-ग्रन्थालय)

(२७) स्वरोदय भाषाटीका। लालचन्द। सं० १७५३ भा० सुदि। अक्षयराज के लिये रचित

आदि—

अथाग्यत् संप्रवक्ष्यामि शरीरस्य स्वरोदयं।
हसचार स्वरूपेण येन ज्ञान त्रिकालज ॥ १ ॥

टीका—

अब मैं स्वरोदय विचार कहूँगा आपुनै शरीर मैं जो व्याप रह्या है। स्वरोदय का नाम हंसचार कहीये जिण हंस चार जाणये तें भूत १, भविष्यत २, वर्तमान ३, त्रिकाल ज्ञान जाणिये ॥ १ ॥

अन्त—

पीत वर्ण बिन्दु की चमत्कार दीसे तो सावेर पृथ्वी तत्व वहै है। स्वेत वर्ण बिंदु दीसे तो पानी तत्व वहै है, कृष्ण बिन्दु दीसै तो पवन तत्व वहै है,रक्त बिंदु दीसे तो अग्नि तत्व वहै है। इति स्वरोदय शास्त्री भाषा समाप्त।

दोहा—

नाम स्वरोदय शास्त्र की, विचित्र।
याकी अर्थ विचारणा, नीकै करियो मित्र ॥ १ ॥
संवत् सतरै त्रेपनै, भादव को पख सेत।
लालचन्द भाषा करी, श्री अखयराज कै हेत ॥ २ ॥
सहज रूप सुन्दर सुगण, कवित्त चातुरी शक्ति।
जाकै हिरदै नित वसै, देव सुगुरु की भक्ति ॥ ३ ॥
अखयराजजी अति निपुण, बहु विधि विद्यावत।
अक्षयराज प्रताप जसु, सदा करौ भगवन्त ॥ ४ ॥

लेखनकाल—१९ वीं शताब्दी।

प्रति—पत्र ६ (अंतिम पृष्ठ खाली)। पंक्ति १४। अक्षर ५०। साइज ८॥ × ३॥

(महिमाभक्ति भंडार)

(२९) स्वरोदय विचार (गद्य)

आदि—

अथ स्वरोदयरो विचार लिख्यते ॥ ईश्वरोवाच ॥

हे पारवती ! अब मैं सरोदय को विचार कहूंगा जिस सरोदय से भूत भवद्द (भविष्य) तथा वर्तमान तीनो काल की खबर पडे फेर आपणे शरीर में जो कुछ व्यापार होवे है तिस का नाम हंसाचार कहियै।

विशेष—प्रस्तुत प्रति २ पत्रो की अपूर्ण है। १९ वीं शताब्दी की लिखित है। इसी प्रकारअन्य एक अपूर्ण प्रति है, उसमे पाठ भिन्न प्रकार का है।

यथा—"श्री महादेव पारवतीरो सिरोघो लिख्यते—

"महादेव पारवती नै सुणावै छै अथ वारता है सो कहत हुं। हंस रूपी देह मे है सो तोनुं कहुं छूं तूं सुण सीख ज्युं कालरूपी होय ज्युं। हेपारवती ए गुप्त वारता है गुज्य वारता है तंत सार है सो तो नें कहुं छूं।

प्रति—इस प्रति के ५ पत्र हैं, अन्त के पत्र प्राप्त न होने से अपूर्ण है।

(अभय जैन-ग्रन्थालय)



(ठ) हिन्दी ग्रन्थों की टीकाएं

(१) विद्यापति कृत कीर्तिलता की संस्कृत टीका।

आदि—

श्री गोपाल गिरा पंगुरपि शैलं विलंघते।
तदादेशवशादेषा क्रियते मगलैरलम् ॥ १ ॥
तिहुअणेत्यादि त्रिभुवन क्षेत्रे किमिति तस्य कीर्तिवल्ली प्रसारिता।
अक्षर संभारस्तं यदि मंचेन बध्नामि ततोहं भणामि निश्चितं।
कृत्वा यादृशं तादृश काव्यम्।

× × ×

श्रोतुर्ज्ञान वदान्यस्य कीर्तिसिंह महीपते।
करोतु कवित. काव्यं भव्य विद्यापतिः कविः ॥ ५ ॥

अन्त—

शुभ मुहूर्ते अभिषेक. कृतः बान्धव जनेन उत्साहकृतः
तीरभुक्त्या प्राप्तो रूपः पातिसाहेन य " कृतं कीर्तिसिंघो
भवद्भूपः। इति चतुर्थपल्लवः इति कीर्तिलता समाप्ता।

× × ×

श्री श्रीमद्गोपालभट्टानुजेन श्री सुरभट्टेन स्तम्भतीर्थे लिखापितमिदम्।

लेखन-काल—नेत्र (२) नग (७) रसो (६) रभीभी (१) मितेब्दे विक्रमा धु" " 'र्ये असिते स्वष्टयां विखितं भृगुवासरे।

प्रति—पत्र २२। पंक्ति १२। अक्षर ६०। साइज १४ × ६

विशेष—मूल ग्रन्थ का आद्य पद इस प्रकार है।

. तिहुअण खेत्तहि कांइ तसु, किति वल्लि पसरेइ।
आखर खम्भारम जउ मंचा बंधि न देइ ॥ १ ॥

(अनूप संस्कृत पुस्तकालय)

(२) विहारी-सतसई की संस्कृत टीका। वीरचन्द्र शिष्य परमानंद। र० १८६० माघ। वीकानेर।

आदि—

नत्वा श्रीशं जिनाधीशं, श्रीपार्श्वं पार्श्वसेवितं।
विहारीकृतग्रन्थस्य, वक्ष्ये व्याख्या (ख्यां) सुबोधिकां॥ १॥
मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरी सोइ।
या तन की झांई परई, स्याम हरित दुति होइ॥ २॥

व्याख्या

सा राधा नाम्नी नागरी मम भव बाधा हरतु यस्य राधायाः तनोर्द्युतिः पतति कृष्णा काये तदा श्यामवर्णः हरित द्युतिर्भवति कृष्ण शरीर कान्ति। कृष्णा राधाया गौर वर्ण तथा मिश्रिता हरित द्युतिर्भवति गौरवर्ण। मिश्रिता श्यामवर्णौ हरिद्भवतीति प्रसिद्ध द्वितीयोर्थः—स राधा नागरिः नामकः कृष्णो मम भव बाधा हरतु यस्य कृष्णस्य तनु द्युतिर्यत्र नरे पतति तदा श्याम पापं हरि दूरास्यात् तद्युति तत् द्युतिः स्यात्॥ तृतीयार्थस्तु—वैद्यं प्रति रोगिण उक्तिः—हे वैद्य मम भवबाधा रोग वा हरतु तदा वैद्ये-नोक्तं राधा नागरि सोई राधा शुठि नागरि मोथ सोई सिन्धु सो वा यात नै। कृष्ण झाई पतति सा हरि सतैं भैषजैः दूरी स्यात् तद्युति होय सा पूर्वोक्ता द्युतिः तद्युति स्यात् तुर्यार्थस्तु कृष्णशरीर द्युतिनाश्रित्य हरित द्युतिरूपमेव॥ १॥

अन्त—

जद्यपि है सोभा घनी मुक्ता हल मे लेख।
गुहौ ठौर की ठौर तें उरमें होत विसेख॥ ७११॥
इति विहारीलाल कृत सप्त सतिका सम्पूर्णम्॥
देखो प्यारी ऊठकै वर अथो है द्वार।
चन्द्रवदनी सुणिकै ऊठी हरसत हर्ष अपार॥ इत्यादक्षरः॥
व्योमरूकच्छमुखेभकास्यतिमिते सवत्सरे वत्सरे
माघे मास शुक्लदले धनंजयतिथौ देवेज्यवारे वरे।
हर्म्यव्यूह विभूपते जित कुवेराधिष्ठित स्थानके।
श्रीमत्सूरतसिंह भूप विहितैश्वर्ये पुरे विक्रमे॥ १॥
श्रीमन्नागपुरीय लुंपकगणे राकाब्जवन्निर्मले।
श्रीलक्ष्मीन्द्र गणाधिपे सुविदिते गच्छे सतां विश्रुति।
श्रीमच्छ्रीमुनि राजसिंह गुरव. सद्धामनामानुगाः।
तच्छिष्या गुणरत्न रत्न सरणाः विद्वल्ललाटंतपाः॥ १॥
श्रीमत्तीर्थं कर प्रणीत समय श्रद्धालवः सूरताः।
कार्याकार्य विचार सारनिपुणा श्री वीरचन्द्राह्वया.।

तत्पादांबुजरेणु राजमनुज प्रामोदकाराय वै ।
नाना स्वादुभृतां व्यक्त परमानंदः परा मोदतः । ३ ।
माथुरीय द्विकुले विहारी ब्राह्मणो भवेद्
तद्विनिर्मितग्र न्थस्य पथ्यां तथ्यां रसान्वितं । ४ ।

इति विहारीसप्तसतिकावृत्तिः समाप्ताः ॥

लेखन काल—सं० १८८७ मिती फागुण वदि ७ तिथौ शुक्रवारे श्रीमद्विक्रमपुरे श्रीकीर्तिरत्नसूरिशां (सं) तानीय वा श्री मयाप्रमोदजिद् गणिः तच्छिष्य पं० लब्धि विलाश लिखितं ॥ श्री ॥

प्रति—पत्र ५३ । पंक्ति १७—१८ । अक्षर ५० । साइज ९।।। × ४।।।

(वर्द्धमान भंडार)

(३) (केशवदास कृत) रसिक प्रिया की टीका। समर्थ । सं० १७५५ श्रावण सुदि ५ सोमवार । जालिपुर ।

आदि:—

अथ रसिकप्रियायाः वर्त्तिलिख्यते—

गीर्वाणनाथ विनतोद्भुत मौलिमाला, माणिक्य कांति सुविशिष्ट नखांशुजालां ।
कल्याणकंदमतुलं नवनीरदाभं स्तौमि प्रभुं सुफलवद्धिपुरस्य पार्श्वम् । १ ।
कुँदेन्दुहार निकरोज्वलचारुवर्णा वीणा सु पुस्तकधरा कमला सवर्णा ।
श्वास्तेतनीर जवरासन संशिता च ज्ञानप्रदा भवतु मोखलु सारदा सा । २ ।
राधा तनुच्छवि भरा वलितो मुरारिः संराजते हरितवर्ण तनुर्हतारिः ।
श्यामन्मुदा ललितकांति धरां च राधां सो मे प्रभुर्हरतु भूरि भवस्य बाधां । ३ ।
श्रीसद्गुरुः सुमतिरत्न गणि प्रधानः कारुण्यपुण्यनिलयो महिमा निधानाः ।
तत्पादयुग्म सरसीरुहलीनभृंगः शिष्यः समर्थ विबुधो वरवाक् तरङ्गः । ४ ।
गुरोः प्रसादादधिगम्य भावं कुर्वे सुवृत्तिं रसिकप्रियायाः ।
विशिष्ट भावामृतपूरितायाः प्रमोदनो नाम मनः प्रमोदात् । ५ ।
सर्व्वा सुभापा सुविशेष रम्या व्रजस्य भापा ललिता सुवाणी ।
सुखेरसुखे भिस्ततरार्थ सद्भावदं प्रवक्ष्ये खलु संप्रदायात् । ६ ।
प्रायशो व्रजभापायाः केनापि न कृता पुरा ।
सुसंस्कृत मयी टीका सुगमार्थं प्रवोधिनी । ७ ।

इह खलु ग्रंथारंभे कविः श्री केशवदासः शिष्ट समय परिपालनाय स्वाभिमत फलसिद्ध्यर्थं प्राप्तिरिप्सित ग्रन्थ प्रतिबंधक विघ्नविघातकं विशिष्ट शिष्टाचारानुमिति श्रुतिबोधात्मकं समुचितेष्टदेवता श्री गणेशस्तुति कथन द्वारा मंगलमाचरति । एकरदनेति—तथा च ग्रन्थादौ विषयप्रयोजन सम्बन्धाधिकार चतुष्टयमवश्यं वाच्यं तत्र शृंगारादिरसवर्ण

विषय प्रयोजनं च रसिक जनमनःप्रमोदापत्तिः वाच्यवाचकभावःसम्बन्धःजिज्ञासुरधिकारी चेति अपि च अपारसंसारपारावार बहुल भवभ्रमणावर्त पतित प्राप्तातर्कितेपस्थितमनुष्यावतारस्य लब्ध घुणाक्षरप्रकारस्य प्राणिनः फलं द्वयं भोगो योगश्च तत्राद्यः भुज्यते शब्दादिभिरिति भोगः सुखं यदमरः भोगः सुखेस्त्र्यादि भृतावहेश्च फणिकाययोरिति।

अन्त—

सुर भाषा तें अधिक है, व्रज भाषा सौं हेत।
व्रज भूषण जाकौं सदा, मुख भूषण करि लेत ॥१७॥

व्याख्या—

सुर भाषा संस्कृत भाषायाः सकाशात् व्रजभाषा अधिकास्ति व्रजभूषण कृष्णास्त स्वमुखं भूषयति यस्याः पठनात् मुख शोभा भवतीत्यर्थः ॥१७॥

इति श्री सकल वाचक चूड़ामणि वाचक श्रीमति रत्नगणि शिष्य पण्डित समर्थाह्लेन विरचितायां रसिकप्रिया टीकायां अनरस वर्णनो नाम षोडशः प्रभावः।१६। समाप्तोयं रसिकप्रिया भाषाग्रन्थ—ग्रन्थाग्रन्थ १६००

श्री वीर तीर्थेश जिनाग्रणीतः तुर्यार कांते गणवो बभूव।
स्वामी सुधर्म्मा कृत साधु कर्म्मा चतुष्टय ज्ञानधरो धरायां ॥१॥
तस्यैव सत्साधु परम्परायामशीनि चत्व रि गणाः बभूवु।
तेषु प्रधानः खलु चन्द्र गच्छः राका शशांकादधिकोहि स्वच्छ ॥२॥
राज्ये शुभं श्री जिनचन्द्रसूरेः सौभाग्य भाग्योदित रत्न मौलेः।
सदामुदाशं ददतो मुनीनां महीक्षितानामपि पूजितस्य ॥४॥
श्रीमत्सागरचन्द्र सूरिरवत् तस्मिन् गणे शुद्ध धीः।
स्फूर्त्तिर्यस्य जिनागमे च महती वारांनिधि ज्योतिषः।
साध्वाचार रतो विशुद्ध हृदयो लब्ध प्रतिष्ठो महान्।
यस्मै क्षेत्र पति र्बभूव सततं धीरः सहायी सदा ॥५॥
तन्नाम शाखा प्रभृता गरिष्टा न्यग्रोधशाखे परसेर्वरिष्टा।
तत्पाद राजीव प्रकाशनोद्यत् प्रद्योतनो निर्जित मोहमल्लः ॥६॥
भुवन रत्न मुनीश्वर सुन्दरः प्रवर साधु गुणोत्कर बन्धुरः।
सम जनिष्ट ततो मुनि पुंगवो विमल कीर्ति समुज्वल वैभवः ॥७॥
सूरि स्ततो भूप्य सुधर्मरत्नो विशुद्ध बुद्धि कृत धर्म्म यत्नः।
रत्नाकरो निर्मल सद्गुणानां महां च मान्योखिल सज्जनानां ॥८॥
श्रीमानुपाध्याय पदाभिरामो पुण्यादिमो वल्लभ पूर्ण कामः।
धर्म्मं त्रिमी हर्ष सुधामिमूर्त्तिः सत्वानुकंपा शुभ चित्त वृत्तिः ॥९॥
तत्पाद पंकेरु ह संस्पृहालुः दयादि धर्म्मो विबुधो दयालुः।
ताच्छिस्स मुख्यो खिल शास्त्र पद्मा वर्यो मुनीनां स्वधर्म सद्मा ॥१०॥

तदीय शिष्यो मुनिरत्न धीरो गुणैः समुद्रादपि यो गभीरः ।
ततो बभौ वाचक वर्य्य धुर्य्यो ज्ञानप्रमोदो द मंत्र वीर्य्य ॥११॥
षट् तर्काद्भुत बोध युक्ति कुशलो वाचां गुरोः सन्निगः ।
वर्हिष्णु प्रतिमाभिमान विलसद्वादीभ पंचाननः ।
निष्णातो निखिलागमेषु विमलै मंत्रे गंज स्तंभकृत् ।
विख्यातो भुवने गरिष्ट महिमा ज्ञानप्रमोददो गुरुः ॥१२॥
तेषां हि शिष्यो गुणनंदनारथः सच्छील युक्तो भव नीरजाक्षः ।
वैराग्यतस्त्यक्त गृहस्थभार श्रीवाचको ऽभूत् विदितार्थ सारः ॥१३॥
तदीय पक्षैरव पार्वणेंदुः सद्वाक्य धारामृत तुल्य विंदुः ।
गुणे न्द्रियो यो महिमा गरिष्टः श्रेष्टः सुधी साधु गणे वरिष्टः ॥१४॥
समय मूर्ति गुरुजित मेतायः सकल नागर रंजित सत्कथः ।
परम धम्मरतः करुणालयः सुपद वाचकतां जगृहे भयः ॥१५॥
तच्छिस्यौ पृथग्नुः श्रेष्टो वाचकस्य पदोत्तमं ।
मुख्यो हि नेमहर्पश्च मतिरत्नो महामुनिः ॥१६॥
गुरुमंद्रीयो मतिरत्न नामा शीतांशु बिंबादपि योहि सौम्यः ।
स्वार्थस्य बुद्धिः परमार्थ सिद्धौ गुणेन्द्रियो जागृत हस्त सिद्धि ॥१७॥
तदीय शिक्षैर्गुरुभक्ति दक्षै विंद्वत् समर्थै विदितागमार्थै ।
व्यधायि वृत्ती रसिक प्रियायाः दक्षो चिता सम्य मनोरमायाः ॥१८॥
पुपा विशेषा द्विकरार्थं युक्ता व्रजस्य भाषा सरसा सुरम्या ।
नष्यार्थ भावोद्घटनासु शक्ताः तस्मात् विशोध्याः कविभि' पुराणैः । १९॥
संवद्बाण शराब्धि शीतगुर्मिते मासे शुभे श्रावणे ।
पंचम्यां शशिवासरे शुभ दिने पक्षे लसत्मोज्वले ।
श्री मज्जालिपुरे सदा सुख करे सिंधोस्तरे सुन्दरे ।
तत्रालेखि समर्थ साधुभिरियं वृत्ति मनोमोदिनी ॥२०॥
यावन्मेरु धरा पीठे यावत्तिष्टति मेदिनी ।
तावन्नंदतु टीकेयं साधु शब्दार्थ सुंदरा ॥२१॥
अदृष्टदोषान्मतिविभ्रमाद्वायत्किंचिदूनं लिखितं मयात्र ।
तत्सर्व मार्य' परिशोधनीयं संतोयत' सर्व हितैषिणो वै ॥२२॥
मंगलं लेखकस्यापि पाठकस्यापि मंगलं ।
मङ्गलं सर्व लोकानां भूमि भूंपति मङ्गलं ॥२३॥
तैलाद्रक्षेज्जलाद्रक्षेत् रक्षेत् शिथिल बंधनात् ।
परहस्त गतां रक्षेदेव वदति पुस्तिका ॥२४॥
भग्न दृष्टि कटि ग्रीवा चाधो दृष्टि रधो मुखं ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परि पालयेत ॥२५॥

लेखन काल—संवत् १७९९ वर्षे आश्विन मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ भृगुवारे

विषय प्रयोजनं च रसिक जनमनःप्रमोदापत्तिः वाच्यवाचकभावःसम्बन्धःजिज्ञासुरधिकार चेति अपि च अपारसंसारपारावार बहुल भवभ्रमणावर्त पतित प्राप्तातर्कितेपस्थितमनुष्या वतारस्य लब्ध घुणाक्षरप्रकारस्य प्राणिनः फलं द्वयं भोगो योगश्च तत्राद्यः मुख्य शब्दादिभिरिति भोगः सुखं यदमरः भोगः सुखेस्त्रयादि भृतावतेश्च फणिकाययोरिति।

मूल—

सुर भाषा तें अधिक है, ब्रज भाषा सौं हेत।
ब्रज भूषण जाकों सदा, मुख भूषण करि लेत ॥१७॥

व्याख्या—

सुर भाषा संस्कृत भाषायाः सकाशात् ब्रजभाषा अधिकास्ति ब्रजभूषण कृष्णस्त स्वमुखं भूषयति यस्याः पठनात् मुख शोभा भवतीत्यर्थः ॥१७॥

इति श्री सकल वाचक चूडामणि वाचक श्रीमति रत्नगणि शिष्य पण्डित समर्थो ह्लेन विरचितायां रसिकप्रिया टीकायां अनरस वर्णनो नाम षोडशः प्रभावः।१६ समाप्तोयं रसिकप्रिया भाषाग्रन्थ—ग्रन्थाग्रन्थ १६००

श्री वीर तीर्थेश जिनाग्रणीतः तुर्यार कांते गणवो बभूव।
स्वामी सुधर्म्मा कृत साधु कर्म्मा चतुष्टय ज्ञानधरो धरांया ॥१॥
तस्यैव सत्साधु परम्परायामशीति चत्व रि गणाः बभूवु।
तेषु प्रधानः खलु चन्द्र गच्छः राका शशांकादधिकोहि स्वच्छ ॥२॥
राज्ये शुभं श्री जिनचन्द्रसूरेः सौभाग्य भाग्योदित रत्न मौले।
सदामुदाशं ददतो मुनीनां महीक्षितानामपि पूजितस्य ॥४॥
श्रीमत्सागरचन्द्र सूरिरवत् तस्मिन् गणे शुद्ध धीः।
स्फूर्त्तिर्यस्य जिनागमे च महती धारानिधि ज्योतिषः।
साध्वाचार रतो विशुद्ध हृदयो लब्ध प्रतिष्ठो महान्।
यस्मै क्षेत्र पति र्बभूव सततं धीरः सहायी सदा ॥५॥
तन्नाम शाखा प्रभृता गरिष्टा न्यग्रोधशाखे वरसेवरिष्टा।
तत्पाद राजीव प्रकाशनोद्यत् प्रद्योतनो निर्जित मोहमल्लः ॥६॥
भुवन रत्न मुनीश्वर सुन्दरः प्रवर साधु गुणोत्कर बंधुरः।
सम जनिष्ट ततो मुनि पुंगवो विमल कीर्ति समुज्जवल वैभवः ॥७॥
सूरि स्ततो भूय सुधर्मरत्नो विशुद्ध बुद्धि कृत धर्म्म यत्नः।
रत्नाकरो निर्मल सद्गुणानां मह्यां च मान्योखिल सज्जनानां ॥८॥
श्रीमानुपाध्याय पदाभिरामो पुण्यादिमो वल्लभ पूर्ण कामः।
धर्म्म र्मिमी हर्ष सुधाभितृप्तिः सत्वानुकंपा शुभ चित्त वृत्तिः ॥९॥
तत्पाद पकेरुह सत्पृहालु दयादि धर्म्मो विबुधो दयालु।
ताच्छिष्य मुख्यो खिल शास्त्र पद्मा वर्त्तो मुनीनां स्वधर्म सद्मा ॥१०॥

तदीय शिष्यो मुनिरत्न धीरो गुणैः समुद्रादपि यो गभीरः ।
ततो बभौ वाचक वर्य्य धुर्य्यो ज्ञानप्रमोदो द मंत्र वीर्य्यं ॥११॥
षट् तर्काद्भुत बोध युक्ति कुशलो वाचां गुरोः सन्निगः ।
वर्हिष्णु प्रतिमाभिमान विलसद्वादीभ पंचाननः ।
निष्णातो निखिलागमेषु विमलै मंत्रे गंज स्तंभकृत् ।
विख्यातो भुवने गरिष्ट महिमा ज्ञानप्रमोदद्दो गुरुः ॥१२॥
तेषां हि शिष्यो गुणनंदनारथः सच्छील मुक्तो नव नीरजाक्षः ।
वैराग्यतत्सपक्त गृहस्थभार श्रीवाचको ऽभूत् विदितार्थं सारः ॥१३॥
तदीय पत्कैरव पार्वणेंदुः सद्वाक्य धारामृत तुल्य विंदुः ।
गुणे न्द्रियो यो महिमा गरिष्टः श्रेष्टः सुधी साधु गणे वरिष्टः ॥१४॥
समय मूर्ति गुरुज्जित मेतायः सकल नागर रंजित सत्कथः ।
परम धर्म्मरतः करुणाकयः सुपद वाचकतां जगृहे भयः ॥१५॥
तच्छिस्यौ द्वधतुः श्रेष्टौ वाचकस्य यशोत्तमं ।
मुख्यो हि नेमहर्षश्च मतिरत्नो महामुनिः ॥१६॥
गुरुमंद्रीयो मतिरत्न नाम्ना शीतांशु बिंबादपि योहि सौम्यः ।
स्वार्थस्य बुद्धिः परमार्थ सिद्धौ गुणेन्द्रियो जागृत हस्त सिद्धि ॥१७॥
तदीय शिक्षैर्गुरुभक्ति दक्षै विंद्वत् समर्थै विदितागमार्थैं ।
व्यधायि वृत्ती रसिक प्रियायाः दक्षो चिता सम्य मनोरमाया ॥१८॥
एषा विशेषा द्विकरार्थं युक्ता भ्रजस्य भाषा सरसा सुरम्या ।
नव्यार्थं भावोद्घटनासु शक्ताः तस्मात् विशोध्याः कविभिः पुराणैः । १९॥
संवद्बाण शराब्धि शीतगुर्मिते मासे शुभे श्रावणे ।
पंचम्यां शशिवासरे शुभ दिने पक्षे लसत्सोज्वले ।
श्री मज्जालिपुरे सदा सुख करे सिंधोस्वरे सुन्दरे ।
तत्रालेखि समर्थं साधुभिरियं वृत्ति र्मनोमोदिनी ॥२०॥
यावन्मेरु धरा पीठे यावत्तिष्टति मेदिनी ।
तावन्नंदतु टीकेयं साधु शब्दार्थं सुंदरा ॥२१॥
अदृष्टदोषान्मतिविभ्रमाद्वायत्किंचिदूनं लिखितं मयात्र ।
तत्सर्वं मार्यैं परिशोधनीयं संतोषतः सर्वं हितैषिणो वै ॥२२॥
मंगलं लेखकस्यापि पाठकस्यापि मंगलं ।
मङ्गलं सर्वं लोकानां भूमि भूंपति मङ्गलं ॥२३॥
तैलाद्रक्षेज्जलाद्रक्षेत् रक्षेत् शिथिल बंधनात् ।
परहस्त गतां रक्षेदेव वदति पुस्तिका ॥२४॥
भग्न दृष्टि कटि ग्रीवा वाधो दृष्टि रधो मुखं ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परि पालयेत ॥२५॥

लेखन काल—संवत् १७९९ वर्षे आश्विन मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ भृगुवारे वाचनाचार्य श्री श्री १०४ श्री श्री देवधीरगणितत शिष्य पं० प्रवर श्री हर्षे हेमजी शिष्य

० चतुरहर्ष लिखितं श्री बीकानेर मध्ये चतुर्मासी स्थितेन। श्रीरस्तु। म० श्री जोरा-
वरसिंहजी।

प्रति—पत्र ८१। पंक्ति १६। अक्षर ५२। साइज ४०×१।

(दानसागर भंडार)

(४) (केशवदास कृत) शिखनख की भाषा टीका। संवत् १७६२ से पूर्व।

आदि—

अथ शिख नख वर्णन लिख्यते। काव्य।

गीर्वाण वाणी षु विशेष बुद्धिः तथापि भाषा रस लोलुपोहं।
यथा सुराणामम्रुतेषु सत्सु स्वर्गाङ्गनामधरासवे रुचिः ॥ १ ॥

अर्थ

केसवदास कहै छै जे माहरी मति संस्कृत वाणीं नै विषै बुद्धि विशेष छै तो पिण हुं भाषा रस ने विषै लोलपी छु ते केहनी परै जिम देवतां ने देव लोक माहे अमृत थकां पिण देवांगना ना अधर ना रस नी वांछा करै अधर रसनी घणी इच्छा तिमजंपिण सस्कृत भाषा जांणु हु तौ पिण व्रज भाषा नी वांछा घणी हैं मुझनें।

अथ छूटा केश वर्णन सवैया ॥

अन्त—

कमला जे लक्ष्मी तेहनुं स्थानक जांणीनें कै आणीयै कामना जे पांच बाण तेहना जे जोतिवंत फल कहतां भालोइ छै ते शोभै छै कै हूं जाणुं माहरे जाण पणै सुंदर सुंदरीना नखज छै। २८।

इति श्री केशवदास विरचित शिख नख संपूर्णः। श्रीरस्तु।

लेखन काल—संवत १७६२ वर्षे मिगसर सुदि ८ भौमे लिखितं श्री भुज मध्ये पं० भागचंद मुनिना। श्री।

प्रति गुटकाकार। पत्र ८। पंक्ति ३३। अक्षर २२। साइज ४।×६

(अभय जैन ग्रन्थालय)

परिशिष्ट १.

[ग्रन्थकार-परिचय]

(१) अभयराम सनाढ्य (१६)❀—जैसा कि आपने 'अनूप शृङ्गार' ग्रंथ में उल्लेख किया है आप भारद्वाज कुल, सनाढ्य जाति, करैया गोत्रीय केशवदास के पुत्र एवं रणथंभोर के समीपवर्त्ती वैहरन गाँव के निवासी थे। बीकानेर नरेश अनूपसिंहजी आप पर बड़े प्रसन्न थे और 'कविराज' नामसे संबोधित किया करते थे। महाराजा अनूपसिंहजी की आज्ञानुसार ही आपने सं० १७५४ के अगहन शुक्ला रविवार को 'अनूप शृङ्गार' ग्रन्थ की रचना की।

(२) आनन्दराम कायस्थ भटनागर (१४)—आप सुप्रसिद्ध कवि काशीवासी तुलसीदासजी के शिष्य थे। आपके रचित "वचन-विनोद" की प्रति सं० १६७९ की लिखित होने से उसका निर्माण इससे पहले का ही निश्चित होता है। प्रतिलेखक ने आपका विशेषण "हिंसारी" लिखा है अतः इनका मूल निवासस्थान हिसार ज्ञात होता है। मिश्रबन्धु विनोद पृ० ३४७ में कोकसार या कोकमंजरी के कर्त्ता को "आनन्द कायस्थ, कोट हिंसार के" लिखा है। इस ग्रन्थ की प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में सं० १६८२ लिखित उपलब्ध है। समय निवासस्थान और नाम पर विचार करते हुए कोकसार-रचयिता आनन्द वचन-विनोद के आनन्दराम कायस्थ ही प्रतीत होते हैं।

(३) उदयचंद (१५, १०९)—ये खरतरगच्छीय जैन यति या मथेन थे। महाराजा अनूपसिंहजी से आपका अच्छा सम्बन्ध था। उन्हीं के लिये सं० १७२८ के आश्विन शुक्ला १० कुजवार को इन्होंने बीकानेर में 'अनूपरसाल' ग्रन्थ बनाया। आपका 'पांडित्य दर्पण' नामक संस्कृत ग्रन्थ (सं० १७३४ के सावन सुदी में) पूर्वोक्त महाराजा की आज्ञा से रचित उपलब्ध है जिसकी आवश्यक जानकारी Adyar Library Bulletin में पांडित्य दर्पण ऑफ श्वेताम्बर उदयचन्द्र नामक लेख में प्रकाशित है। महाराजा सुजानसिंहजी के समय (सं० १७६५ चैत्र) में आपने 'बीकानेर गजल' बनायी।

(४) उदयराज (३५)—आप के रचित 'वैद्यविरहिणी प्रबन्ध' मे कवि-परिचय एवं ग्रन्थरचना-काल का कुछ भी निर्देश नहीं है, पर विशेष संभव ये उदय-

❀ पृष्ठाङ्क

राज वे ही हैं जिनके रचित हिन्दी एवं राजस्थानी के लगभग ५०० दोहे उपलब्ध हैं। यदि यह अनुमान ठीक है तो आप खरतरगच्छीय (चंदन मलयागिरी चोपई के रचयिता) भद्रसार के शिष्य थे। आप अच्छे कवि थे—आपकी निम्नोक्त अन्य रचनायें हमारे संग्रह में हैं।

(१) गुणबावनी सं० १६७६ वै० सु० १५ बवेरइ।

(२) भजन छत्तीसी सं० १६६७ फा० व० १३ शुक्रवार, मांडावइ।

भजन छत्तीसी में कवि ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि यह ग्रन्थ ३६ वर्ष की उम्र में बनाया अतः इनका जन्म सं० १६३१ निश्चित होता है। आपने अपने पिता का नाम भद्रसार, माता का नाम हरषा, भ्राता सूरचंद्र, मित्र रत्नाकर, निवासस्थान जोधपुर, स्वामी उदयसिंह, पत्नी पुरवणि, पुत्र सूदन का उल्लेख किया है। इन बातो को स्पष्ट करने वाले दो कवित्त नीचे दिये जा रहे हैं:—

साम समपे उदयसिंह वास समपे योधपुर ।
समपि पिता भद्रसार जन्म समपे हरपा उर।
समपि भ्रात सूरचंद्र मित्र समपे रयणायर।
समपि कलित्र पूरवणि समपि पुत्र सुदन दिवायर।
रूप अने अवतार ओ मो समपे आपज रहण।
उदैराज इह लधौ इतौ, भव भव समपे मह महण ॥ ३२ ॥

× × ×

सौलहेसे सतसठै, कीध जन भजन छत्तीसी।
मोनुं वरस छत्रीस, हुन्त मनि आवइ हंसी।
वदि फागुण शिवरात्रि, श्रवण शुक्रवार समूरत।
मांडावाइ मझारि, प्रभु जगमाल पृथी पति।
भद्रसार चरण प्रणाम करि, मैं अनुक्रमि मझ्या कवित।
म्रैलोक छत्तीसी वाचता दुःख ज.ऽ नासे दुरति ॥ ३७ ॥

उदयराज या उदयकृत चौबीसजिन सवैयादि का संग्रह भी उपलब्ध है वे सब हिन्दी में हैं। प्रमाणाभाव से उनके रचयिता प्रस्तुत उदयराज ही हैं या उससे भिन्न अन्य कोई कवि है, नहीं कहा जा सकता।

मिश्र बन्धु विनोद भा० १ पृ० ३९६ मे उदयराज जैन जति बीकानेर रचित फुटकर दोहे, गुणमासा तथा रगेजदीन महताव, रचना १६६० के लगभग, आश्रयदाता महाराजा रामसिंहजी को लिखा है इनमे से फुटकर दोहे तो ठीक इन्हीं के हैं बाकी

की दोनों रचनाओं के नाम अशुद्ध प्रतीत होते हैं। संभव है गुणमासा गुणबावनी हो। रायसिंहजी के आश्रित होने की बात भी सही नहीं है। पूर्वोक्त पद्यों से ये यति होकर मथेन (गृहस्थ) सिद्ध होते हैं।

(५) उस्तत पातशाह (६१)—इन्होंने सं० १७५८ के मिगसर सुदी १२ बुधवार को सिन्ध प्रान्तवर्ती मेहरा नामक स्थान में रागमाला (राग चौरासी) भरत के ग्रन्थानुसार और शाह के राज्य-काल में बनाई।

(६) कर्णभूपति (१९)—इनके रचित कृष्णचरित्र सटीक के अतिरिक्त कुछ ज्ञात नहीं। संभव है ये बीकानेर नरेश कर्णसिंहजी हो। प्रति अपूर्ण प्राप्त है अतः अन्त का अंश मिलने पर संभव है इसके रचयिता के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त हो।

(७) कल्याण (१०२, ११४)—ये खरतरगच्छीय यति थे। इन्होंने सं० १८३८ के माघ वदी २ को गिरनार गजल एवं सं० १८६४ के भाद्रवा शुक्ला १४ को दौलत (रामजी) यति के लिये सिद्धाचल गजल बनाई।

(८) कल्ह (९६)—इन्होंने जहाँगीर के राज्यकाल में लाहौर मे दिल्ली-राज्य-वंशावलि बनाई। इसका रचनाकाल "तौरे गगण अखरत चंद" कातिक वदी १ रविवार बतलाया है। संवत् स्पष्ट नहीं हो सका, संभव है पाठ अशुद्ध हो।

(९) किशनदास (९७)—इन्होंने औरङ्गजेब के राज्यकाल में उपरोक्त कवि कल्हकृत दिल्ली राज्य वंशावलि को आदि अन्त का कुछ भाग अपनी ओर से जोड़कर अपने नाम से प्रसिद्ध करदिया है मध्य का भाग कल्ह की वंशावलि से ज्यों का त्यों ले लिया गया है। जो वास्तव में साहित्यिक चोरी है।

(१०) कुंवर कुशल (३४)—ये तपागच्छीय कनककुशल के शिष्य थे। कच्छ के राजा लखपत के आदेश से उन्ही के नाम का लखपतजससिन्धु नामक ग्रन्थ बनाया। कच्छ के इतिहास में लखपत् का समय सं० १७९८ से १८१७ लिखा है अतः कवि एवं ग्रन्थ का समय इसी के मध्यवर्ती है। कच्छ इतिहास के अनुसार कनककुशलजी ने राजा लखपत को व्रजभाषा के ग्रन्थों का अभ्यास करवाया था। महाराजा ने इनके तत्वावधान में वहाँ एक विद्यालय स्थापित किया था जिसमें पढ़ने वाले विदेशी विद्यार्थियों को राज्य की ओर से पेटिया (भोजन का समान) दिये जाने की व्यवस्था की थी। सं० १९३२ में कनक कुशलजी की शिष्य परम्परा के भट्टारक जीवनकुशलजी की अध्यक्षता में यह विद्यालय चलरहा था, पता नहीं वह अब चालू

है या नहीं। कनककुशलजी के शिष्य कुंवर कुशलजी के रचित लखपतजससिन्धु ग्रन्थ का उल्लेख भी कच्छ के इतिहास में पाया जाता है।

मिश्रबन्धु विनोद पृ० ६६७ में इनका एवं इनके रचित लखपतजससिन्धु का उल्लेख है पर इन्हें जोधपुर निवासी बताना सही नहीं है। विनोद में कुंवर कुशल को कनक कुशल का भाई वतलाया गया है पर ये गुरु-शिष्य थे, यह हमें प्राप्त प्रति की प्रशस्ति से स्पष्ट है।

(११) कृष्णदत्त विप्र (११९)—इन्होंने 'ज्योतिषसार भाषा' या कवि-विनोद ग्रन्थ बनाया। विशेष वृत्त अज्ञात है।

(१२) कृष्णदास (५६)—इन्होंने बीकानेर निवासी जैन जोहरी बोथरा कृष्णचन्द्र जो कि दिल्ली में रहने लगे थे, के लिये रत्न परीक्षा ग्रन्थ सं० १९०४ के कार्त्तिक कृष्णा २ को बनाया।

(१३) कृष्णानन्द (४३)—गन्धककल्प आँवलासार ग्रन्थ के अतिरिक्त विशेष वृत्त ज्ञात नहीं है। मिश्रबन्धु विनोद के पृ० १०२८ में कृष्णानन्द व्यास का उल्लेख है वे इनसे भिन्न ही सम्भव हैं।

(१४) केशरी कवि (३३)—इन्होंने सुजान के लिये रसिकविलास ग्रन्थ बनाया।

(१५) खेतल (१००,१०३)—आप खरतरगच्छीय जिनराज सूरिजी के शिष्य दयावल्लभ के शिष्य थे। दीक्षानंदी सूची के अनुसार आपकी दीक्षा सं० १७४१ के फागुन वदी ७ रविवार को जिनचन्द्र सूरिजी के पास हुई थी। आपने अपना नाम पद्यों में खेतसी, खेता और कहीं खेतल दिया है। नन्दी सूचि के अनुसार इनका मूल नाप खेतसी और दीक्षित अवस्था का नाम दयासुन्दर था। आपने चित्तौड़गजल सं० १७४८ सावन वदी २ और उदयपुर गजल सं० १७५७ मिगसर वदी में बनायी थी। इनके अतिरिक्त आपकी रचित वावनी हमारे संग्रह में है जिसकी रचना सं० १७४३ मिगसर सुदी १५ शुक्रवार दहरवास गाँव में हुई थी। उसका अन्त-पद इस प्रकार है:—

संवत् सत्तर त्रयाल, मास सुदी पक्ष मगस्सिर।
तिथि पूनम शुक्रवार, थयी वावनी सुथिर।
वारखरी रो बन्ध, कवित्त चौसठ कथन गति।
दहरवास चौमास समय, तिणि भया सुखी अति।

श्री जैनराजसूरिसवर, दयावल्लभ गणि तास सिखि।
सुप्रसाद तास खेतल, सुकवि लहि जोड़ि पुस्तक लिखि ॥ ६४ ॥

आपकी उदयपुरगजल भारतीय विद्या में एवं चित्तौड़गजल फार्वस सभा त्रैमासिक पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है।

मिश्रवन्धुविनोद के पृ० ९६६ में खेतल कवि का नामोल्लेख है पर वहाँ इनके रचित ग्रन्थ का नाम व समय का निर्देश कुछ भी नहीं है। अतः वे यही थे, या इनसे भिन्न, नहीं कहा जा सकता।

(१६) खुसरो (४)—आप हिन्दी साहित्य संसार में सुप्रसिद्ध हैं। मिश्र-बन्धु विनोद पृ० २६६ में इनका व इनके नाममाला ग्रन्थ का उल्लेख पाया जाता है। खोज रिपोर्टों में अभी तक इनकी ख्वालकवारी नाम माला की नागरी लिपि में लिखित प्राचीन प्रति का कहीं भी उल्लेख देखने में नहीं आया। इसलिये प्रस्तुत विवरणी में इसका आदि अन्त भाग दिया है।

(१७) गनपति (८८)—ये गुर्जर गौड सुरतान देव के पुत्र थे। इन्होंने सांगावत जसवन्त की रानी अमर कंवरी और आम्वेरनाथ की पत्नी कुन्दन बाई के लिये सं० १८२६ वसन्त पंचमी को शनि कथा की रचना की। ये वल्लभ सम्प्रदाय के गिरधारीजी के मन्दिर के पुजारी थे।

श्रीयुत मोतीलालजी मेनारिया के सम्पादित खोज विवरण भाग १ में इनके सुदामाचरित्र का विवरण दिया गया है। वहाँ कवि का नाम गणेशदास लिखा है। गणेश और गनपति एकार्थवाचक नाम है अतः ये दोनों अभिन्न ही प्रतीत होते हैं।

(१८) गुलाबविजय (१०१, १०३)—आप तपागच्छीय यति थे। इन्होंने 'कापरड़ा गजल' कम धज खुसालसिंह के शासन काल में (सं० १८७२ चै० व० ३ को बनाई) और जोधपुर गजल की सं० १९०१ पौष वदी १० को रचना की।

जैन गुर्जर कवियो भा० ३ पृ० १७५ में रिद्धिविजय शिष्य गुलाबविजय के समेदशिखर रास सं० १८४६ में रचे जाने का उल्लेख है पर वे इनसे भिन्न ही संभव हैं।

(१९) गुलाबसिंह (३६)—ये प्रतापगढ़ राज्य के संचेइ गाँव के अधिकारी थे। ओझाजी के प्रतापगढ़ के इतिहास में वहाँ के राजा उदयसिंह ने महडू गुलाबसिंह को पैर में स्वर्णाभूषण का सन्मान देकर प्रतिष्ठा बढ़ाई, लिखा है। आपके रचित साहित्य महोदधि की रचना इन्हीं उदयसिंहजी की आज्ञा से हुई थी मुझे उसका नृपवंश

निरूपण और कविवंश वर्णन नामक ऐतिहासिक अंश ही उपलब्ध हुआ है—सम्पूर्ण ग्रन्थ काफी बड़ा होना चाहिये और वह प्रतापगढ़ राज्य लाइब्रेरी या कवि के वंशजों के पास होना संभव है। संचेइ गाँव आज भी इनके वंशजों के अधिकार में है।

मिश्र बन्धु विनोद पृ० १०५५ में बूंदी के गुलाबसिंह कवि के अनेक ग्रन्थों का उल्लेख है जो कि मुंशी देवीप्रसादजी के 'कविरत्नमाला' से लिया गया जान पड़ता है। इनका समय भी हमारे कवि गुलाबसिंह के समकालीन है पर ये दोनों भिन्न-भिन्न कवि प्रतीत होते हैं।

(२०) गोपाल लाहोरी (२९)—इन्होंने मुसाहिबखान के तनुज सिरदारखाँ के पुत्र मिरजाखाँन की आज्ञा से 'रसविलास' ग्रंथ सं० १६४४ के बैसाख सुदि ३ को बनाया, इस ग्रन्थ का केवल अन्तिम पत्र ही हमारे संग्रह में है। अतः सम्पूर्ण प्रति कहीं उपलब्ध हो तो हमें सूचित करने का अनुरोध है।

(२१) घनश्याम (२३)—प्रति लेखक के अनुसार ये पुरोहित थे। राधाजी के नखशिख वर्णन के अतिरिक्त इनकी अन्य रचना अज्ञात है। ये कवि वल्लभ कुल के वैष्णव थे। सं० १८०५ के कार्तिक शुक्ला बुद्धवार को नखशिख वर्णन की रचना हुई थी।

(२२) चतुरदास (२०)—आप अमृतराय भट्ट के शिष्य व जाति के क्षत्रिय थे। चित्रविलास की रचना अपने मित्रों के कथन से सं० १७३६ कार्तिक सुदि ९ लाहौर में आपने गुरु के नाम से की थी।

(२३) चिदानंद (१२९)—ये आत्मानुभवी जैन योगी थे। इनका मूल नाम कपूरचंद और साधकावस्था का नाम चिदानंद है। बनारस वाले खरतरगच्छीय यति चुन्नीजी के ये शिष्य थे। आपके प्राप्त ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्वरोदय सं० १९०७ पालीताना (२) पुद्‌गल गीता
(३) दया छत्तीसी सं. १९०५ का. सु. १ भावनगर (४) प्रश्नोत्तरमाला
(५) सवैया बावनी (६) पद बहोतरी
(७) फुटकर दोहे आदि

आपका स्वरोदय ग्रन्थ अपने विषय का अच्छा ग्रन्थ है। आपके पद बडे ही सुन्दर एवं भावपूर्ण हैं। गम्भीर भावों को दृष्टांत देकर सरलता से समझाने में आप

बड़े सिद्धहस्त थे। इनके विषय में मेरा एक स्वतन्त्र लेख शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

(२४) चेतनविजय (३, १३, ७३)—ये तपागच्छीय रिद्धिविजयजी के शिष्य थे। लघुपिंगल की अन्तप्रशस्ति के अनुसार इनका जन्म बंगाल में हुआ था। दीक्षा लेकर तीर्थयात्रा करते हुए पुनः बंगाल में आने पर इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की जिनमें से 'आत्मबोध नाममाला' सं० १८४७ माघ सुदी १० और लघुपिंगल सं० १८४७ पौष वदी २ गुरुवार बंगदेश और जम्बूरास सं० १८५२ सावन सुदी ३ रविवार अजीमगंज में रचित ग्रन्थों के विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त श्रीपाल रास सं० १८५३ फागन सुदी २ अजीमगंज और सीता चौपाई सं० १८५१ वैसाख सु० १३ अजीमगंज, उल्लेखनीय हैं। स्वर्गीय बाबू पूरनचन्दजी नाहर कलकत्ता के गुलाबकुमारी लाइब्रेरी में इनके रचित अनेक फुटकर रचनाओं का एक बड़ा गुटका है।

मिश्रबन्धु विनोद पृ० ८३६ में भी इनका उल्लेख आया है।

(२५) चेलो (९९)—ये रतनु गोत्रीय पमजी के पुत्र एवं जिलिया गाँव के निवासी थे सं० १९०९ के वैसाख वदी मे उन्होंने आबू शैल की गजल बनाई।

(२६) चैनसुख (५४)—आप खरतरगच्छीय जिनदत्त सूरि शाखा के लाभ निधानजी के शिष्य थे। इनकी परम्परा में यति रिद्धिकरणजी आज भी फतहपुर मे विद्यमान हैं। इन्ही के संग्रह में आपकी शतश्लोकी भाषाटीका की प्रति उपलब्ध हुई है जिसकी रचना सं० १८२० भाद्रवा वदी १२ शनिवार को महेश की आज्ञा व रतनचन्द के लिये हुई है। आपका अन्य ग्रन्थ 'वैद्य जीवन टवा' भी उपलब्ध है। सं० १८६८ में फतहपुर में इनकी छतरी शिष्य चिमनीरामजी ने बनाई थी। आपकी परम्परा के सम्बन्ध में विशेष जानने के लिये हमारे लिखित युग प्रधान श्री जिनदत्त सूरि ग्रन्थ देखना चाहिये।

(२७) जगजीवन (७०)—इनके हनुमान नाटक की प्रति अपूर्ण मिलने से आपका समय व अन्य जानकारी अज्ञात है।

(२८) जगन्नाथ (२६)—जैसलमेर के रावल अमरसिंह के लिये इन्होंने रतिभूषण नामक ग्रन्थ सं० १७१४ के जेठ सु० १० सोमवार को बनाया।

(२९) जटमल (७६-१०५-११३)—ये नाहरगोत्रीय जैन श्रावक थे। मूलतः वे लाहौर के निवासी थे पर पीछे से जलालपुर में रहने लगे थे। हिन्दी साहित्य में आपके रचित 'गोरा-बादल की बात' ने अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की, जिसका कारण एक

साहित्यिक विद्वान् द्वारा इसकी सटीक प्रति के गद्य को इनका रचित मान लेना था। परवर्ती विद्वानों ने इस भूल को बहुत वर्षों तक चलाये रखा पर अन्त में स्वामी नरोत्तमदासजी[1], बाबू पूर्णचन्दजी नाहर[2] और हमने अपने लेखों में इसका सुधार किया। हमारे अन्वेषण से जटमल के अन्य कई ग्रन्थ प्राप्त हुए उन सबका परिचय हमने हिन्दुस्तानी पत्रिका के वर्ष ८ अंक २ में 'कविवर जटमल नाहर और उनके ग्रन्थ' शीर्षक लेख में प्रकाशित किया था। प्रस्तुत ग्रन्थ में 'प्रेम विलास चौपाई,' 'लाहोरगजल' और 'झिगोर गजल' के विवरण प्रकाशित हैं। इनमें से प्रेमविलास चौपाई के सम्बन्ध में स्वर्गीय सूर्यनारायणजी पारीक का एक लेख वीणा सन् १९३८ में प्रकाशित हो चुका है और 'लाहोरगजल' 'जैनविद्या' नामक पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है। 'झिंगोर गजल' अभी तक अप्रकाशित है। आपकी अन्य रचनाएँ, बावनी, सुन्दरीगजल और फुटकर सवैये हमारे संग्रह में है। जटमल-ग्रन्थावली का हमने संपादन किया है और वह प्रकाशन की प्रतीक्षा में है।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ४०७ में भी जटमल का उल्लेख है।

(३०) जयतराम (१२८)—इन्होंने 'योग प्रदीपिका स्वरोदय' सं० १७९४ विजया दशमी को बनाया।

(३१) जयधर्म (१२३)—ये जैनयति लक्ष्मीचन्दजी के शिष्य थे। इन्होंने सं० १७६२ कातिक वदि ५ को पानीपत में नन्दलाल के पुत्र गोवर्धनदास के लिये 'शकुन प्रदीप' नामक ग्रन्थ बनाया।

(३२) जनार्दन गोस्वामी (२२)—इनके रचित 'दुर्गसिंह शृंगार' ग्रन्थ का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दिया गया है। इसकी प्रति प्रारम्भ में त्रुटित प्राप्त होने से दुर्गसिंह एवं कवि का विशेष परिचय ज्ञात नहीं हो सका। इस ग्रन्थ की रचना सं०१७-३५ ज्येष्ठ सुदि ९ रविवार को हुई थी। आपके रचित व्यवहार निर्णय सं० १७३७ और लक्ष्मी नारायण पूजासार (बीकानेर के महाराजा अनूपसिंहजी के लिये रचित) की प्रतियें अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में विद्यमान हैं।

खोज रिपोर्टों के आधार से हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण भाग १ के पृ० ४९ में जनार्दन भट्ट के (१) बालविवेक (२) वैद्यरत्न (३) हाथी का शालिहोत्र और मिश्रबन्धुविनोद के पृ० १०७८ में इन ग्रन्थों के अतिरिक्त कविरत्न नामका चौथा ग्रन्थ भी इन्हीं के द्वारा रचित होने का उल्लेख किया है।

---

१ प्र० नागरी प्रचारिणी व, १४ अ, ४। २ प्र० विशाल भारत, दिसम्बर १९३३।

इनमे से वैद्यरत्न की प्रतियें मेरे अवलोकन मे आयी हैं उसमें रचना काल सं० १७४९ माघ सुदि ६ स्पष्ट लिखा हुआ है। अतः मिश्रबन्धुविनोद में इनका कविता काल सं० १९०० के प्रथम बतलाया है वह और भी आगे बढ़कर सं० १७४९ के लगभग का निश्चित होता है। पता नहीं इनके नाम से जिन तीन अन्य ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है उनमें रचनाकाल है या नहीं एवं कवि यही हैं या समनाम वाले अन्य कोई जनार्दन भट्ट हैं ? [1]

जनार्दन गोस्वामी के संस्कृत ग्रन्थों एवं वंशावलि के सम्बन्ध में डॉ. सी. कुन्हन-राजा अभिनंदन ग्रन्थ में पं० माधव कृष्ण शर्मा का 'शिवानन्द गोस्वामी' लेख देखना चाहिये।

(३३) जान (१८, २७, ३३, ४९, ५५, ७१, ७९, ८४, ९०, ९४, ९७)—आप फतहपुर के नवाब अलिफखाँ के पुत्र न्यामतखाँ थे। कविता में इन्होने अपना उपनाम जान ही लिखा है। सं० १६७१ से १७२१ तक पचास वर्ष आपकी साहित्य-साधना का समय है। इन वर्षों में आपने ७५ हिन्दी काव्य ग्रन्थों का निर्माण किया; जिसकी प्रतियाँ राजस्थान में ही प्राप्त होने से अभी तक यह कवि हिन्दी साहित्य संसार से अज्ञात था। इनका (इनके ४ ग्रन्थों का) परिचय सर्व प्रथम हमारे सम्पादित 'राजस्थानी' और 'धूमकेतु' पत्र में प्रकाशित हुआ था। श्रीयुत मोतीलालजी मेनारिया के खोज विवरण में आपकी रचित रसमंजरी का विवरण प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ में आपके ११ ग्रन्थों का विवरण दिया गया है। इनके सम्बन्ध में हमारे निम्नोक्त चार लेख प्रकाशित हो चुके हैं अतः यहाँ अधिक न लिखकर पाठकों को उन लेखों को पढ़ने का सूचन किया जाता है।

(१) कविवर जान और उनके ग्रन्थ (प्र० राजस्थान भारती व० १ अं० १)
(२) कविवर जान और उनका कायम रासो (प्र० हिन्दुस्तानी व० १५ अं० २)
(३) कविवर जान का सबसे बड़ा ग्रन्थ(बुद्धिसागर)(प्र० ,, व० १६ अं० १)
(४) कविवर जान रचित अलिफखाँ की पैड़ी (प्र० ,, व० १६ अं० ४)

(३४) जोगीदास (५०)—ये बीकानेर के साहित्य प्रेमी नरेश अनूपसिंहजी के सम्मानित श्वेताम्बर (जैन) लेखक जोसीराय मथेन के पुत्र थे। महाराजा सुजान-

---

१ हिन्दी पुस्तक साहित्य के अनुसार यह मुहम्मदी प्रेस लखनऊ से छप भी चुका है। इस ग्रन्थ के पृष्ठ ६३ में सन् १८८२ लिखा है वह प्रकाशन का है। इसी प्रकार देवीदास की राजनीति को भी १९ वीं शताब्दी की मानी है पर वह १८ वीं की है।

सिंहजी के वरसलपुर गढ विजय का वर्णन इन्होंने संवत् १७६७–६९ के लगभग सुजानसिंह रासो (पद्य ६८) में किया था। उससे प्रसन्न होकर महाराजा ने कवि को वर्षाशन, सासणदान और शिरोपाव देकर सम्मानित किया था। इन्हीं महाराजा के समय कवि ने उनके पुत्र महाराज कुंवर जोरावरसिंहजी के नाम से सं० १७६२ के आश्विन शुक्ल १० को "वैद्यकसार" नामक ग्रन्थ बनाया जिसका विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दिया गया है।

(३५) टीकम (७२)—ये जैन कवि थे। सं० १७०८ जेठ वदि २ रविवार को इन्होंने 'चन्द्रहंस-कथा' बनाई।

(३६) तत्वकुमार (५७)—ये खरतरगच्छीय सागरचन्द्रसूरि शाखा के वाचक दर्शनलाभ के शिष्य थे। मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ९७५ में अज्ञात कालिक प्रकरण में इनके रचित श्रीपालचरित्र का उल्लेख है। वह कलकत्ते से यति सूर्यमलजी ने प्रकाशित भी कर दिया है। आपके द्वितीय ग्रन्थ 'रत्नपरीक्षा' का विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है जिसके अनुसार इसकी रचना सं० १८४५ सावन वदि १० सोमवार को बंगदेशीय राजगंज के चंडालिया आसकरण के लिये हुई थी।

(३७) दयालदास (९८)—आप कुबिये गाँव के सिढ़ायच खेतसी के पुत्र थे। राठौड़ों की ख्यात के सम्बन्ध में आपके तीन ग्रन्थ (१) आर्याख्यान् कल्पद्रुम (२) देशदर्पण और (३) राठौड़ों की ख्यात बहुत ही महत्व के हैं। बीकानेर राज्य का इतिहास तो आपके इन ग्रन्थों के आधार से ही लिखा गया है। इनके अतिरिक्त 'जस-रत्नाकर', 'सुजस बावनी', 'अजस इक्कीसी', फुटकर गीत आदि की प्रतियाँ अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में विद्यमान हैं। आपने नारसैर के ठाकुर अजीतसिंहजी की आज्ञा से परमारों के इतिहास के सम्बन्ध में 'पंवारवंशदर्पण' सं० १९२१ में बनाया।

(३८) दरवेश हकीम (४५)—आपके रचित 'प्राणसुख' ग्रन्थ के अतिरिक्त कुछ भी वृत्त ज्ञात नहीं है। इस ग्रन्थ की प्रति सं० १८०६ की लिखी हुई होने से कवि का समय इससे पूर्ववर्त्ती सिद्ध ही है।

(३९) दलपति मिश्र (९५)—'जसवन्त उदोत' में कवि ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि अकबरपुर मे माथुरद्वीप मिश्र जिन्होंने कुछ दिन रामनरेश के यहाँ रहकर उन्हें पढ़ाया था उनके पुत्र शिवराम के पुत्र तुलसी का मैं पुत्र हू। सं० १७०५ असाढ़ सुदी ३ को जहाँनाबाद में इस ग्रन्थ की रचना हुई। जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंहजी से इनका अच्छा सम्बन्ध था। इस ग्रन्थ का ऐतिहासिक

सार मैंने 'हिन्दुस्तानी' वर्ष १६ अंक ३ में प्रकाशित कर दिया है। 'जसवन्त उद्योत' में कवि ने नायिकावर्णन के सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिये अपनी 'रस रत्नावली' ग्रन्थ का निर्देश किया है जो अद्यावधि अप्राप्त है।

(४०) दीपचन्द (४५)—ये खरतरगच्छीय थे। इनके रचित 'लंघन-पथ्य-निर्णय' नामक संस्कृत ग्रन्थ की प्रति हमारे संग्रह में है जो कि सं० १७९२ माघ सुदि १ जयपुर में रचित है। प्रस्तुत ग्रन्थ में इनके वाल तन्त्र भाषा वचनिका का विवरण दिया है।

(४१) दीपविजय (१०९-११५)—ये तपागच्छीय रत्नविजय के शिष्य थे। इनका विरुद "कविराज बहादुर" था। आपकी निम्नोक्त रचनाएँ ज्ञात हुई हैं।

(१) रोहिणी स्तवन सं० १८५९ भा० सु० खंभात

(२) केसरियाजी लावणी—ऋषभ स्तवन सं० १८७५

(३) सोहम कुल पट्टावलि रास (ग्रन्थाग्रन्थ २०००) सं० १८७७ सूरत

(४) पार्श्वनाथ ५ वधावा सं० १८७९

(५) कवि तीर्थ स्तवन, सं० १८८६

(६) अड़सठ आगम अष्ट प्रकार री पूजा, सं० १८८६ जम्बूसर

(७) नन्दीश्वर महोत्सव पूजा ,सं० १८८९ सूरत

(८) सूरत गजल (९) खंभात गजल (१०) जम्बूसर गजल

(११) उदयपुर गजल (१२) वड़ौदा गजल। ये पाँचों गजलें सं १८७७ की लिखित प्रति मे उपलब्ध हैं जो कि आगरे के विजय धर्म सूरि ज्ञान मन्दिर में हैं।

(१३) माणिभद्रछन्द (१४) चन्दगुणावली पत्र

(१५) अष्टापद पूजा, सं० १८९२ फागुन, रांदेर

(१६) महानिशीथ हुंडी (प्र० जैन साहित्य संशोधक)

(१७) नववोल चर्चा सं० १८७६ उदयपुर

(४२) दुर्गादास (११२)—ये खरतरगच्छीय यति विनयानन्द (जिनचन्द्रसूरि शाखा) के शिष्य थे। इन्होंने दीपचन्द के आग्रह से सं० १७६५ पौष वदि ५ में 'मरोट गजल' बनाई। इनका अन्य ग्रन्थ जम्बू चौपाई हमारे संग्रह में है। इसकी रचना सं० १७९३ श्रावणसुदि ७ सोमवार को वाकरोद में हुई है।

(४३) दूलह (२३)—१९ वीं शताब्दी के कवि दूलह का 'कविकुलकंठाभरण' हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध है। मिश्रबन्धुविनोद पृ० १८१ मे भी इसका उल्लेख है।

संभवतः ये उनसे अभिन्न ही होंगे। दूलह विनोद की प्रति का केवल प्रथम पत्र प्राप्त होने से कवि का परिचय एवं रचनाकाल ज्ञात नही हो सका। इसकी पूर्ण प्रति कहीं प्राप्त हो तो हमें सूचित करने का अनुरोध है।

(४४) देवहर्ष (१०५-१०७)—आप खरतरगच्छीय जैन यति थे। श्री जिनहर्षसूरिजी के समय में रचित इनकी 'पाटण गजल' (सं० १७५९ फाल्गुन) 'डीसा गजल' के अतिरिक्त 'सिद्धाचल छन्द' हमारे संग्रह में है।

(४५) धर्मसी (४३) ये भी खरतरगच्छीय वाचक विमल हर्षजी के शिष्य थे। इनका दीक्षा अवस्था का नाम धर्मवर्द्धन था। अपने समय के ये प्रतिष्ठित एवं राज्य-मान्य विद्वान् थे। इनके सम्बन्ध में मेरा विस्तृत लेख "राजस्थानी साहित्य और जैन कवि धर्मवर्द्धन" शीर्षक राजस्थानी- वर्ष २ भाग२ मे प्रकाशित है। अतः यहाँ विस्तृत परिचय नहीं दिया गया।

(४६) नगराज (१२५)—सभवतः ये खरतरगच्छीय जैन यति थे। १८ वीं शताब्दी में अजय राज्य के लिये आपने "सामुद्रिक भाषा" नामक ग्रन्थ बनाया।

(४७) निहाल (११०)—ये पार्श्वचन्द्रसूरि संतानीय हर्षचन्द्रजी के शिष्य थे। इनकी रचित बंगाल की गजल (सं० १७८२-९५) के अतिरिक्त निम्नोक्त रचनायें ज्ञात हुई हैं।

(१) ब्रह्मबावनी, स० १८०१ कार्तिक सुदि ६ मुर्शिदाबाद
(२) माणकदेवी रास, स० १७९८ पौष बदी १३ मुर्शिदाबाद(प्र० राससंग्रह)
(३) जीवविचार भाषा सं० १८०६ चैत सुदि २ बुध मुर्शिदाबाद
(४) नवतत्व भाषा, सं० १८०७ माघ सुदि ५ „

"बंगाल गजल" ऐतिहासिक सार के साथ मुनि जिनविजयजी ने भारतीय विद्या वर्ष १ अंक ४ मे प्रकाशित करदी है।

(४८) नंदराम (१७)—इन्होंने बीकानेर नरेश अनूपसिंहजी की आज्ञा से रस ग्रन्थों का सार लेकर "अलसमेदिनी" नामक ग्रन्थ बनाया।

(४९) परमानंद (१२६)—ये नागपुरीय लोंकागच्छ के वीरचन्द्र के शिष्य थे। इन्होंने लक्ष्मीचन्द्र (सूरि) एवं बीकानेर नरेश सूरतसिंह के समय में (सं० १८६० माघ सुदि) में बिहारी सतसई की संस्कृत टीका बनायी।

(५०) प्रेम (२५)—इन्होंने स० १७४० के चैत सुदि १० को प्रेममंजरी ग्रन्थ बनाया।

(५१) बगसीराम लालस (१९)—आपने सं० १९१३ आश्विन शुक्ला १५ को बीकानेर के महाराजा सरदारसिंह (काव्य में नाम सादूर्ल आता है पर वह अशुद्ध प्रतीत होता है) की छत्र छाया में "काव्य-प्रबन्ध" ग्रन्थ बनाया।

(५२) बद्रीदास (७)—इनकी रचित मानमंजरी नाममाला की प्रति सं० १७२५ की लिखित प्राप्त है अतः इनका समय इसके पूर्ववर्त्ती ही है।

(५३) भगतदास (८६)—इन्होंने सम्राट् अकबर के समय में अकबरपुर में "वैताल पचीसी" बनाई। ये राघवदास के पुत्र थे।

(५४) भक्तिविजय (११०-११३)—आपने सं० १८६६ कार्तिक सुदि १५ को भावनगर वर्णन गजल और मेदिनीपुर (मेड़ता) महिमा छंद विजय जिनेन्द्र सूरि[1] (तपागच्छीय) के समय में बनाया। आपके शिष्य मनरूप का परिचय आगे दिया जायगा।

(५५) भीखजन (६)—श्री गोपाल दिनमणि रचित 'फतहपुर परिचय' के पृष्ठ १५१ में इन्हें दादु शिष्य संतदास का शिष्य बतलाया है। ये जाति के आचार्य ब्राह्मण थे और इनके पिता का नाम देवी सहाय था। सन्यस्त होकर ये भजन स्मरण एवं अध्ययन करने लगे। इन्होंने भारतीय नाममाला सं० १६८५ आश्विन शुक्ला १५ शुक्रवार फतहपुर (शासक दौलतखां व उनके पुत्र ताहर खाँन के समय में) में बनाई थी। इनकी रचित अन्य रचना "भीख बावनी" है। आपके लिखे हुए रसकोष (कवि जान कृत) की प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में है जो सं० १६८४ जेठ वदी ७ फतहपुर में लिखी गयी है।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ९९३ में आपकी बावनी का उल्लेख है पर उसका परिमाण ५०० श्लोक का बतलाना सही नहीं है। वहाँ इन्हें अज्ञात कालिक प्रकरण मे रखा गया है, पर भारतीय नाममाला की प्रति से आपका समय स० १६८५ के लगभग निश्चित होता है।

(५६) भूधर मिश्र (६६)—ये शाकद्वीपी मिश्र भार्गवराम के पुत्र थे। सं० १७३९ के माघ वदी ९ को दक्षिणगढ़ नादेरी में "रागमंजरी" ग्रन्थ बनाना प्रारंभ किया। ग्रन्थ के अन्त मे सं० १७४० का निर्देश है और यह भी लिखा है कि आजमशाह के प्रयाण के समय कवि ने सैन्य के साथ दन्तिन ग्राम देखा। कवि ने अपना निवास-स्थान सूबा विहार, गढ़ मूँगेर लिखा है।

१ दे० जैन गुर्जर कविओ भा० २ पृ० ७२०

(५७) भूप (११८)—मिश्रबन्धुविनोद पृ० २९३ में अज्ञात कालिक प्रकरण के अन्तर्गत भूप कवि एवं उनके "चंपू सामुद्रिक" ग्रन्थ का भी उल्लेख है। हमें प्राप्त प्रति सं० १७२५ की लिखित होने से कवि का समय इससे पूर्ववर्त्ती निश्चित है।

(५८) मनरूपविजय (१०२-१०६-१०८-११२-११६)—ये पूर्व उल्लखित तपागच्छीय भक्तिविजय के शिष्य थे। इनके रचित (१) गिरनार-जूनागढ़ (२) नागोर (३) पोरबन्दर (४) मेड़ता (सं० १८६५ कार्तिक सुदि १४) और (५) सोजत की गजलें (सं० १८६३ कार्तिक सुदि १५) का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दिया गया है। सं० १८७८ में वैशाख शुक्ला १५ सोमवार के एक लेख से ज्ञात होता है कि जैसलमेर दरबार ने इन्हे लोद्रवा मे उपासरा बना के दिया था।

(५९) मयाराम (१३०)—ये दादूपन्थी थे। इनका निवास स्थान दिल्ली—जहानाबाद था। शिव-सरोदय ग्रन्थ के आधार से इन्होंने स्वरोदय ग्रन्थ बनाया।

(६०) मलूकचन्द्र (४३)—वैद्यहुलास ग्रन्थ जो कि तिब्बसहावी का अनुवाद है, मे आपने अपने श्रावक कुल का उल्लेख किया है। अत: ये जैन श्रावक थे। संभवतः ये १९ वीं शताव्दी मे ही हुए हैं।

(६१) महमदशाहि (६७)—ये पिरोजशाह के वंश में तत्तारशाह के पुत्र थे। इनकी रचित संगीतमालिका की प्रारंभ-त्रुटित प्रति प्राप्त हुई है। संभव है कवि ने प्रारम्भ में अपना कुछ परिचय एवं समय दिया हो।

(६२) महासिंह (१)—इनकी "अनेकार्थ नाममाला" की प्रति सं० १७६० मे स्वयलिखित हमारे संग्रह में है। इसमें इन्होंने अपने को पांडे बतलाया है।

(६३) मान, (प्रथम) (२५)—आप खरतरगच्छीय उपाध्याय शिवनिधान के शिष्य थे। इनकी रचित "भाषा कविरस मंजरी" का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में है। इनके अतिरिक्त आपके अन्य ग्रन्थ इस प्रकार हैं:—

(१) कीर्त्तिधर सुकौशल प्रबन्ध सं० १६७० दीवाली, पुष्करण
(२) मेतार्य ऋषि सम्बन्ध सं० ,, पुष्करण
(३) क्षुल्लककुमार चौपाई ,,
(४) हंसराज वच्छराज चौपाई सं० १६७५ कोटड़ा
(५) उत्तराध्ययन गीत सं० १६७५ सावन वदी ८ गुरु
(६) अर्हद्दास प्रबन्ध विजयदशमी जूनपुर
(७) मेघदूत वृत्ति सं० १६९३ भादवा सुदि ११

(८) जीवविचार टब्बा

(९) योगबावनी

(१०) शिक्षाछत्तीसी

(६४) मान (द्वितीय) (३७,३९,४०)—ये खरतरगच्छीय सुमति मेरु भ्रातृ विनयमेरु के शिष्य थे। कविविनोद और कविप्रमोद में इन्होंने अपने को बीकानेर-वासी लिखा है। सं० १७४५ वैसाख सुदी ५ लाहोर मे कविविनोद और सं० १७४६ कार्तिक सुदि २ में कविप्रमोद ग्रन्थ बनाया। संयोगद्वात्रिंशिका भी संभवतः इन्हीं की रचना है जिसका निर्माण अमरचन्द्र मुनि के आग्रह से सं० १७३१ के चैत सुदि ६ को हुआ था।

(६५) माल (देव) (८५)—ये भटनेर की बड़गच्छीय शाखा के आचार्य भावदेवसूरि के शिष्य थे। आप अच्छे कवि थे। आपकी रचनाओं की सूची नीचे दी जारही है:—

(१) पुरन्दर चौपाइ (२) भोज-प्रबन्ध (पंचपुरी में रचित)
(३) अंजणासुन्दरी चौपाइ (४) विक्रम पंचदंड कथा
(५) देवदत्त चौपाइ (६) पद्मरथ चौपाई
(७) सूरिसुन्दरी चौपाइ (८) वीरांगद चौपाइ
(९) मालदेव शिक्षा चौपाई (१०) स्थूलिभद्र फाग-धमाल
(११) राजल नेमि धमाल (१२) शील बत्तीसी
(१३) कल्पान्तर वाच्य सं० १६१४ (१४) वीरपंचकल्याणक स्तवन आदि

मिश्र बन्धु विनोद के पृ० ३९१ में इनकी पुरन्दर चौपाई का उल्लेख है और उनका रचनाकाल १६५२ लिखा गया है पर वास्तव में वह संवत् प्रतियों का लेखनकाल है। इनका समय सं० १६१४ के लगभग है।

(६६) मुरलीधर (११)—ये त्रिपाठी रामेश्वर के पुत्र थे। इन्होंने पौल-स्त्यवंशी मार्त्तण्डगढ़ के महाराजा हृदयनारायणदेव के प्रोत्साहन से सं० १७२३ कार्तिक वदी १५ को "छन्दोहृदयप्रकाश" ग्रन्थ बनाया।

(६७) मेघ (१२१)—ये उत्तराधगच्छ के मुनि जटमल शिष्य परमानन्द शिष्य सदानन्द शिष्य नरायण शिष्य नरोत्तम शिष्य मयाराम के शिष्य थे। सं० १८१७ कार्तिक सुदि २ गुरुवार को चौधरी चाहड़मल के समय मे पंजाब प्रान्त के फगवाड़े स्थान में वर्षाविज्ञानसम्बन्धी "मेघमाला ग्रन्थ" बनाया। कई वर्ष पूर्व हमने इस ग्रन्थ को

वेंक्टेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित देखा था । कवि मेघ का रचित मेघविनोद जो कि वैद्यक का बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है गुरुमुखी लिपि में प्रकाशित हुआ था। अभी लाहौर से संभवतः इसका हिन्दी गद्यानुवाद प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ की रचना सं० १८३५ फाल्गुन सुदि १३ फगवा नगर में हुई थी। आपका तीसरा ग्रन्थ "दान शील तप भाव" (सं० १८१७) पंजाब भंडार में उपलब्ध है।

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ९९७ में आपके मेघविनोद ग्रन्थ का उल्लेख है पर वहाँ इन्हें अज्ञातकालिक प्रकरण में रखा गया है। जबकि ग्रन्थ में सं० १८३५ पाया जाता है।

(६८) रघुनाथ (५)—ये विष्णुदत्त के पुत्र थे। प्रदीपिका नाम-माला ग्रन्थ के अतिरिक्त आपका विशेष वृत्तान्त ज्ञात नहीं है।

(६९) रत्नशेखर (५७)—ये अंचल गच्छीय अमरसागरसूरि के आज्ञानुवर्त्ती थे। सं० १७६१ के मिगसर सुदि ५ गुरुवार को सूरत के श्रीवंशीय भीमशाही के पुत्र शकरदास की प्रार्थना से इन्होंने "रत्नव्यवहारसार" ग्रन्थ बनाया।

(७०) रसपुंज (११)—आपने सं० १८७१ की चैत्र वदी ५ गुरुवार को "प्रस्तार प्रभाकर" ग्रन्थ बनाया।

(७१) रामचन्द्र (४४-५१-१२४)—आप खरतरगच्छीय जिनसिंहसूरि शिष्य पद्मकीर्त्ति शिष्य पद्मरंग के शिष्य थे । आपके रामविनोद (सं० १७२० मिगसर सुदि १३ बुधवार सक्की नगर) ग्रन्थ की प्रति पहले भी मिल चुकी है और ये लखनऊ से छप भी चुका है। आपके वैद्यविनोद (सं० १७२६ वै० सु० १५ मरोट) एवं सामुद्रिक भाषा (सं० १७२२ माघ वदि ६ भेहरा) का विवरण इस ग्रन्थ में प्रकाशित है। इनके अतिरिक्त आपकी निम्नोक्त रचनाएँ ज्ञात हुई हैं।

(१) दश पचक्खाण स्तवन, सं० १७२१ पौष सुदी १०
(२) मूलदेव चौपाई, सं० १७११ फागण, नवहर
(३) समेदशिखर स्तवन, सं० १७५०
(४) बीकानेर आदिनाथस्तवन, सं० १७३० जेठ सुदी १३

मिश्रबन्धुविनोद के पृ० ४६६ में उल्लखित रामचन्द्र ये ही हैं पर साकी बनारस वाले एव ग्रन्थ का नाम राय विनोद और गुरु का नाम पद्मराग छपा है, वह अशुद्ध है वास्तव में सक्कीनगर सिन्ध प्रान्त में है, ये यति थे अतः सर्वत्र परिभ्रमण करते रहते थे-किसी एक जगह के निवासी न थे। ग्रन्थ का नाम रामविनोद और गुरु का नाम पद्मरंग है। मिश्रबन्धुविनोद में आपके अन्य एक ग्रन्थ जम्बू चौपाई का भी उल्लेख है।

(७२) रामचन्द्र (द्वितीय) (५९)—इनका रत्न परीक्षा (दीपिका) ग्रन्थ प्राप्त है। उसमें कवि ने अपना कुछ भी परिचय नहीं दिया अतः ये उपर्युक्त रामचन्द्र से भिन्न हैं या अभिन्न, कहा नहीं जासकता।

(७३) रायचन्द्र (११७)—ये खरतरगच्छीय जैनयति थे। सं० (१८) १७ में द्वितीय ज्येष्ठ वदी ५ नागपुर में आपने अवयदी शुकुनावली बनाई। संभव है कल्पसूत्र हिन्दी पद्यानुवाद के रचयिता रायचन्द्र ये ही हों जो कि सं० १८३८ चैत सुदी ९ बनारस में बनाया गया एवं प्रकाशित हो चुका है।

(७४) लच्छीराम (२१,६२)—इनके रचित दम्पतिरंग और रागविचार ग्रन्थों के विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रकाशित हैं। उनमें कवि ने अपना कुछ भी परिचय नहीं दिया पर मोतीलालजी मेनारिया सम्पादित खोज विवरण के प्रथम भाग में इनके करुणाभरण नाटक का विवरण प्रकाशित हुआ है। उसके अनुसार ये कवीन्द्राचार्य सरस्वती के शिष्य थे। बीकानेर की अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में कवीन्द्राचार्य के संग्रह की अनेक प्रतियें हैं और लच्छीराम के (१) ज्ञानानन्द नाटक (२) ब्रह्मानन्दनीय (३) विवेक सार-ज्ञान कहानी और (४) ब्रह्मतरंग की प्रतियें भी उपलब्ध हैं। इनमें से ज्ञानानन्द नाटक में कवि ने अपना एवं अपने मित्रों का परिचय निम्नोक्त पद्यों में दिया है:—

देसु भदावर अति सुख वासु, तहाँ जोयसी इसुर दासु।
राम कृष्ण ताके सुत भयो, धर्म समुद्र कविता यसु छयो॥
तिनके मित्र शिरोमणि जानि, माथुर जाति चतुरई खानि।
मोंहनु मिप सुभग ताको सुतु, वसे गंभीरे सकल कला युत॥
पुनि अवधानि परम विचित्र, दोउ लच्छीराम सो मित्र।
तीनो मित्र सने सुख रहे, धनि प्रीति सब जग के कहे॥
अथ लच्छीराम वृत्तान्त कहीयतु है—
जमुनातीर मई इक गाऊँ, राइ कल्याण वसे तिह ठौंउ।
लच्छीराम कविता को नन्दु, जा कविता सुनि नासे दंदु॥
राइ पुरंदर करे लघु भाई, तासों मित्र वात चलाई।
नाटक ज्ञानानन्द सुनावो, देहुं सुखनि अरु तुम सुख पावो॥

इटली के प्रसिद्ध राजस्थानी के प्रेमी विद्वान् एल० पी० टेसीटोरी के केटलॉग में इनके बुद्धिबल कथा (सं० १६८१ रचित) का उल्लेख है।

मिश्रवन्धुविनोद मे इसी नाम वाले तीन कवियों का उल्लेख किया गया है। नमें से सूदन कवि के सुजानचरित्र मे उल्लखित लच्छीराम ही प्रस्तुत लच्छीराम सकते हैं। अन्य लच्छीराम १९ वीं शताब्दी के हैं।

(७५) लक्ष्मीचन्द (९९)—ये खरतरगच्छीय जैनयति थे। यथा स्मरण ये मरविजय के शिष्य थे। इनका एक वैद्यक ग्रन्थ इनकी परम्परा के उपाध्याय जय-न्दजी के भंडार वीकानेर में उपलब्ध है।

(७६) लक्ष्मीवल्लभ—(४१, ४७)—आप भी खरतरगच्छीय उपाध्याय क्ष्मीकीर्त्तिजी के शिष्य थे। अपने कई काव्य ग्रन्थों में इन्होंने अपना नाम 'राजकवि' या है। १८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वानों में से आप भी अन्यतम थे। इनके ालज्ञान (१७४१ सावन सुदी १५) और मूत्र परीक्षा का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में या है। इनके अतिरिक्त आपकी छोटी मोटी पचासों रचनाऐं हैं जिनमें से उल्लेख-ीय प्रतियों की सूची नीचे दी जारही है:—

१. अभयंकर श्रीमति चौपाई, सं० १७२५ चै० सु० १५.
२. अमरकुमार रास
३ विक्रमादित्य पंचदंड चौपाई, सं० १७२८ फा० व० ५
४. रात्रि भोजन चौपाई, सं० १७३८ वै० सु० १० बीकानेर
५. रत्नहास चौपाई, सं० १७२५ चै० सु० १५
६. भावना विलास, सं० १७२७ पौ० व० १०
७. नवतत्व भाषा, सं० १७४७ वै० सु० १३ हिंसार
८. चौवीसी स्तवन
९. दोहावावनी
१०. कवित्त वावनी
११. छप्पय वावनी
१२ सवैया वावनी
१३ भरत वाहुवलि भिड़ाल छंद
१४ महावीर गौतम छंद
१५ देशान्तरी छंद
१६ उपदेश वतीसी
१७ चैतन वतीसी, स० १७३९

१८ बीकानेर चौवीसटा स्तवन, सं० १७४५ मा० सु० १५.

१९ शतकत्रय टवा (पंजाव भंडार)

२० स्तवनादि ४०

संस्कृत ग्रन्थ—

२१. कल्पसूत्र-कल्पद्रुमकलिका वृत्ति

२२. उत्तराध्यनवृत्ति

२३. कालिकाचार्य कथा

२४. पंचकुमार कथा

२५. कुमारसंभववृत्ति, सं० १७२१ सूरत

२६ मात्रिकाक्षर धर्मोपदेश स्वोपज्ञ वृत्ति, सं० १७४५

आप संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी तीनों भाषाओं पर समान अधिकार रखते थे। उपरोक्त ग्रन्थ इन तीनों भाषाओं के हैं। आपका विशेष परिचय स्वतंत्र लेख में दिया गया है जो कि शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

(७७) लालचन्द (१३२)—ये भी खरतरगच्छीय जैनयति थे। श्री शान्ति हर्षजी के शिष्य एवं कविवर जिनहर्ष के गुरुभ्राता लाभवर्द्धनजी का दीक्षा से पूर्व-वर्ती नाम लालचन्द था। विशेष संभव आप वही हैं। इन्होंने सं० १७५२ के भादवा सुदी में अक्षयराज के लिये स्वरोदय की भाषा टीका बनाई। आपके अन्य ग्रन्थ इस प्रकार हैं :—

(१) विक्रम नवसौ कन्या चौपाई एवं खापरा चोर चौपाई, सं० १७२३ श्रावण सु० १३ जेतारण।

(२) लीलावती रास, सं० १७२८ कातिक सुदि १४।

(३) लीलावती रास (गणित), स० १७३६ असाढ़ वदी५, बीकानेर कोठारी जैतसी के लिये।

(४) धर्मबुद्धि पापबुद्धि रास, सं० १७४२ सरसा।

(५) पांडवचरित्र चौपाइ, सं० १७६७ धील्हावास।

(६) विक्रम पचदंड चौपाई सं० १७३३ फाल्गुन।

(७) शकुनदीपिका चौपाई सं० १७७० वैसाख सुदी ३ गुरुवार।

मिश्रवन्धुविनोद के पृ० ५०८ में इनके लीलावती ग्रन्थ का उल्लेख है पर वहाँ सौभाग्य सूरि के शिष्य [illegible] गासी के आश्रित लिखा है वह ठीक नहीं है। आपके

गुरु का नाम शान्ति हर्ष और नैणसी के पुत्र जैतसी के लिये प्रस्तुत ग्रन्थ बनाया गया है। मिश्रबन्धुविनोद के पृ० १००४ में लाभवर्द्धन के रचित उपपदी ग्रन्थ का उल्लेख है पर मुझे यह नाम अशुद्ध प्रतीत होता है।

(७८) लालदास (३४)—इनके "विक्रमविलास" ग्रन्थ का विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है उसके प्रारंभ में कवि ने अपने दो अन्य ग्रन्थों का उल्लेख किया है जिनमें से उषा नाटक (कथा) की प्रति सन् १९०९ से ११ की खोज रिपोर्ट में प्राप्त है। इनकी माधवानलकथा अभी तक कहीं जानने में नहीं आई अतः उसकी खोज होना आवश्यक है।

नागरी प्रचारिणी पत्रिका के वर्ष ५१ अंक ४ में सन् १९४१ से ४३ की खोज का विवरण प्राप्त हुआ है उसमें लिखा है कि विक्रमविलास की दो प्रतियां प्राप्त हुई हैं जिनके अनुसार कवि का नाम लाल या नेवजी लाल दीक्षित था। ये विक्रम शाहि राजा के आश्रित थे। जिनके बड़े भाई का नाम भूपतशाहि पिता का नाम खेमकरण और पितामह का नाम मलकल्याण था। एक प्रति में इस ग्रन्थ का रचना काल १६४० लिखा है।

मिश्रवन्धुविनोद के पृ० १०७१ में लालदास के उषा कथा और वामन चरित्र का निर्देश है कविताकाल सं० १८९६ के पूर्व और मनोहर दास के पुत्र लिखा है। हमारे नम्रमतानुसार उषा कथा उपरोक्त लालदास रचित ही होगी और उसका रचना काल १७ वीं शताब्दी निश्चित ही है। वामनचरित्र के रचयिता लालदास प्रस्तुत कवि से भिन्न ही संभव हैं।

१७ वीं शताब्दी के कवि लालदास की इतिहाससार (सं० १६४३) प्रसिद्ध ही है एवं अन्य कई ग्रन्थ भी इसी कवि के नाम से उपलब्ध हैं पर उन सभी का रचयिता एक ही कवि है या समनाम वाले भिन्न भिन्न कवि हैं प्रमाण भाव से नहीं कहा जा सकता।

(७९) वल्लभ (१३०)—आपने हृदयराम के समय में या उनके लिये स्वरोदय सम्वंधी छोटा सा ग्रन्थ वनाया।

(८०) विजयराम (८७)—आशायत दुर्गेश के ग्राम समदरड़ी (लूणी के पास) में आपने शनिकथा वनाई। कवि ने रचनाकाल का भी निर्देश किया है पर उससे संवत् का अंक ठीक ज्ञात नहीं होता।

(८१) विनयसागर (२)—इन्होंने अंचलगच्छीय कल्याणसागर सूरि के समय—सं० १७०२ कातिक सुदी १५ को, अनेकार्थ नाममाला वनायी।

(८२) वैकुण्ठदास (१३१)—इनके रचित स्वरोदय ग्रन्थ के अतिरिक्त कुछ भी ज्ञात न हो सका।

(८३) शिवराम पुरोहित (७५)—ये नागौर के निवासी थे बीकानेर नरेश। अनूपसिंहजी ने इन्हें सम्मानित किया था। कवि ने उन्हींकी आज्ञानुसार 'दशकुमार प्रबन्ध' सं० १७५४ के मिगसर सुदी १३ मंगलवार को बनाया। ग्रन्थ के आरंभ में कवि ने अपने गुरु मेघ को नमस्कार किया है। पता नहीं वे कौन थे।

(८४) श्रीपति (१५)—आपकी 'अनुप्रासकथन' रचना के अतिरिक्त विशेष वृत्त ज्ञात नहीं है।

(८५) सतीदासव्यास (३१)—ये देवीदास व्यास के पुत्र देवसी के पुत्र थे। आपने बीकानेर-नरेश अनूपसिंहजी के समय सं० १७३३ माघ सुदी २ को 'रसिक-आराम' ग्रन्थ बनाया।

(८६) समरथ (४८,१३७) खरतरगच्छीय सागरचन्द्रसूरि सन्तानीय मति-रत्न के शिष्य थे। इनका दीक्षितावस्था का नाम 'समयमाणिक्य' था। इनके रचित रसमंजरी वैद्यक (सं० १७६४ फागुन ५ रवि, देरा) ग्रन्थ वनमाली के आग्रह से और रसिकप्रिय संस्कृत टीका (सं० १७५५ सावन सुदी ७ सोमवार, सिन्ध प्रान्त के जालिपुर में रचित) का विवरण इसी ग्रन्थ में दिया गया है। इनके अतिरिक्त (१) बावनीगाथा ५५ एव मल्लिनाथ पंचकल्याणक स्तवन (सं० १७३६ भादवा सुदी ५ बन्नुदेश सक्कीग्राम) उपलब्ध हैं।

(८७) स्वरूपदास (१४)—ये पहले चारण थे फिर सन्यासी होगये। पांडवयशेन्दुचद्रिका (सं० १८९२ चैत वदी ११) इनकी प्रसिद्ध रचना है जो प्रकाशित भी हो चुकी है। आपके अन्यग्रन्थ वृत्तिबोध (सं० १८९८ माघ वदी १ सेवापुर) का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ में दिया गया है। इसमें विवरण गद्य में है।

मिश्र-बन्धु-विनोद के पृ० १००८ में इनके पांडवयशचंद्रिका का उल्लेख अज्ञातकालिक प्रकरण में किया गया है पर इस ग्रन्थ में कवि ने रचनाकाल सं० १८९२ स्पष्ट दिया है। विनोद में इनके आश्रयदाता राजा बलवंतसिंह रतलाम का निर्देश है।

(८८) सागर (२,५,६२)—इनके रचित अनेकार्थी नाममाला, धनजी नाममाला और रागमाला उपलब्ध हुई हैं। कवि ने अपना परिचय एवं समय कुछ भी नहीं दिया है।

मिश्र-वन्धु-विनाद के पृ० ८९३ में गुणविलास के रचयिता जोधपुर के ठाकुर केसरीसिंह के आश्रित सागरदान चारण (सं० १८७३) का उल्लेख है पर वे संभवतः भिन्न हैं।

(८९) सुखदेवादि (९२)—१७ वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् कवीन्द्राचार्य ने काशी और प्रयाग का कर छुड़वाया था—इस कार्य की प्रशंसा में तत्कालीन काशीनिवासी कवियों ने कुछ पद्य बनाये जिनका संग्रहग्रन्थ कवीन्द्रचंद्रिका है। इसमें तत्कालीन प्रसिद्धाप्रसिद्ध ३० कवियों की कविताऐं हैं जिनमें दो स्त्री कवयित्रियां भी हैं।

मिश्रवन्धु-विनोद के पृष्ठ ४७६ में सुप्रसिद्धि कवि सुखदेव मिश्र का परिचय देते हुए इनके काशी में एक सन्यासी से तंत्र एवं साहित्य पढ़ने का उल्लेख है। संभव है वे सन्यासी कवीन्द्राचार्य ही हों। कवीन्द्रचन्द्रिका में जिस सुखदेव कवि के पद्य उपलब्ध हैं विशेष संभव वे वृतविचार रसार्णव आदि ग्रन्थों के रचयिता आचार्य सुखदेव मिश्र ही हैं।

(९०) सुबुद्धि (३)—आपकी रचित आरंभ नाममाला उपलब्ध है, मिश्र-वन्धु-विनोद के पृ० ४६० में सुबुद्धि का सं० १७१२ से पूर्व होने का निर्देश है पर वहाँ उनके ग्रन्थ का नाम नहीं लिखा गया। पता नहीं उपर्युक्त सुबुद्धि आरंभ नाममाला के कर्त्ता ही हैं या उनसे भिन्न अन्य कोइ कवि हैं।

(९१) सूरतमिश्र (१०)—आप प्रसिद्ध टीकाकार एवं सुकवि थे। ये आगरे के निवासी कन्नोजिया ब्राह्मण सिंहमनिमिश्र के पुत्र थे। मिश्र-वन्धु-विनोद् पृ० ५५३ में इनके टीकाग्रन्थों को प्रशंसा करते हुए निम्नोक्त ग्रन्थों का निर्देश किया है।

(१) अलंकारमाला सं० १७६६
(२) विहारी सतसई की अमरचन्द्रिका टीका सं० १७९४
(३) कविप्रिया टीका
(४) नखशिख
(५) रसिकप्रिया का तिलक
(६) रससरस
(७) प्रबोधचंद्रोदय नाटक
(८) भक्तिविनोद
(९) रामचरित्र

(१०) कृष्णचरित्र

(११) रसग्राहकचंद्रिका (रसिकप्रिया की टीका)

(१२) रसरत्नमाला

(१३) सरसरस सं० १७९१-९४

(१४) भक्तविनोद

(१५) जोरावरप्रकाश

(१६) वैताल पंचविसति (महाराजा जैसिंह सवाई की आज्ञा से रचित)

(१७) काव्यसिद्धान्त सं० १७९८

(१८) रसरत्नाकरमाला

इनमें से अमरचद्रिका की रचना महाराजा अमरसिंह जोधपुर के नाम से हुई लिखना गलत है वास्तव में वे अमरसिंह ओसवाल जैन थे। जोरावरप्रकाश रसिक प्रिया की टीका का ही नाम है जो कि बीकानेर के महाराजा जोरावरसिंहजी के लिये सं० १८०० में बनाई गई थी। रसरत्नाकरमाला संभवतः रसरत्नमाला ही होगी। रसरत्न की रचना सं० १७६८ वैसाख रविवार को हुई थी और उसकी टीका कवि ने स्वयं मेड़ता के ऋषभगोत्रीय ओसवाल सुलतानमल के लिये सं० १८०० श्रावण में की थी। रसग्राहकचंद्रिका की रचना सं० १७९१ वैसाख सुदी ८ को जहाँनाबाद के नशक (रु?) हा खांन के लिये की गई थी। रस सरस और सरसरस दोनों ग्रन्थ एक ही हैं। इसकी रचना सं० १७९० के वैसाख सुदी ६ को आगरे मे कवि-मंडली के कथन से हुई थी। खोज रिपोर्ट व मेनारियाजी के विवरणी भाग १ मे इसके रचयिता का नाम राय शिवदास लिखा है। भक्तविनोद और भक्तिविनोद दोनों ग्रन्थ एक ही हैं।

सन् १९३२-३३ की खोज से प्राप्त आपके रचित शृंगारसार (सं० १७८५ अषाढ़ सु०) से आपके कई अप्राप्य ग्रन्थों का पता चलता है। उनमें से छन्दसार का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ मे दिया गया है। शृंगाररस में उल्लेख होने के कारण इसका रचना काल सं० १७८५ से पूर्व निश्चित होता है। आपके अन्य अप्राप्त ग्रन्थ श्रीनाथ-विलास, भक्तमाला, कामधेनुकवित्त, कविसिद्धान्त का अन्वेषण होना परमावश्यक है। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी मे इनके अतिरिक्त रासलीला या दानलीला नामक ग्रन्थ की प्रति प्राप्त है। गत वर्ष सरस्वती में सूरतमिश्र नामक एक सुन्दर लेख भी प्रकाशित हुआ देखने मे आया था। ओझाजी ने जोधपुर के इतिहास में इन्हें महाराजा जसवन्त-सिंहजी का विद्यागुरु खोज विवरण के अनुसार बतलाया है यह संभव नहीं है।

(९२) सूरदत्त (३०)—शेखावाटी-अमरसर के कछवाहा शेखावत राय मनोहर के पुत्र पृथ्वीचन्द्र के पुत्र कृष्णचन्द्र के कहने से इन्होंने सं० १७१२ के फागुन सुदी ५ को 'रसिकहुलास' ग्रन्थ बनाया। आप काशी के निवासी थे।

(९३) हरिदास (९२)–इन्होंने अमर बत्तीसी में जोधपुर के राठौड़ अमरसिंह के वीरतापूर्वक सलाबतखां को मारने का वर्णन किया है। रचना घटना के समकालीन रचित (सं० १७०१ आसोज सुदी १५) होने से इसका ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्व है। इसे मैंने अन्य एक राजस्थानी बात के साथ भारतीय विद्या वर्ष २ अंक १ में प्रकाशित कर दिया है।

(९४) हरिवल्लभ-(६९) इनके प्रबोधचंद्रोदय नाटक का विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है। मिश्र-बन्धु-विनोद भाग १ पृ० ४१८ में इनकी भगवद्गीता भाषानुवाद की प्रशंसा करते हुए इसका रचनाकाल सं० १७०१ बतलाया है। इसकी प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में भी है। आपका संगीतविषयक सगीतदर्पण नामक ग्रन्थ भी उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त किशोरजु के लिये रचित भागवत् भाषानुवाद (पत्र ४८२) नामक बृहत्ग्रन्थ की प्रतियें चुरु के सुराना लाइब्रेरी और भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्सटीट्यूट पूना में उपलब्ध है।

(९५) हरिवंश (३२)—य छजमल के पुत्र मसनंद के पुत्र थे। इन्होंने रसिकमजरी भाषा ग्रन्थ बनाया। मिश्र-बन्धु-विनोद के पृ० ४६४ में हरिवंश भट्ट बिल ग्रामी का उल्लेख है वे इन हरिवंश से भिन्न प्रतीत होते हैं।

(९६) हृदयराम (२७) कवि ने अपने वंश का परिचय देते हुए लिखा है कि गौड़ ब्राह्मण यजुर्वेद माध्यंदिनी शाखा के छरोंडा निवासी विष्णुदत्त के पुत्र नारायण के पुत्र दामोदर बड़े विद्वान् थे। जिन्होंने हरिवंदन, कर्मविपाक (निदान के साथ) और चिकित्सासार ग्रन्थ बनाये। ये बेरम के पुत्र के पास रहे थे एवं वृद्धावस्था होने पर काशीनिवास कर लिया था। इनके पुत्र रामकृष्ण ने जौनपूर में निवास कर बहुत से ब्राह्मणों को विद्यादान दिया। आसफखां के अनुज एतकादखां ने इन्हें गुणी जान कर सम्मानित किया। रामकृष्ण के तीन पुत्र थे (१) तुलसीराम (२) माधवराम और (३) गंगाराम। इनमें से माधवराम बहुत समय तक शाह सुजा की सेवा में रहे थे। इनके पुत्र हृदयराम हुए जो उद्धव के पुत्र प्रयाग दीक्षित के दोहित्र थे। इन्होंने सं० १७३१ के वैसाख सुदी ५ को भानुदत्त की रसमंजरी के आधार से रसरत्नाकर ग्रन्थ बनाया। दामोदर के उपर्युक्त ग्रन्थत्रय अन्वेषणीय हैं।

(९७) हरिचंद्र (६३)—इन्होंने सं० १६९१ में मांडली नगर में रागमाला बनाई।

(९८) हेम (विजय) (१०४-१११) ये तपागच्छीय नेमविजय के शिष्य थे। इन्होंने सं० १८६६ कातिसुदी १५ को जोधपुर गजल और भावनगर गजल बनाई।

(९९) हेमसागर (९) आपने अंचलगच्छीय कल्याणसागर सूरि के समय (सं० १७०६ भादवा वदी ९ को) सूरत के निकटवर्ती हंसपुर में शाह कृष्णा के लिये छंद मालिका ग्रन्थ बनाया।

(१००) क्षमाकल्याण (७१)—आप खरतरगच्छीय वाचक अमृत धर्म के शिष्य थे। आप अपने समय के प्रतिष्ठा प्राप्त सैद्धान्तिक विद्वान् थे। जैन धर्म सम्बन्धी पचासों स्तवनादि और पचीसों ग्रन्थ आपके उपलब्ध हैं। यहाँ केवल उल्लेखनीय कृतियों की ही सूची दी जाती है :—

(१) भूधातुवृत्ति, सं० १८२९ चैत वदी १. राजनगर।
(२) गोतमीय काव्यवृत्ति, सं० १८२९, राजनगर में प्रारम्भ सं० १८५२ श्रावण सु० ११ जैसलमेर में पूर्ण।
(३) खरतरगच्छ पट्टावलि, सं० १८३० फागुन सुदी ९, जीर्णगढ़।
(४) आत्मप्रबोध, सं० १८३३ काति सुदी ५. मिनराबन्दर।
(५) चौमासी व्याख्यान, सं० १८३५ सावन सुदी ५. पाटोधी।
(६) श्रावक-विधि-प्रकाश, सं० १८३८ जैसलमेर।
(७) यशोधर-चरित्र, सं० १८३९ सावण सुदी ५ जैसलमेर।
(८) थावच्चा चौपाई, सं० १८४७ विजयदशमी, महिमापुर।
(९) सूक्त रत्नावली वृत्ति, सं १८४७।
(१०) जीव-विचार-वृत्ति, सं० १८५० सावण सुदी ७, बीकानेर।
(११) प्रश्नोत्तर सार्धशतक (संस्कृत), सं० १८५१ जेठ वदी ५, जैसलमेर।
(१२) प्रश्नोत्तर सार्धशतक भाषा, सं० १८५३ वैसाख वदी १२ बुध, बीकानेर।
(१३) अंबडचरित्र, सं० १८५४ असाढ़ सुदी २ पालीताणा, आर्या खुस्याल श्री के लिये रचिता।
(१४) तर्कसंग्रह फक्किका, सं० १८५४।
(१५) चैत्यवंदन चौवीसी, सं० १८५६ जेठ सुदी १३ नागपुर।
(१६) [illegible]

(९२) सूरदत्त (३०)—शेखावाटी-अमरसर के कछवाहा शेखावत राय मनोहर के पुत्र पृथ्वीचन्द्र के पुत्र कृष्णचन्द्र के कहने से इन्होंने सं० १७१२ के फागुन सुदी ५ को 'रसिकहुलास' ग्रन्थ बनाया। आप काशी के निवासी थे।

(९३) हरिदास (९२)–इन्होंने अमर बत्तीसी में जोधपुर के राठौड़ अमरसिंह के वीरतापूर्वक सलाबतखां को मारने का वर्णन किया है। रचना घटना के सम-कालीन रचित (सं० १७०१ आसोज सुदी १५) होने से इसका ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्व है। इसे मैंने अन्य एक राजस्थानी वात के साथ भारतीय विद्या वर्ष २ अंक १ में प्रकाशित कर दिया है।

(९४) हरिवल्लभ-(६९) इनके प्रबोधचंद्रोदय नाटक का विवरण इस ग्रन्थ मे दिया गया है। मिश्र-बन्धु-विनोद भाग १ पृ० ४१८ में इनकी भगवद्गीता भाषानुवाद की प्रशंसा करते हुए इसका रचनाकाल सं० १७०१ बतलाया है। इसकी प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में भी है। आपका संगीतविषयक संगीतदर्पण नामक ग्रन्थ भी उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त किशोरजु के लिये रचित भागवत् भाषानुवाद (पत्र ४८२) नामक वृहत्ग्रन्थ की प्रतियें चुरु के सुराना लाइब्रेरी और भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्सटीट्यूट पूना में उपलब्ध है।

(९५) हरिवंश (३२)—य छजमल के पुत्र मसनंद के पुत्र थे। इन्होंने रसिकमजरी भाषा ग्रन्थ बनाया। मिश्र-बन्धु-विनोद के पृ० ४६४ में हरिवंश भट्ट बिल ग्रामी का उल्लेख है वे इन हरिवंश से भिन्न प्रतीत होते हैं।

(९६) हृदयराम (२७) कवि ने अपने वश का परिचय देते हुए लिखा है कि गौड़ ब्राह्मण यजुर्वेद माध्यंदिनी शाखा के छरोंडा निवासी विष्णुदत्त के पुत्र नारा-यण के पुत्र दामोदर बड़े विद्वान् थे। जिन्होंने हरिवंदन, कर्मविपाक (निदान के साथ) और चिकित्सासार ग्रन्थ बनाये। ये वेरम के पुत्र के पास रहे थे एव वृद्धावस्था होने पर काशीनिवास कर लिया था। इनके पुत्र रामकृष्ण ने जौनपूर में निवास कर बहुत से ब्राह्मणों को विद्यादान दिया। आसफखां के अनुज एतकादखां ने इन्हे गुणी जान कर सम्मानित किया। रामकृष्ण के तीन पुत्र थे (१) तुलसीराम (२) माधवराम और (३) गंगाराम। इनमें से माधवराम बहुत समय तक शाह सुजा की सेवा मे रहे थे। इनके पुत्र हृदयराम हुए जो उद्धव के पुत्र प्रयाग दीक्षित के दोहित्र थे। इन्होंने सं० १७३१ के वैसाख सुदी ५ को भानुदत्त की रसमंजरी के आधार से रसरत्नाकर ग्रन्थ बनाया। दामोदर के उपर्युक्त ग्रन्थत्रय अन्वेषणीय हैं।

(९७) हरिचंद्र (६३)—इन्होंने सं० १६९१ में मांडली नगर में रागमाला बनाई।

(९८) हेम (विजय) (१०४-१११) ये तपागच्छीय नेमविजय के शिष्य थे। इन्होंने सं० १८६६ कातिसुदी १५ को जोधपुर गजल और भावनगर गजल बनाई।

(९९) हेमसागर (९) आपने अंचलगच्छीय कल्याणसागर सूरि के समय (सं० १७०६ भादवा वदी ९ को) सूरत के निकटवर्ती हंसपुर में शाह कूआ के लिये छंद मालिका ग्रन्थ बनाया।

(१००) क्षमाकल्याण (७१)—आप खरतरगच्छीय वाचक अमृत धर्म के शिष्य थे। आप अपने समय के प्रतिष्ठा प्राप्त सैद्धान्तिक विद्वान् थे। जैन धर्म सम्बन्धी पचासों स्तवनादि और पचीसों ग्रन्थ आपके उपलब्ध हैं। यहाँ केवल उल्लेखनीय कृतियों की ही सूची दी जाती है :—

(१) भूधातुवृत्ति, सं० १८२९ चैत वदी १, राजनगर।
(२) गोतमीय काव्यवृत्ति, सं० १८२९, राजनगर में प्रारम्भ सं० १८५२ श्रावण सु० ११ जैसलमेर में पूर्ण।
(३) खरतरगच्छ पट्टावलि, सं० १८३० फागुन सुदी ९, जीर्णगढ़।
(४) आत्मप्रबोध, सं० १८३३ काति सुदी ५, मिनरावन्दर।
(५) चौमासी व्याख्यान, सं० १८३५ सावन सुदी ५, पाटोधी।
(६) श्रावक-विधि-प्रकाश, सं० १८३८ जैसलमेर।
(७) यशोधर-चरित्र, सं० १८३९ सावण सुदी ५ जैसलमेर।
(८) थावचा चौपाई, सं० १८४७ विजयदशमी, महिमापुर।
(९) सूक्त रत्नावली वृत्ति, सं १८४७।
(१०) जीव-विचार-वृत्ति, सं० १८५० सावण सुदी ७, वीकानेर।
(११) प्रश्नोत्तर सार्धशतक (संस्कृत), सं० १८५१ जेठ वदी ५, जैसलमेर।
(१२) प्रश्नोत्तर सार्धशतक भाषा, सं० १८५२ वैसाख वदी १२ बुध, वीकानेर।
(१३) अंबडचरित्र, सं० १८५४ असाढ़ सुदी २ पालीताणा, आर्या खुस्याल श्री के लिये रचिता।
(१४) तर्कसंग्रह फक्किका, सं० १८५४।
(१५) चैत्यवंदन चौबीसी, सं० १८५६ जेठ सुदी १३ नागपुर।
(१६) विज्ञानचंद्रिका, सं० १८५९ जैसलमेर।

(१७) अष्टान्हिका व्याख्यान, सं० १८६० जैसलमेर।

(१८) अक्षयतृतिया व्याख्यान।

(१९) होलिका व्याख्यान।

(२०) मेरुत्रयोदशी व्याख्यान।

(२१) श्रीपालचरित्र-वृत्ति, सं० १८६९ विजयदशमी बीकानेर।

(२२) समरादित्य-चरित्र, सं० १८७३।

(२३) चतुर्विंशति चैत्यवंदन।

(२४) प्रतिक्रमणहेतवः।

(२५) साधुप्रतिक्रमण विधि, बालुचर।

मिश्रबन्धु-विनोद के पृ० ८३२ में इनकी चार कृतियों का उल्लेख है।

(१०१) त्रिलोकचन्द्र (११८)—ये जोशी ब्राह्मण एवं ज्योतिषी थे। लालचन्द
ताम्बर यति के लिये इन्होंने केशवी भाषा टीका बनाई।

(१०२) ज्ञानसार (१२-१०८)—आप खरतरगच्छीय रत्नराजगणि के शिष्य
वं मस्त योगी एवं राज्य-मान्य विद्वान् थे। कवि होने के साथ-साथ ये सफल आलो-
क भी थे। आपके सम्बन्ध में हमारा श्रीमद् ज्ञानसार और उनका साहित्य शीर्षक
ख हिन्दुस्तानी वर्ष ९ अंक २ में प्रकाशित हो चुका है। विस्तार से जानने के लिये
क्त लेख देखना चाहिये। यहाँ केवल आपके हिन्दी ग्रन्थों की ही सूची दी जा रही है।

(१) पूर्वदेश वर्णन (२) कामोद्दीपन सं० १८५६ वै० सु० ३ जयपुर के
हाराजा प्रतापसिंहजी की प्रशंसा में रचित (३) माला पिंगल सं० १८७६ फा० व०
(४) चन्द चौपाई समालोचना दोहा (५) प्रस्ताविक अष्टोतरी (६) निहाल
ावनी सं० १८८१ मि० व० १३ (७) भावछत्तीसी सं० १८६५ काति सु० १ कृष्ण-
ढ़ (८) चारित्र छत्तीसी (९) आत्मप्रबोध छत्तीसी (१०) मतिप्रबोध छत्तीसी
११) बहुत्तरी आदि के पद हैं।

परिशिष्ट नं० २

[अज्ञात-कर्तृक ग्रन्थ-सूची]

---

१. † इनमें से नं० १, १०, १३—१६, १८, १९, २२, २४, ३३, ४५, ४६ की प्रतियें त्रुटित होने से रचयिता का नाम विदित नहीं हुआ। किसी सज्जन को पूर्ण प्रति प्राप्त हो तो सूचित करें। नं० २३ के रचयिता मनोहर, नं० २१ का रचयिता सार संभव है।

(१७) अष्टान्हिका व्याख्यान, सं० १८६० जैसलमेर।

(१८) अक्षयतृतिया व्याख्यान।

(१९) होलिका व्याख्यान।

(२०) मेरुत्रयोदशी व्याख्यान।

(२१) श्रीपालचरित्र-वृत्ति, सं० १८६९ विजयदशमी बीकानेर।

(२२) समरादित्य-चरित्र, सं० १८७३।

(२३) चतुर्विंशति चैत्यवंदन।

(२४) प्रतिक्रमणहेतवः।

(२५) साधुप्रतिक्रमण विधि, बालुचर।

मिश्रबन्धु-विनोद के पृ० ८३२ में इनकी चार कृतियों का उल्लेख है।

(१०१) त्रिलोकचन्द्र (११८)—ये जोशी ब्राह्मण एवं ज्योतिषी थे। लालचन्द श्वेताम्बर यति के लिये इन्होंने केशवी भाषा टीका बनाई।

(१०२) ज्ञानसार (१२-१०८)—आप खरतरगच्छीय रत्नराजगणि के शिष्य एव मस्त योगी एवं राज्य-मान्य विद्वान् थे। कवि होने के साथ-साथ ये सफल आलोचक भी थे। आपके सम्बन्ध में हमारा श्रीमद ज्ञानसार और उनका साहित्य शीर्षक लेख हिन्दुस्तानी वर्ष ९ अंक २ में प्रकाशित हो चुका है। विस्तार से जानने के लिये उक्त लेख देखना चाहिये। यहाँ केवल आपके हिन्दी ग्रन्थों की ही सूची दी जा रही है।

(१) पूर्वदेश वर्णन (२) कामोद्दीपन सं० १८५६ वै० सु० ३ जयपुर के महाराजा प्रतापसिंहजी की प्रशंसा में रचित (३) माला पिंगल सं० १८७६ फा० व० ९ (४) चन्द चौपाई समालोचना दोहा (५) प्रस्ताविक अष्टोतरी (६) निहाल बावनी सं० १८८१ मि० व० १३ (७) भावछत्तीसी सं० १८६५ काति सु० १ कृष्णगढ (८) चारित्र छत्तीसी (९) आत्मप्रबोध छत्तीसी (१०) मतिप्रबोध छत्तीसी (११) बहुत्तरी आदि के पद हैं।

शुद्धाशुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	४	धन	घन	६२	२०	(९)	(१०)
४	१६		खुसरो	६२	३१	(१०)	(२)
५	१३	स्यांम	स्याम	६३	१४	(२)	(३)
१०	२	छद्मालिका	छंदमालिका	६४	४	(३)	(४)
१०	४	छत्ती	पत्नी	६४	४	वि०	लि०
१०	५	सं० १७०७	१७८७	६४	३०	कुछ	कुच
१४	१	पद्म	पद्य	६५	२८	लावी	लांबी
१९	१४	कान्य	काव्य	६६	४	(७)	(८)
२०	६	चतुर्सुदास	चतुरदास	६६	१५	(८)०	(९)९
२१	५			६६	२	रध्र०	रंध्र९
२२	११	है	रै	६६	२६	चद्रंमा७	चंद्रमा१
२४	३०	किर्धौं	किधौं	६७	१५	(१०)	(११)
३०	९	कपि	कवि	६८	६	(११)	(१२)
३४	२२	श्रीमन्न	श्रीमन्	७०	२७	दुंदभिरिमृभदंग	दुदभिमृदंग
३४	२६	२७	२८	७३	७	(८)	(२)
३८	१	(ग)	(घ)	७३	२३	धीर	धरि
४५	२५	ग्रंध	ग्रंथ	७४	२३	छेहला	छहला
४७	१७	निश्र्व	निश्चै	७६	१०	(९)	(८)
४८	१८	सतेरे	सतरे	७७	१४	वहरी	वहरीं
४८	२२	पढ़ी	पढ़ो	८३	१३	रु	सारु
४९	२	संस्था	संख्या	८४	२२	दीन	देत
५०	४	१०६२	१७९२	८४	२७	परवीन	परवान
५७	२७	(२)	(५)	८५	२३	नभी	नमी
५७	३१	सुमिन	सुमिरन	८५	२५	घरि	घरि
५८	२७	प्रणभी	प्रणमी	८७	१६	सूरदासांत	सूरदासंत
५९	१७	नानो	नाना	८८	४	श्रीमाल	श्रीपाल
६१	७	अक	अनेक	८८	२०	पडतं	पंडत

परिशिष्ट नं० ३

[पूर्वज्ञात ग्रन्थकार]

(मिश्रबन्धुविनोद में जिनका निर्देश है)

१. आनंदराम
२. उदयराज
३. कुंवर कुशल
४. खुसरो
५. चेतनविजय
६. जटमल
७. जनार्दन भट्ट
८. तत्वकुमार
९ दूलह
१० भीखजन
११ भूप
१२ मालदेव
१३ मेघराज
१४ रामचंद्र
१५ लालचंद
१६ लालदास
१७ स्वरूपदास
१८ सुखदेव
१९ सूरतमिश्र
२० हरिवल्लभ
२१ क्षमाकल्याण

(जिनका उल्लेख संदिग्ध है)

कृष्णानंद
खेतल
गुलाबसिह
सागर
सुबुद्धि
हरिवंश

(मेनारियाजी के खोज ग्रन्थ भाग १ में)

गणेश
जान

[पूर्वज्ञात ग्रन्थ]

(मिश्रबन्धुविनोद में जिनका उल्लेख है)

१. ख्वालक वारी (खुसरो)
२. चंपू समुद्र (भूप)
३. लखपतजससिन्धु (कुंवर कुशल)

परिशिष्ट नं० ४

[अपूर्णप्राप्त ग्रन्थ]

१ अतिसारनिदान ३८ (अंत त्रुटित)
२ कृष्णचरित १९ (अंत त्रुटित)
३ जोधपुरगजल १०५ (,,)
४ दुर्गसिंह शृगार २२ (आदि त्रुटित)
५ दूलहविनोद २३ (अन्त त्रुटित)
६ नखशिख २४ (,, ,,)
७ प्रबोधचंद्रोदय ७० (,, ,,)
८ पासा केवली १२० (आदि ,,)
९ पाहनपरीक्षा ५५ (अन्त ,,)
१० बीरबल पातसाह की बात ८६ (आदि अंत त्रुटित)
११ मूत्र परीक्षा ३९ (अन्त त्रुटित)
१२ माधवनिदान भाषा ४७(,, ,,)
१३ रसविलास २९ (आदि ,,)
१४ रागमाला ६५ (अन्त ,,)
१५ स्वरोदयविचार १३३ (,, ,,)
१६ साहित्यमहोदधि ३६ (अन्य खंड अप्राप्त)
१७ सांडेरा छंद ११४ (अन्त० त्रुटित)
१८ सगीतमालिका ६७ (आदि ,,)
१९ हनुमान नाटक ७० (अन्त ,,) ❀

❀ इनकी कहीं पूर्ण प्रति प्राप्त हो तो सूचित करने का अनुरोध है।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	२८	पुहष	पुरुष	१३५	९	कीत्तिसिंह	कीर्त्तिसिंह
११९	४	अदि	आदि	१३५	१७	विखितं	लिखितं
११९	१६	शास्त्र	शास्त्र	१३६	४	पाइर्चसेवितं	पार्श्वसेवितं
११९	२०	जोतिसार	जोतिषसार	१३७	४	ग्र न्थस्य	ग्रन्थस्य
१२०	७	आभय	अभय	१३७	१४	वर्त्ति	वृत्ति
१२०	१२	जाणौं	जाणै	१३७	२३	प्रिपाया:	प्रियाया:
१२१	२	क्रोध्नी	क्रोधी	१३८	१२	ह्वेन	ह्वेन
१२२	२८	चरित्र	चारित्र	१३८	२०	श्री	श्री
१२२	३२	अचित	अचिंत	१३८	२०	रवत्	रभवत्
१२३	६	समाप्तम	समाप्तम्	१३८	२७	वैभः	वैभवाः
१२३	२४	इति	ईति	१३८	२९	सज्ञानानां	सज्जनोनां
१२४	९	पडित	पंडित	१३८	३१	चित्र	चित्त
१२४	१४	(पूण)	(पूर्ण)	१३८	३३	ताच्छिस्य	तच्छिष्य
१२५	८	सूरिजी	सूरज	१३९	६	ज्ञानप्रमोददो	ज्ञानप्रमोदो
१२५	२०	भरवी	भारवी	१३९	८	तस्पक्त	तस्यक्त
१२७	२२	पुरन	पुरान	१३९	१५	सौम्पः	सौम्यः
१३०	१	दाहू	दादू	१३९	१७	शिष्वै	शिष्यै
१३०	२१	हलहल	हलाहल	१३९	२५	यावर्तिष्टति	यावतिष्टति
१३०	२५	राज	काज	१३९	३१	द्रशे	द्रक्षे
१३३	१७	विद्यावत	विद्यावंत	१३९	३३	दृष्टि	पृष्टि
१३३	२२	(२९)	(२८)	१३९	३४	शास्त्रं	शास्त्र
१३४	१	सिराघो	सिराधो	१४०	३	साइल	साइज
१३५	६	मिभुवन	त्रिभुवन	१४०	१२	तिभजंपिरा	तिमजंपिरा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८९	२४	सुग नीति	सुगनीति	१०८	५	ज्ञानसागर	ज्ञानसा
९१	१४	पतिना	यतिना	१०८	७	कोई	केई
९१	२४	सरवतसिध	सखतसिघा	१०८	१६	रहित	रहिस
९१	१५	चरित्र	चारित्र	१०९	३	शाद	शारद
९३	४	कवीद्र	कवीन्द्र	१०९	१७	भेरे	मेरे
९३	२१	शुभ	शुभं	११०	८	बगाल	बंगाला
९४	२०	आग	आउ	११०	१३	बहनी	बहती
९५	१८	बट	षट्	११०	१९	जनन्नाथ	जगन्नाथ
९७	७	प्रथ में	प्रथमै	११०	२२	मां	नां
९७	७	प्रगटीया	प्रगटाया	११०	२६	आर्श्वनाथ	पार्श्वनाथ
९७	१४	पजां	पढ़जां	१११	४	विजैजन्द्र	विजैजिनेन्द्र
९७	१५	द्वापुर	द्वापर	१११	१४	गुज्जारयं	गुज्जरयं
९७	२०	अलिक	अलिफ	११२	४	सैहरह	सैरह
९८	५	(९)	(८)	११२	९	श्री	श्री
९८	५	सिठाय	सिठायच	११२	२७	शिश्य	शिष्य
९८	८	झीले	झाले	११३	१२	शन्त	शान्त
९८	९	इजरत	हजरत	११५	१	भमै	भणै
९८	१५	सवत	संवत	११५	२	कहत	कहत है
९८	१८	पत्र	यत्र	११५	१०	प्रणामुं	प्रणमुं
९८	२३	भनाय	मनाय	११५	२१	परण्यां	वरण्या
१०३	१७	वाखी	वारसी	११६	९	तेट्ठसह	तेसठह
१०३	२९	महिपल	महियल	११७	२	इन्द्रगाल	इन्द्रजाल
१०४	७	नानविजय	मानविजय	११७	१५	चित्र	चित्त
१०५	२७	प्रद्दढ़वोधी	दृढ़प्रतिवोधी	११७	१९	सरम	सरस
१०६	१२	धणी	घणी	११८	१६	वि०	लि०
१०६	१२	गुम-पढे	गुण, पढ़ै	११८	२१	नायव	नायक
१०७	२१	गच्च	गच्छ	११८	२३	समुद्ध	समुद्र
१०७	२३	वणी	घणी	११८	२४	लच्मन	लच्छन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	२८	पुह्ष	पुरुष	१३५	९	कीत्तिसिंह	कीर्त्तिसिंह
११९	४	अदि	आदि	१३५	१७	विखितं	लिखितं
११९	१६	शास्त्र	शास्त्र	१३६	४	पाइर्चसेवितं	पार्श्वसेवितं
११९	२०	जोतिसार	जोतिषसार	१३७	४	ग्र न्थस्य	ग्रन्थस्य
१२०	७	आभय	अभय	१३७	१४	वर्त्ति	वृत्ति
१२०	१२	जार्णौ	जाणै	१३७	२३	प्रिपाया:	प्रियाया:
१२१	२	क्रोध्री	क्रोधी	१३८	१२	ह्नेन	ह्नेन
१२२	२८	चरित्र	चारित्र	१३८	२०	श्री	श्री
१२२	३२	अचित	अचिंत	१३८	२०	रवत्	रभवत्
१२३	६	समाप्तम	समाप्तम्	१३८	२७	वैभ:	वैभवा:
१२३	२४	इति	ईति	१३८	२९	सज्जानानां	सज्जनोनां
१२४	९	पडित	पंडित	१३८	३१	चित्र	चित्त
१२४	१४	(पूण)	(पूर्ण)	१३८	३३	ताच्छिस्य	तच्छिष्य
१२५	८	सूरिजी	सूरज	१३९	६	ज्ञानप्रमोददो	ज्ञानप्रमोदो
१२५	२०	भरवी	भारवी	१३९	८	तस्त्पक्त	तरत्यक्त
१२७	२२	पुरन	पुरान	१३९	१५	सौम्प:	सौम्य:
१३०	१	दाहू	दादू	१३९	१७	शिष्यै	शिष्यै
१३०	२१	हलहल	हलाहल	१३९	२५	यावर्तिष्टति	यावतिष्टति
१३०	२५	राज	काज	१३९	३१	द्रशे	द्रक्ते
१३३	१७	विद्यावत	विद्यावंत	१३९	३३	द्दष्टि	पृष्टि
१३३	२२	(२९)	(२८)	१३९	३४	शास्त्रं	शास्त्र
१३४	१	सिराघो	सिराधो	१४०	३	साइल	साइज
१३५	६	भिसुवन	त्रिभुवन	१४०	१२	तिभजंपिए	तिमजंपिए